तृतीय माला, खण्ड ६—अंक ४

सोमवार, १२ नवम्बर, १९६२
२१ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा
वाद-विवाद

(तीसरा सत्र)

3rd Lok Sabha

(खण्ड ६ में अंक १ से १० तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

एक रुपया (दे. म

चार शिलिंग (विदेश में

विषय सूची	पृष्ठ
प्रश्नों के मौखिक उत्तर	
तारांकित प्रश्न संख्या *१२९ से १४२	३९९—४२६
प्रश्नों के लिखित उत्तर	
तारांकित प्रश्न संख्या १४३ से १५३ . . .	४२७—३२
अतारांकित प्रश्न संख्या २६७ से २७४ और २७६ से २९८ .	४३२—४७
अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना . .	४४७-४८
दिल्ली में पटाखा विस्फोट	
सभा पटल पर रखे गये पत्र	४४८-४९
गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों सम्बन्धी समिति	
नवां प्रतिवेदन .	४५०
प्राक्कलन समिति	४५०
तीसरा और चौथा प्रतिवेदन . . .	
विधेयक पुरस्थापित—	४५०-५१
(१) धातु के टोकन (संशोधन) विधेयक . . .	
(२) पैट्रोलियम पाइपलाइन (भूमि के प्रयोक्ता के अधिकार का अर्जन) विधेयक . .	
आपात्त की उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प	४५१—५१०
श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी . .	४५१-५२
श्री त्यागी	४५३-५४
श्री मुरारका . .	४५४-५५
श्री विजय राजे	४५५
श्री हृ० प० चटर्जी	४५५
डा० मेलकोटे . . .	४५६
श्रीमती सुभद्रा जोशी . . .	४५६—५९
श्री मानवेन्द्र शाह . .	४५९
श्री चांडक	४५९—६२

†किसी नाम पर अंकित यह + चिह्न इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उसी सदस्य ने वास्तव में पूछा था।

लोक-सभा

सोमवार, १२ नवम्बर, १९६२

२१ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

कीमतों में वृद्धि

+

श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री मोहन स्वरूप :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धांती :
श्री राम रतन गुप्त :
श्री रामेश्वर टांटिया :
डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्री यशपाल सिंह :
श्री विभूति मिश्र :
श्री ब० कु० दास :
†*१२९. श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
डा० प० मंडल :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्रीमती रेणुका राय :
श्री हरिश्चन्द्र माथुर :

†मूल अंग्रेजी में

149 (Ai) LSD—1.

श्री वासुदेवन नायर :
श्री कोल्ला वेन्कैया :
श्री रा० गि० दुबे :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री दाजी :
श्रीमती मैमूना सुल्तान :
श्री मोहिसन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री सं० ब० पाटिल :
श्री मे० क० कुमारन :
श्री कजरोलकर :
श्री त्रिदिब कुमार चौधरी :
श्री हेम राज :
श्री यल्लमंदा रेड्डी :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री अ० ना० विद्यालंकार
श्री तन सिंह :
श्री वारियर :
श्री प्र० के० देव :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री महेश्वर नायक :

क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या योजना आयोग ने बढ़ती हुई कीमतों को रोकने की कार्रवाई के तौर पर अत्यावश्यक वस्तुओं के थोक व्यापारियों को लाइसेंस देने की योजना पुनः चालू करने का निश्चय किया है ;

(ख) यदि हां, तो इस निश्चय के अनुसार क्या कार्यवाही की गई है ; और

(ग) अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि रोकने के लिये आयोग ने दूसरे क्या उपाय किये हैं ?

†श्रम और रोजगार मंत्रालय में उपमंत्री तथा योजना उपमंत्री (श्री चे० रा० पट्टाभिरमन्) : (क) से (ग). माननीय सदस्यों का ध्यान १० नवम्बर, १९६२ को सभा पटल पर रखे गये विवरण की ओर आकृष्ट किया जाता है।

†श्री प्र० चं० बरुआ : क्या संभ्रान्त राज्यों में मुल्यों में वृद्धि को रोकने के लिये और सीमान्त राज्यों में संभरण को विनियमित करने और बनाये रखने के लिये सरकार ने कोई विशिष्ट उपाय किये हैं ?

†श्री चे० रा० पट्टाभिरामन् : इन सभी उपायों का परीक्षण किया जा रहा है। और जब कभी आवश्यक होता है कदम उठाये जाते हैं।

---

†नून अंग्रेजी में

†**श्री रामेश्वर टांटिया :** १० नवम्बर, १९६२ को योजना तथा श्रम और रोजगार मंत्री ने सभा में बताया था कि मूल्य-निर्धारण के लिये एक उच्च स्तरी समिति बनाई जायेगी। क्या मैं जान सकता हूं कि समिति का गठन क्या होगा और क्या इसमें कोई गैर-सरकारी सदस्य शामिल किये जायेंगे ?

†**अध्यक्ष महोदय :** वह अभी से यह कल्पना क्यों करते हैं। सरकार समय पर सब करेगी ।

†**श्री विभति मिश्र :** क्या सरकार ने खास कर इस इमरजेंसी में मिट्टी के तेल के दाम न बढ़ाने देने के लिए कोई कदम उठाए हैं ?

अध्यक्ष महोदय : जो मेजर सरकार ने लिए हैं वे सुना दिए गए हैं ।

†**योजना तथा श्रम और रोजगार मंत्री (श्री नन्दा) :** मैंने यह भी बताया है कि अन्य वस्तुओं के बारे में भी, जिन्हें विवरण में शामिल नहीं किया गया है, आगे विचार किया जा रहा है ।

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं जानना चाहता हूं कि मंत्री महोदय ने जो प्राइस कंट्रोल के सम्बन्ध में घोषणा की थी उसके परिपालन के लिए क्या व्यवस्था बनायी गयी है, और वह कब तक अमल में आ जाएगी ?

श्री नन्दा : अमल में लाने के लिये आगे ही कदम उठाया जा चुका है।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** उपभोक्ता वस्तुओं के खुदरा मूल्यों पर नियंत्रण रखने के लिये सरकार क्या कदम उठायेगी ?

†**श्री नन्दा :** विवरण में, मैंने केन्द्रीय स्टोरों और प्रमुख उपभोक्ता स्टोरों की स्थापना के लिये कुछ प्रस्ताव रखे थे। यह भी एक उपाय है। यह भी बताया गया था कि खुदरा व्यापारियों से दुकान में बिकने वाली वस्तुओं के मूल्य टांगने के लिये कहा जायेगा। अन्य उपाय भी हैं।

श्री भक्त दर्शन : माननीय मंत्री जी ने परसों विवरण सभा-पटल पर रखा था उसमें दिया गया था कि एक कमेटी नियुक्त की जा रही है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह कमेटी केवल सिफारिश करेगी या इसे कोई निर्णय लेने का अधिकार भी दिया जाएगा ?

श्री नन्दा : निर्णय तो कैबीनेट ही कर सकती है, उसकी तो सिफारिशें ही होंगी।

†**श्री स० चं० सामन्त :** विवरण से पता चलता है कि स्टोर अधिकांशतः कस्बों में खोले जायेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों के लिये क्या व्यवस्था की गयी है।

†**श्री नन्दा :** ग्रामीण क्षेत्रों में समस्या वैसी नहीं है। ये दुकानें जरूरी नहीं कि बड़े-बड़े शहरों और बहुत बड़े कस्बों में हों। वे छोटे कस्बों में भी हो सकती हैं।

†**श्रीमती रेणुका राय :** विवरण से ऐसा लगता है कि मंत्री महोदय मूल्य के बारे में व्यापार तथा उद्योग की प्रतिक्रिया के बारे में बड़े आशावादी हैं। अन्य देशों में पहले अनुभवों को देखते हुए

†**अध्यक्ष महोदय :** क्या वह उसके बारे में निराशवादी बातें कहने जा रही हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्रीमती रेणुका राय** : मेरा तात्पर्य आगे के क्षेत्रों, विशेषत: आसाम और पश्चिमी बंगाल जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों से है। क्या होने वाली बातों को रोकने के लिये तत्काल क्रियात्मक उपाय करना आवश्यक नहीं है।

†**अध्यक्ष महोदय** : यह एक सुझाव है।

†**श्रीमती रेणुका राय** : मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या कोई कदम उठाये जा रहे हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : पहला प्रश्न एक सुझाव है। अब इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है कि क्या कोई कदम उठाये जा रहे हैं ?

†**श्री नन्दा** : जो भी कदम उठाये जायेंगे वे आवश्यकता के अनुपात में होंगे। क्योंकि वहां आवश्यकता अधिक है तो निश्चय ही अधिक व्यापक कदम उठाये जायेंगे।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : सीमावर्ती क्षेत्रों में मल्य कम रखने के लिये पर्याप्त मात्रा में भंडार रखने के लिये क्या कदम उठाये गये हैं ?

†**श्री चे० रा० पट्टाभिरामन्** : जहां पर गोदाम है, वहां पर पर्याप्त भंडार रखे जा रहे हैं। थोक दुकानों के बारे में 'एक लाख अथवा अधिक की आबादी वाले सभी कस्बों में थोक और केन्द्रीय स्टोर होंगे।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं यह जान सकता हूं कि क्या यह सरकार की जानकारी में है कि मोटर पार्ट्स विशेषकर जीप्स और ट्रक्स के पार्ट्स. . . .

अध्यक्ष महोदय : तफसील में जाने की जरूरत नहीं है। आप प्राइस कंट्रोल के बारे में जनरली सवाल कर सकते हैं। अगर एक-एक चीज के बारे में सवाल करेंगे तो बहुत लम्बा हो जा जाएगा।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : इस संकट काल में इन चीजों के भाव १०० गुने और १५० गुने बढ़ गये हैं।

अध्यक्ष महोदय : ऐसी कई चीजें हो सकती हैं।

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर** : मंत्री महोदय ने यह कहा बताया गया है कि लाभ कमाने को रोकने के लिये भारत सेवक समाज का प्रयोग किया जायेगा। भारत सेवक समाज ने इस मामले में क्या किया है और इस कार्य के लिये इसका किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है।

†**श्री नन्दा** : मैं कुछ बातों को, जो सच नहीं हैं, स्पष्ट करने के इस अवसर का स्वागत करता हूं। समाचारपत्रों में कुछ भी खबर छप सकती है। निराशावादी बातों के बारे में, मैंने यह कहा था कि लाभ कमाने वालों और चोर बाजारी करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जानी चाहिये। कुछ क्षेत्रों में उसका उल्टा अर्थ लगाया गया। आशावाद और निराशावाद का कोई प्रश्न नहीं है। हमें स्थिति को देखते हुये कार्यवाही करनी ही चाहिये।

†**श्री वारियर** : केन्द्रीय सरकार की कार्यवाही के अतिरिक्त क्या राज्य सरकारों ने कोई कार्यवाही की है और उस बारे में अर्थात् मूल्यों में वृद्धि और उसे रोकने के उपायों के बारे में केन्द्र को बताया है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री नन्दा :** राज्य सरकारों को अपने-अपने क्षेत्रों में अवश्य की नीति लागू करनी है ।

†**श्री स० मो० बनर्जी :** मूल्य में वृद्धि का एक कारण अनाज में सट्टाबाजी है। क्या सरकार अनाज में सट्टाबाजी को रोकेगी ?

†**श्री नन्दा :** मूल्य नीति के अन्य पहलू भी हैं जिन्हें लागू करना ही है ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धांती : क्या सरकार को इस बात का बोध है, नाम चाहे न बतायें, कि किस-किस पदार्थ की कीमत बढ़ी है और उसको रोकने का क्या उपाय किया जा रहा है ?

अध्यक्ष महोदय : जो उपाय किये गये हैं वे बताये गये ।

श्री यशपाल सिंह : डिफेंस आफ इंडिया रूल्स के मातहत कितने मुनाफाखोरों को पकड़ा गया ?

लद्दाख में संसद्-सदस्य का प्रतिनिधि-मंडल

+

†१३०. **श्री राम रतन गुप्त :**
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री यशपाल सिंह :
श्री प्र० के० देव :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धांती :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री हेम बरुआ :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री कजरोलकर :
श्री यु० द० सिंह :
श्री पें० वेंकटा सुब्बया :
श्री लखम् भवानी :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोई संसदीय प्रतिनिधि मंडल सितम्बर, १९५१ के दूसरे हफ्ते में लद्दाख गया था; और

(ख) यदि हां, तो क्या उसने कोई रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत की है ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन) :** (क) जी, हां ।

(ख) जी, नहीं ।

†**श्री राम रतन गुप्त :** मैं नहीं समझता कि "जी हां" "जी नहीं" उत्तर से कैसे काम चलेगा ।

†**अध्यक्ष महोदय :** वह तर्क कर रहे हैं। उत्तर है (क) जी, हां । (ख) जी, नहीं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री राम रतन गुप्त :** परन्तु मैं नहीं समझता कि वहां पर हाल के हालात को देखते हुए इस प्रश्न के ऐसे उत्तर में क्या महत्व है—कुछ अधिक महत्व नहीं है ।

†**अध्यक्ष महोदय :** क्या वह कोई अनुपूरक प्रश्न पूछना चाहते हैं ? जाहिर है वह कोई प्रश्न नहीं पूछना चाहते । श्री द्वा० ना० तिवारी ।

†**श्री द्वा० ना० तिवारी :** क्या यह सच है कि वहां पर संसदीय शिष्टमण्डल को कुछ स्थानों का दौरा करने की अनुमति नहीं दी गई और यदि हां, तो क्यों ?

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन :** वे उस क्षेत्र में कुछ आगे की चौकियों का दौरा करना चाहते थे और वह संभव नहीं था क्योंकि निकटतम चौकी लेह से कई दिन के रास्ते पर है ।

†**श्री रामेश्वर टांटिया :** क्या सरकार का ध्यान इस बात की ओर दिलाया गया है कि शिष्टमण्डल के कुछ सदस्यों ने एक वक्तव्य दिया कि उनको सुविधायें नहीं दी गई, और यदि हां, तो क्या संकट के इस समय शिष्टमण्डल भेजना और वक्तव्य प्राप्त करना आवश्यक अथवा उचित है?

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन :** सरकार ने शिष्टमण्डल के सदस्यों द्वारा दिये गये कुछ वक्तव्य देखे हैं, परन्तु उन्होंने सरकार को कोई रिपोर्ट अथवा शिकायत नहीं भेजी है ।

†**श्री पें० वेंकटर सुब्बया :** क्या शिष्टमण्डल जाने से पूर्व इस बारे में कोई कार्यक्रम बनाया गया था कि यह किन स्थानों का दौरा करेगा और, यदि हां, तो क्या इसने जिन स्थानों का दौरा किया है वे उनसे भिन्न हैं ?

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन :** इस दौरे का उद्देश्य शिष्टमण्डल को कठिनाइयों और अन्य समस्याओं के बारे में बताना था जिनका भारतीय सेना को सामना करना पड़ रहा है और उनको उस क्षेत्र में कृषि, वन, शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग के क्षेत्र में विकास-कार्य दिखाने थे ।

†**श्रीमती सावित्री निगम :** क्या शिष्टमण्डल के नेता ने एक पत्र में, जो उसने वैदेशिक-कार्य मंत्रालय को भेजा है, कुछ सिफारिशें की हैं ?

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन :** मैं बता चुकी हूं कि कोई रिपोर्ट नहीं दी गई है ।

श्री यशपाल सिंह : संसदीय मंडल को पूरी जगह देखने नहीं दी गई । अगर पहले ही यह बता दिया जाता तो देश का हजारों रुपया खर्च होने से बच जाता ।

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू): मैंने तो साफ साफ कह दिया था कि अच्छा है, आप लोग जायं, लेकिन लेह तक तो जा सकेंगे, उससे आगे जाना दुश्वार होगा ।

†**श्री हेम बरुआ :** क्या यह सच है कि प्रतिरक्षा मंत्रालय संसद् सदस्यों के शिष्टमण्डल से लद्दाख में क्षीण प्रतिरक्षा तैयारी के बारे में तथ्यों को छिपाने में विशेष रूप से होशियार है और यदि हां, दो शिष्टमण्डल भेजा ही क्यों गया ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु-शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) :** प्रतिरक्षा मंत्रालय छिपाने के लिये विशेष रूप से होशियार है—मैं नहीं समझता !

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय :** तैयारी न किये जाने के बारे में ।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** माननीय सदस्य के प्रश्न में कई बातें उठी हैं जो सत्य नहीं हैं। लद्दाख में उनकी तैयारी कम नहीं थी। वे उतने तैयार थे जितने परिस्थितियों में हो सकते थे। परन्तु यह स्पष्ट है कि सेना वास्तविक अग्रिम स्थिति में वहां पहुंचने में कठिनाइयों के अतिरिक्त किसी-किसी को जाने देती है। मेरे साथी ने भी यही कहा है। वहां से यह ५ या ६ दिन का पैदल रास्ता है और कठिन रास्ता है। हम वहां पर अत्यावश्यक कुछ सैनिक व्यक्तियों और संभरण के अतिरिक्त किसी को विमान द्वारा नहीं ले जाते। दुश्मन के गोली मार देने का भी भय है। वे वहां उतरते नहीं, केवल विमानों से सामान गिराया जाता है।

श्री जगदेव सिंह सिद्धांती : क्या इस संसदीय प्रतिनिधिमण्डल में कोई संसद् सदस्य ऐसे भी थे जो कि मिलेटरी के अन्दर पहले सेवा कर चुके हों ?

†**अध्यक्ष महोदय :** संसद् सदस्य इसमें देखे गये थे ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीडा :** क्या संसद् सदस्यों के एक छोटे से प्रतिनिधि मण्डल को लद्दाख अथवा नेफा का दौरा करने की अनुमति दी जावेगी ?

†**अध्यक्ष महोदय :** यह एक सुझाव है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : यह जो संसदीय प्रतिनिधि मण्डल लद्दाख के उस क्षेत्र को देखने गया था उसके लिये क्या संसद् के सदस्यों ने सरकार से अनुरोध किया था, यदि किया था तो क्या उन्होंने स्थान विशेष देखने या कुछ जानकारी लेने का अनुरोध किया था अथवा सरकार ने उनको अपनी ओर से भेजा था ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यह मुझे याद नहीं कि किसने अनुरोध किया था और किस ने नहीं लेकिन इतना जरूर है कि मेरे पास दो, चार संसद् सदस्यों के खत आये थे कि वह लद्दाख में या फ्रण्ट पर जाना चाहते हैं ठीक-ठीक मुझे याद नहीं कि क्या उनके शब्द थे। उसका इन्तजाम किया गया। उन से कह दिया गया कि वहां ले जायेंगे लेकिन बिल्कुल फ्रण्ट पर वहां ले जाना दुश्वार होगा अलबता जो हमारे वहां पर मिलैटरी बेस और कैम्प्स हैं उनको वे देख लें ।

धातुमिश्रित तथा विशेष इस्पात संयंत्र

\+

†*१३१. **श्री यशपाल सिंह :**
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री राम रतन गुप्त :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) प्रतिरक्षा क्षेत्र में धातुमिश्रित तथा विशेष इस्पात सन्यन्त्र स्थापित करने के मामले में अब तक क्या प्रगति हुई है ; और

(ख) इस परियोजना पर कितना खर्च होने का अनुमान है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चावन)** : (क) सरकार ने प्रतिरक्षा क्षेत्र में एक धातुमिश्रित और विशेष इस्पात सन्यन्त्र स्थापित करने की मंजरी दे दी है। शीघ्र ही सन्यन्त्र और मशीनों के लिये टेडर जारी किये जायेंगे।

(ख) इस परियोजना पर लागत का अनुमान लगभग २१ करोड़ रुपये लगाया गया है।

श्री यशपालसिंह : क्या काम को एक्सपेडाइट करने के लिये वहां वार लेविल पर वर्क शुरू कर दिया गया है ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : परियोजना को कार्यान्वित करने के लिये हम हर सम्भव कार्य कर रहे हैं।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : एक पूर्व प्रश्न के उत्तर में मन्त्री महोदय ने बताया था कि धातुमिश्रित और विशेष इस्पात का यह प्रस्तावित कारखाना कानपुर में स्थापित किया जायेगा। क्या वह निर्णय अपरिवर्तित है या स्थान में परिवर्तन किया जायेगा ?

†**श्री रघुरामैया** : कारखाने की स्थापना के ठीक स्थान के बारे में अभी निर्णय नहीं किया गया है। इस बात पर भी हम अब विचार कर रहे हैं।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : क्या देश में वर्तमान कारखानों में भी हमारी प्रतिरक्षा की आवश्यकताओं के लिये धातुमिश्रित और विशेष इस्पात बड़े पैमाने पर तैयार करने का प्रस्ताव है ?

†**श्री रघुरामैया** : ईशापुर स्थित हमारे वर्तमान धातु और इस्पात कारखाने का विस्तार किया जा रहा है। उसका विस्तार करने की एक योजना है ताकि वहां भी आवश्यक क्षमता के एक भाग का उत्पादन किया जा सके।

†**श्री रामेश्वर टांटिया** : क्या इस समय हमारी प्रतिरक्षा के लिये अधिक शस्त्रास्त्र बनाने की बजाय ऐसे धातुमिश्रित और विशेष इस्पात संयन्त्र स्थापित करना आवश्यक है।

†**श्री रघुरामैया** : सारे इस्पात की हमारे प्रतिरक्षा कार्य के लिये जरूरत है। यह सच है कि योजना आयोग इसको यह ५०,००० टन का अतिरिक्त आवंटन करने में असैनिक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा है। परन्तु अब मैं समझता हूं कि योजन आयोग और प्रतिरक्षा मन्त्रालय को साथ बैठ कर यह निर्णय करना होगा कि कितनी अतिरिक्त क्षमत , यदि कोई है, का उपबन्ध करना है। परन्तु मैं आपको आश्वासन दे सकता हूं कि अब जो भी हम कर रहे हैं वह सब प्रतिरक्षा के लिये है।

†**श्री शिवनंजप्पा** : भद्रावती स्थित मैसूर लोहा तथा इस्पात कारखाने में विशेष इस्पात और धातुमिश्रित इस्पात बनाने का प्रस्ताव था। उस दिशा में क्या प्रगति हुई है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : वह बिल्कुल भिन्न बात है।

†**श्री राम रतन गुप्त**: स्थिति की आवश्यकता को देखते हुए क्या मन्त्री महोदय सभा को यह बतायेंगे कि इस योजना को अन्तिम रूप देने और सन्यन्त्र में वास्तविक कार्य होने में कितना समय लगेगा ?

†**श्री रघुरामैया** : मैं बता चुका हूं कि हम शीघ्र ही टेंडर मांगने वाले हैं। पहले यह अनुमान था कि इस सन्यन्त्र में उत्पादन होने में तीन या चार वर्ष लगेंगे। संकट को देखते हुए हम यथासम्भव तेजी से हर कार्य करेंगे।

---

†मूल अंग्रेजी में

पाकिस्तानियों द्वारा वायुसीमा का उल्लंघन

*१३२. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि भारतीय वायु सीमा का पिछले तीन मास में कितनी बार पाकिस्तानी विमानों द्वारा अतिक्रमण किया गया ?

प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रघुरामैया) : एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है। [देखिये परिशिष्ट १, अनबन्ध संख्या २७]

अध्यक्ष महोदय : अब इतना समय बीत जाने पर माननीय सदस्यों से इतनी तो आशा की ही जा सकती है कि हर कोई एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है—इतनी हिन्दी समझ ले।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि संसद् के पिछले अधिवेशन में जैसा कि प्रधान मन्त्री जी ने यह घोषणा की थी कि पाकिस्तान का कोई भी विमान अगर हमारे क्षेत्र में आयेगा तो हम उसको मार कर गिराने की नीयत नहीं रखते, तो क्या संकट काल की स्थिति में सुरक्षा की दृष्टि से कुछ विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं अथवा पहले की ही नीति पर भारत सरकार दृढ़ है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : आम तौर से जो लड़ाई के हवाई जहाज होते हैं उनको तो गिराने का हक है लेकिन जो लड़ाई के न हों उनमें जरा झिझक होती है। यह सही है कि पाकिस्तान में एक या दो वर्ष हुए एक हमारे हवाई जहाज को गिरा दिया था और आप को याद होगा कि हमने यह आर्डर इश्यू किया हुआ है कि कोई अगर लड़ाई का हवाई जहाज मालूम हो तो उसका पीछा किया जाय और उसको गिरा दिया जाय। लेकिन आमतौर से जो हवाई जहाज आते हैं वह मुश्किल से दो, चार मिनट रहते हैं क्योंकि वह ४००–५०० मील की रफ्तार से चलते हैं और उनको पकड़ना आसान नहीं होता है या तो अब सैकड़ों हमारे हवाई जहाज हवा में उनका पीछा करने के लिये हों। ऐसे उनका पकड़ना आसान नहीं है, दो, चार मिनट रह कर निकल जाते हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : पाकिस्तान के जो विमान इस बीच में हमारे क्षेत्र में उड़े हैं वे विशेषकर क्या उन क्षेत्रों में उड़े हैं जहां हमारे सैनिक अड्डे थे और उनकी जानकारी लेने के लिये और उन की तस्वीरें आदि लेने के लिये आये थे ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : वह ज्यादातर कश्मीर की सीज फायर लाइन के इधर उड़े हैं और जाहिर है कि वे कुछ न कुछ देखने के लिये उड़े होंगे।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : विवरण से पता चलता है कि यह उल्लंघन हमारे सीमा के निकट टिथवाल, अमृतसर, इटारसी आदि स्थानों पर हुए हैं। क्या यह देखने के लिये, कि वे अमृतसर, इटारसी और टिथवाल के इतने निकट न आयें, कोई कदम उठाये गये हैं ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मैं नहीं समझता कि उनके लिये तैयार रहने और मार गिराने के अतिरिक्त क्या कदम उठाये जा सकते हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री म० ला० द्विवेदी: बयान से मालूम पड़ता है कि लड़ाई बन्दी रेखा के इस तरफ भी पाकिस्तानी हवाई जहाज आये और दूसरी जगह भी ६ उन्होंने हमले किये, मैं जानना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में जो दो घटनाएं हुई हैं उनमें हमने प्रोटैस्ट भी पेश नहीं किया है, सितम्बर से अब तक नहीं किया है, मैं जानना चाहता हूं कि इस विलम्ब का क्या कारण है ;

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैं इसके बारे में बगैर दरयाफ्त किये जवाब नहीं दे सकता ।

लंका में भारतीय प्रवासी

+

†*१३३. **श्री विभति मिश्र :**
श्री प्र० के० देव :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धांती :
श्री द्वा० ना० तिवारी :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री यशपाल सिंह :
श्री का० ना० तिवारी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री महेश्वर नायक :
डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्री यलमंदा रेड्डी :
श्रीमती सावित्री निगम :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उन्होंने लंका के दौरे में लंका की प्रधान मन्त्री के साथ लंका की नागरिकता विधियों के कारण राज्यविहीन भारतीय प्रवासियों की समस्या पर बातचीत की थी ; और

(ख) यदि हां, तो उस बातचीत का क्या नतीजा निकला ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह) :** (क) जी, हां ।

(ख) बातचीत संक्षेप में और सामान्य प्रकार की हुई । सरकारी स्तर पर आगे वार्ता की जायेगी ।

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि जो हमारे भारतीय सीलोन में बसे हुए हैं और स्टेटलैस सिटीजन की हालत में हैं उन्हें स्टेट का सिटीजन बनाने के बारे में जो बातचीत हुई है उसमें कितनी प्रगति हुई है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री दिनेश सिंह : उन्हीं के बारे में बातचीत हुई है और जैसा मैंने अभी अर्ज किया कि इस सिलसिले में जो हमारे अफसर हैं वे और बातें अभी कर रहे हैं ।

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि प्रधान मन्त्री जी ने जो बातचीत की उससे कहां तक यह मालूम पड़ता है कि यह जो हिन्दुस्तान के बाशिन्दे वहां पर हैं उन्हें स्टेट सिटीजन बनाया जायगा और अन्य सम्बन्धित अधिकार मिलेंगे ?

श्री दिनेश सिंह : बातें अभी चल ही रही हैं अभी वे खत्म नहीं हुई हैं ।

श्री विभूति मिश्र : प्रधान मन्त्री जी ने जो बातचीत की उस बातचीत से हमें क्या आभास मिलता है और आशा होती है ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : माननीय सदस्य यह याद रखें कि यह जो लोग हैं वहां, हमारी राय में सीलोन के नागरिक हैं वह हमारे नहीं हैं । वह वहीं पैदा हुए उनके बाप दादे सिर्फ यहां पैदा हुए थे इसलिये यह सीलोन गवर्नमेंट का काम है कि उनकी रक्षा करे और उनके जो नागरिकों के अधिकार होते हैं वह उनको दे । अब वह चाहते हैं उनको यहां भेज देना सबों को या बहुतों को, इस पर हमने कहा है कि जो लोग बगैर किसी दबाव के खुशी से आना चाहते हैं और हमारे विधान को पूरा करते हैं वे आ सकते हैं लेकिन हमें यह स्वीकार नहीं है कि वह यहां जबरदस्ती और बगैर उनकी मर्जी के भेजे जायें । इस पर बहस होती है कि क्या ढंग निकाला जाये, क्या नहीं । हमें यह मंजूर है कि किसी किस्म की कोई ज़बर्दस्ती न हो । जो वहां से आना चाहें, वे आ जायें, हम उनको लेंगे और जो वहां रहना चाहें, वे रहां रहें । लेकिन वे हमारे नागरिक नहीं हैं । उनके बाप दादा भारत से निकले थे, वह और बात है ।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या प्रधान मन्त्री यह महसूस करते हैं कि भारतीय उद्भव के इन सीलोन निवासियों को विधान द्वारा राज्यविहीन कर दिया गया है और क्या इस प्रश्न पर इन दो राज्यों में किसी सहमत निदेश पद पर समझौते की कोई व्यवस्था की गयी है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : इन प्रश्नों को कोई व्यवस्था करने से नहीं सुलझाया जा सकता जब तक कि दोनों सरकारें सिद्धान्त पर सहमत न हो जायें । व्यवस्था है, वहां हमारे उच्चायोग हैं, हमारे एजेण्ट हैं और अन्य लोग हैं जो उन लोगों से बातचीत करते हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि प्रधान मन्त्री जी जब लंका गए थे, तो लंका के प्रमुख अधिकारियों से बातचीत करने के अतिरिक्त, जिन भारतीय नागरिकों की यह समस्या है, उनमें से भी कुछ प्रधान मन्त्री जी से मिले थे और क्या उन्होंने अपनी कुछ कठिनाइयों का विवरण उन को दिया था ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैं फिर अर्ज करूंगा कि भारतीय नागरिकों का सवाल नहीं है। थोड़ा सा है इधर उधर । वह तो दूसरा सवाल है । यह तो उन लोगों का सवाल है, जिनके बाप दादा वहां पर गए थे और जो कानून के मुताबिक हमारे नागरिक नहीं रहे । वे सीलोन के नागरिक होने चाहिएं । लेकिन सीलोन वालों ने कुछ थोड़े से लोगों को, शायद तीस चालीस हजार को, नागरिक बनाया है । लेकिन सात लाख के करीब अभी बाकी हैं । और कुछ हमने बनाए, जो स्टेटलैस लोग कहलाते हैं, जो

---

†मूल अंग्रेजी में

कहीं के नागरिक नहीं हैं। हमारा कहना था—मैं फिर दोहराता हूं—कि उनमें से जो लोग खुशी से और बगैर दबाव के यहां आना चाहें, उनको हम ले लेंगे, अगर वे हमारे कांस्टीट्यूशन के हिसाब से हमारे नागरिक हो सकते हैं। हम कहते हैं कि बाकियों का वे प्रबन्ध करें।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न यह था कि जो राज्यविहीन लोग वहां पर हैं, क्या उनके प्रतिनिधि भी प्रधान मन्त्री जी से मिले थे ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : जो हमारे नागरिक हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या कोई राज्यविहीन व्यक्ति प्रधान मन्त्री जी से मिले थे, जब वे वहां थे ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : वह तो मुझे याद नहीं है। लेकिन ज्यादातर ये लोग वहां एस्टेट लेबर हैं और उनकी ट्रेड यूनियन्ज़ हैं। उन ट्रेड यूनियन्ज़ के अधिकारी मिले थे।

†**श्री हेम बरुआ** : लंकावासियों के लिये काम सुरक्षित रखने के श्रीलंका के निर्णय को ध्यान में रखते हुए, क्या मैं जान सकता हूं कि क्या लंका में तथाकथित भारतीय उद्भव के राज्यविहीन व्यक्तियों के रोजगार की सुरक्षा की समस्या पर दोनों प्रधान मन्त्रियों के बीच विशिष्ट रूप से बातचीत की गयी थी और यदि हां, तो उसका क्या परिणाम हुआ ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : अधिकांश राज्यविहीन लोग इस समय बस्तियों में काम करते हैं। इस प्रश्न पर विचार नहीं किया गया परन्तु आकस्मिक तौर पर इसका जिक्र किया गया कि यदि किसी को उसक रोजगार पर से हटाया जाता है, तो उनको अन्य रोजगार दिया जाये।

†**श्री वारियर** : क्या लंका सरकार इन राज्यविहीन लोगों को तब तक, जब तक भारत सरकार के साथ कोई अन्तिम समझौता नहीं हो जाता, रखने को सहमत है ? उनको भारत भेजने की बजाय क्या उनको तब तक वहां रहने दिया जायेगा जब तक कि भारत सरकार के साथ अन्तिम रूप से कोई समझौता नहीं हो जाता ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : अब वे लोग वहां पर हैं और जब हम उन्हें यहां नहीं आने देते, वे उन्हें आसानी से भारत नहीं भेज सकते। हमारी स्थिति यह है कि हम उस व्यक्ति को वापस लेंगे जो सब बातें पूरी करता हो और बिना दबाव के भारत आने का इच्छुक हो।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : अभी अभी प्रधान मन्त्री जी ने बताया कि जो व्यक्ति स्वयं आना चाहें वे आ सकते हैं। मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या लंका सरकार उनको अपनी आस्तियां लाने देगी और यदि वे यहां आना चाहें तो लंका सरकार किस रूप में उन्हें सहायता देगी ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मैं नहीं जानता कि लंका सरकार उनको क्या प्रोत्साहन देगी अथवा किस रूप में सहायता देगी। यह निर्णय तो लंका सरकार करेगी। हमने तो कह दिया है कि हम उन व्यक्तियों को लेना मंजूर करेंगे जो हमारी संवैधानिक आवश्यकताओं को पूरा करेंगे और बिना किसी दबाव के यहां आने का फैसला करें। मैं समझता हूं कि इस कार्य के लिये लंका सरकार उनको सुविधायें देगी।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या लंका सरकार उनको अपने साथ अपनी आस्तियां लाने देगी या नहीं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : उस प्रश्न का उत्तर दिया जा चुका है। अगला प्रश्न।

---

†मूल अंग्रेजी में

नागा नेताओं का भाग कर लन्दन जाना

+

†*१३४. श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री दाजी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री वासुदेवन नायर :
श्री मोहसिन :
श्री यशपाल सिंह :
श्री स० ब० पाटिल :
श्री कपूर सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री कजरोलकर :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री प्र० के० देव :
श्रीमती रेणु चक्रवर्ती :
श्री सरजू पाण्डेय :
श्री सोनावने :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या ब्रिटेन सरकार ने सितम्बर, १९६२ में "स्वतन्त्रता" के लिये चार नागा आन्दोलन-कारियों को देश में आने दिया ; और

(ख) यदि हां, तो इस पर भारत सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन)** : (क) जी, हां ।

(ख) ब्रिटेन में इन चार भारतीय नागाओं को प्रवेश करने की अनुमति देने से पूर्व लन्दन स्थित हमारे उच्चायोग ने ब्रिटिश के अधिकारियों को सूचित कर दिया था कि यदि ब्रिटिश अधिकारी, यह जानते हुए कि ये भारतीय नागरिक हैं, किसी अन्य देश द्वारा उनको दिये गये प्रमाणपत्रों के आधार पर इन नागाओं को ब्रिटेन में प्रवेश करने की अनुमति देने का फैसला करते हैं । तो हम इसको ब्रिटिश सरकार की ओर से यह अमैत्रीपूर्ण व्यवहार समझेंगे ।

ब्रिटिश अधिकारियों ने हमारे उच्चायोग को सूचित किया कि वे इन व्यक्तियों के जन्म स्थान के बारे में हमारे उच्चायोग के वक्तव्य को स्वीकार करते हैं और इस वक्तव्य से यह सिद्ध होता है कि ब्रिटिश नियमों के अन्तर्गत, ये ब्रिटिश नागरिक हैं । अतः उनको राष्ट्रमण्डल आप्रव्रजन अधिनियम, १९६२ के अन्तर्गत ब्रिटेन में प्रवेश करने का अधिकार है क्योंकि उनके पास ब्रिटेन में पर्यटक के रूप में रहने का पर्याप्त हक है ।

हमारे उच्चायोग द्वारा जारी किये गये एक प्रैस वक्तव्य में यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रमण्डल देश वह देश, जिनके ये नागा नागरिक हों सकते हैं, केवल भारत है और उनको भारतीय

---

†मूल अंग्रेजी में

नागरिकता के आधार पर ही राष्ट्रमण्डलीय नागरिकों के रूप में ब्रिटेन में प्रवेश की अनुमति दी गयी है ।

†**श्री सुरेन्द्र पाल सिंह** : जब हमारे प्रधान मन्त्री सितम्बर में लन्दन गये थे तो क्या ये नागा विद्रोही नेता उनसे मिले थे ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु-शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : जी, नहीं । ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं था ।

†**श्री सुरेन्द्र पाल सिंह** : 'राष्ट्रमण्डलीय नागरिकता' शब्द का क्या महत्व है ? जब उनको भारतीय नागरिक नहीं माना गया, तो उनको राष्ट्रमण्डलीय नागरिकों के रूप में ब्रिटेन में कैसे प्रवेश करने दिया गया ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : ब्रिटिश सरकार ने उन को भारतीय नागरिक माना है ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या यह सच है कि ये चार नागा नेता श्री फिजो से मिलने गये थे ताकि वह कुछ देशों की सहायता से संयुक्त राष्ट्र में नागालैण्ड का मामला उठा सकें और यदि हां, तो क्या ये लोग वापस आ गये हैं । क्या आपको उनकी गतिविधियों के बारे में कुछ पता है ?

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन** : वे अभी लन्दन में हैं । वे संयुक्त राष्ट्र नहीं गये हैं ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : समाचार पत्रों में यह प्रकाशित हुआ है कि ये नागा नेता श्री फिजो से मिलने लन्दन गये ताकि वह कुछ देशों की सहायता से संयुक्त राष्ट्र में नागालैण्ड् का प्रश्न उठा सकें । मैं यह जानना चाहता हूं कि वे अभी वहां ही हैं या वापस आ गये हैं । हमारी जानकारी का स्रोत क्या है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : चारों लन्दन में हैं । वे अमरीका नहीं गये ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : उस समय श्री फ़िजो भी लन्दन में थे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : यदि ये चारों और श्री फिजो वहां पर हैं तो वे मिलते होंगे । उस बारे में हमें कैसे पता लग सकता है ?

†**श्री स० मो० बनर्जी** : मैंने कभी संयुक्त राष्ट्र का उल्लेख नहीं किया ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त**: मैं यह जानना चाहता हूं कि जैसा कि समाचार-पत्रों में छपा है क्या यह सच है कि ब्रिटेन में प्रवेश की अनुमति मिलने के बाद इन नागाओं ने एक वक्तव्य जारी किया कि ये भारतीय नागरिक नहीं हैं । उस मामले में ब्रिटिश सरकार ने क्या स्थिति अपनायी ? यद्यपि वे राष्ट्रमण्डलीय नागरिक हो सकते हैं, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वे बिना किसी पारपत्र के ब्रिटेन में प्रवेश कर सकते हैं और फिर भारतीय नागरिकता से इंकार कर एक घोषणा कर सकते हैं ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : इस प्रश्न पर केवल ब्रिटिश सरकार ही विचार कर सकती है । ब्रिटिश सरकार ने कहा कि वह उनको केवल राष्ट्रमण्डलीय नागरिक की हैसियत से ही, जो उनको भारत के नागरिक होने पर है ब्रिटेन में प्रवेश की अनुमति दे सकती है उन्होंने यह कहा है । जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा, ऐसा हो सकता है कि उन्होंने इससे इंकार किया हो । उसके बाद भी हमने बताया है कि उनको केवल भारतीय नागरिक समझा जा सकता है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री बेरवा कोटा : क्या मैं जान सकता हूं कि चीनी हमले के सम्बन्ध में इन नागा नेताओं की क्या प्रतिक्रिया देखी गई है ?

अध्यक्ष महोदय : जो चार वहां है, उनकी, या सब नागाओं की, जो यहां पर हैं ?

श्री बेरवा कोटा: मैं यह जानना चाहता हूं कि जो नागा नेता यहां पर हैं, चीनी हमले के सम्बन्ध में उनकी क्या प्रतिक्रिया देखी गई है । वे भारत के साथ हैं या विरुद्ध ?

†**अध्यक्ष महोदय :** यह एक भिन्न प्रश्न है ।

श्री कछवाय : श्रीमन्, मैं यह जानना चाहता हूं कि इस समय कितने नागा विद्रोही इंग्लैण्ड में हैं ?

†**श्री हेम बरुआ :** क्या सरकार को इस तथ्य का पता है कि लन्दन में ये नागा नेता नये सिरे से भारत-विरोधी आन्दोलन चला रहे हैं और 'डेली एक्सप्रेस' भारत के विरुद्ध उनके आरोपों को प्रकाशित कर उनकी सहायता कर रहा है ? यदि हां, तो क्या मैं जान सकता हूं कि क्या सरकार ने ब्रिटिश सरकार का ध्यान इस ओर दिलाया है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** वहां 'डेली एक्सप्रेस' के जरिये उनकी प्रचार गतिविधियों के बारे में मुझे कोई विशेष जानकारी नहीं है । हो सकता है कि ये ऐसा कर रहे हों । प्रचार करने के अतिरिक्त और वे कर ही क्या सकते हैं । परन्तु मैं नहीं समझता कि इस ओर ब्रिटिश सरकार का ध्यान दिलाया गया है या नहीं ।

†**श्री सोनावने :** ब्रिटेन में इन विद्रोही नागाओं की कार्यवाही को ध्यान में रखते हुए क्या हमारे उच्चायुक्त को उन पर निगाह रखने को कहा गया है ताकि हमें जानकारी मिलती रहे ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** यह पता लगाना और हमें रिपोर्ट देना कि ये लोग क्या कर रहे हैं, उच्चायुक्त का काम है ।

†**श्री हेम बरुआ :** क्या उन्होंने ऐसा किया है ?

†**श्री बसुमतारी :** जब ये नागा विद्रोही वापस आना चाहें तो उनके विरुद्ध सरकार क्या कदम उठायेगी ?

†**अध्यक्ष महोदय :** यह प्रश्न काल्पनिक है ।

†**श्रीमती सावित्री निगम :** इसका व्यापक रूप से प्रचार किया गया है कि इन नागा विद्रोहियों ने अपने को भारतीय नागरिक कहने से इंकार कर दिया है और उनके पास यात्रा सम्बन्धी कोई कागजात अथवा पारपत्र नहीं थे । क्या मैं जान सकती हूं कि क्या कभी भारतीय सरकार ने ब्रिटिश सरकार से पूछा है कि उनको किस आधार पर भारतीय नागरिक माना गया ?

†**अध्यक्ष महोदय :** इस प्रश्न का उत्तर दिया जा चुका है ? अगला प्रश्न ।

---

†मूल अंग्रेजी में

"नाइन आवर्ज टू रामा" नामक पुस्तक पर आधारित फिल्म

+

†*१३५. { **श्री दी० चं० शर्मा :**
श्री वारियर :
श्री प्र० के० देव :

क्या सूचना और प्रसारण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या "नाइन आवर्ज टू रामा" नामक पुस्तक पर आधारित फिल्म पर प्रतिबन्ध लगाने का विचार है ; और

(ख) यदि हां, तो उसका क्या ब्यौरा है ?

†**सूचना और प्रसारण मंत्री (डा० बे० गोपाल रेड्डी) :** (क) फिल्म सेंसर बोर्ड को भारत में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये उस फिल्म पर मंजूरी देने के सम्बन्ध में अभी तक कोई आवेदन-पत्र नहीं मिला है ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** क्या भारत में इस फिल्म के निर्माताओं को कोई सुविधायें दी गयी थीं और यदि हां, तो किस तरह की ?

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी :** इस प्रश्न का कई बार उत्तर दिया जा चुका है । कई विभागों को पूछा गया है ।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** एक बार फिर जवाब देने में कोई नुकसान नहीं है ।

†**अध्यक्ष महोदय :** जरूर नुकसान है । अगर कई बार यहां इसका जवाब दिया जा चुका है तो उसे फिर दोहराने की कोई जरूरत नहीं । यदि उत्तर दिया जा चुका है तो उससे हमारे समय की थोड़ी बचत हो जायगी ।

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी :** संघ लोक सेवा आयोग से इस चलचित्र पर अपनी राय देने के लिये कहा गया था । वित्त मन्त्री से कुछ सुविधायें देने के लिये कहा गया था । राष्ट्रपति-सचिवालय, रेलवे मन्त्रालय, प्रतिरक्षा मन्त्रालय, मुख्य आयात निर्यात नियन्त्रक, इन सभी विभागों से कहा गया था कि वे कुछ सुविधाएं दें, महाराष्ट्र सरकार से भी कहा गया था ।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** इस किताब पर रोक लगा दी गयी है । यह फिल्म भारत में तैयार की गयी है । मैं समझता हूं कि हमारे देश ने, शायद सूचना विभाग ने उन्हें मदद भी दी है । क्या मैं जान सकता हूं कि सूचना और प्रसारण मन्त्रालय खुद लेकर इस फिल्म पर रोक लगा रही है ?

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी :** सेंसर के लिये उनकी अर्जी का हम इन्तजार कर रहे हैं । क्या किया जाना चाहिये इस पर हम उस समय गौर करेंगे । हम अभी से क्यों अनुमान लगायें कि क्या किया जाने वाला है ?

†**श्री वारियर :** क्या भारत में इसकी फिल्म बनाये जाने से पहले सरकार ने उस पांडुलिपि की छानबीन की थी और यदि हां, तो किसने छानबीन की थी ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : कुछ समय पहले एक सरसरी निगाह से उसकी छानबीग की गयी थी। फिल्म सेंसर के मामले में कई बातें होती हैं, केवल पांडुलिपि ही महत्वपूर्ण नहीं होती।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या सरकार को मालूम है कि इस किताब पर रोक लगाये जाने के बाद भी यह किताब रेलवे के बुक स्टालों पर बिक रही है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : हम फिल्म के बारे में बातचीत कर रहे हैं।

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : मुझे कोई जानकारी नहीं है। यह गृह मन्त्रालय बतायेगा।

†**श्री हेम बरुआ** : इस बात को देखते हुए कि खास कर इस किताब में जिसे पढ़ने का मुझे मौका मिल चुका है, और जिस पर अब रोक लगा दी गयी है, कई उद्धरण ऐसे हैं जो भारत के विरुद्ध हैं, यह कहना कहां तक सही है, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है, कि यह फिल्म उस किताब से अलग है, और क्या सरकार को उसके बारे में विश्वास है ?

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : जैसा कि मैं बता चुका हूं यह घोषित करने से पहले कि वह आपत्ति-जनक है या नहीं, हमें वह चित्र अभी देखना होगा। वह अभी तक हमें नहीं दिखाया गया है। वह लन्दन स्थित हाई कमीशन को दिखाया गया है।

डा० गोविन्द दास : जहां तक इस पुस्तक और इस फिल्म का सम्बन्ध है, भारतीय जनता की दो भावनायें हैं, वे क्या सरकार को मालूम हैं और अगर मालूम हैं तो इस सम्बन्ध में अभी तक कोई दरख्वास्त न आने पर भी, सरकार इस फिल्म के बारे में गम्भीरता से विचार कर रही है और कोई निर्णय लेने जा रही है ?

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : इस फिल्म पर कोई निर्णय करने के लिये हम निर्माताओं से कह रहे हैं कि वे चित्र हमें दिखाया जाये। उन्होंने अभी तक हम को नहीं दिखाया है। उन्होंने अभी तक हमें कोई आवेदन-पत्र भी नहीं दिया है ?

श्री म० ला० द्विवेदी : भारत सरकार को इस बात का पता है कि यह फिल्म 'नाइन आवर्ज़ टू रामा" पुस्तक के आधार पर बनाई गई है और यह पुस्तक निश्चित रूप से भारतीय जनता की भाव-नाओं को आघात पहुंचाती है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या फिल्म निर्माताओं के देश के राज्य से सरकार ने यह प्रार्थना की है कि वह फिल्म भारत सरकार को दिखाये ताकि सरकार उस पर आपत्ति कर सके और फिल्म का दिखाया जाना संसार भर में बन्द किया जा सके ?

अध्यक्ष महोदय : बार बार उन्होंने कहा है कि सरकार देख रही है .....

श्री म० ला० द्विवेदी : मैंने दूसरा सवाल किया है। मैंने जानना चाहा है कि वहां की सरकार को हमारी सरकार ने क्या कुछ लिखा है कि वह फिल्म दिखाई जाए हमारी सरकार को ? वह तो कह रहे हैं कि जब सेंसर बोर्ड के पास आएगी तब इसकी जांच होगी। लेकिन प्रश्न यह है कि सरकार ने क्या कोई प्रार्थना उनसे की है ?

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : इससे पहले कि यह सारी दुनिया में दिखायी जाये, हमने निर्माताओं को निश्चित रूप से लिखा है कि वे पहले हमें यह फिल्म दिखायें।

†**श्री फतेहसिंह राव गायकवाड** : पांडुलिपि सरकार द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के बाद किन आधारों पर फिल्म पर रोक लगायी जा सकती है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : वह सदस्यों को उपलब्ध किसी साहित्य में अवश्य होगा ।

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : पांडुलिपि मंजूर हो गयी होगी । इसका मतलब यह नहीं वह सेंसर से पास हो गयी है । सेंसर से मंजूरी के लिये कई बातों की जरूरत होती है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : वह जानना चाहते हैं कि किन आधारों पर फिल्म पर रोक लगायी सकती है ।

†**डा० बे० गोपाल रेड्डी** : यह वास्तविक नहीं है । यह तथ्यों से परे है । उसमें शायद गो को ऊंचा उठाया गया है । इन सब बातों की छानबीन करनी होगी ।

†**अध्यक्ष महोदय** : अगला प्रश्न ।

अणु शक्ति केन्द्र

†१३६. +

श्री भक्त दर्शन :
श्री भागवत झा आज़ाद :
श्री हरिश्चन्द्र माथुर :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री मोहसिन :
श्री स० ब० पाटिल :
श्री यशपाल सिंह :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री वारियर :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री प्र० के० देव :

क्या **प्रधान मन्त्री** ९ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ३९२ के उत्तर के सम्बन्ध यह बताने की कृपा करेंगे कि हयात कमेटी ने दिल्ली-पंजाब-राजस्थान-उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में अ शक्ति उत्पादन केन्द्रों के लिये जिन दो स्थानों की सिफारिश की थी, उनके बारे में क्या निश्चय कि गया है ?

वैदेशिक कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन) : सरकार ने राजस्थान कोटा के समीप राणा प्रताप सागर क्षेत्र में एक अणुशक्ति उत्पादन केन्द्र स्थापित करने का निर्ण किया है ।

श्री भक्त दर्शन : दो स्थानों में से जो एक स्थान अन्तिम रूप से छांटा गया है, इसका का क्या है, कौनसी विशेषतायें थीं उस स्थान में जिनके आधार पर उसको छांटा गया है ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू जो हमारी एक्सपर्ट कमेटी थी उसने इस पर विचार किया और सब जगह देख कर इसका फैस किया । अब मैं कैसे बता सकता हूं कि क्या विशेषतायें थीं ।

श्री भक्त दर्शन : हयात कमेटी ने जहां तक मुझे ज्ञात है दो स्थानों की सिफारिश की थी उनमें से एक को सरकार ने अन्तिम रूप से छांटा। मैं जानना चाहता हूं कि जो दूसरा स्थान है, कभी उस पर भी चाहे चौथी योजना में या पांचवीं योजना में, कभी विचार किया जा सकेगा ?

---

†मूल अंग्रेजी में

अध्यक्ष महोदय : पांचवीं योजना के बारे में इस वक्त कुछ कह दें, यह कैसे हो सकता है ।

†**श्री भागवत झा आजाद :** क्या हमें इस बात की कोई कल्पना मिल सकती है कि यह केन्द्र किस काम में लाया जायगा और यह कब तक चालू हो जायेगा ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** यह शक्ति उत्पादन के लिए एक असैनिक केन्द्र है ।

†**श्री भागवत झा आजाद :** मैं यह जानना चाहता हूं कि यह कब तक चालू हो जायेगा ।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** इस में चार या पांच साल लगेंगे ।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :** इस केन्द्र की कुल संस्थापित क्षमता कितनी होगी और क्या इसे चालू करने के लिए कोई विदेशी सहायता ली जायगी ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** मैं इस सवाल का ठीक ठीक जवाब नहीं दे सकता । हो सकता है कि हम विदेशी सहायता लें । मुझे बताया गया है कि क्षमता २०० मेगावाट की होगी ।

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर :** मुझें ज्ञात हुआ है कि प्रारम्भिक सर्वेक्षण किये जा चुके हैं । क्या उसके निर्माण का कोई क्रमबद्ध कार्यक्रम है और यदि हां तो वह क्या है और वह किस प्रकार बनाया गया है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** इसका या दूसरे केन्द्रों का निर्माण ?

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर :** राजस्थान में इस बिजली घर के लिए प्रारम्भिक सर्वेक्षण किये जा चुके हैं । मुझे ज्ञात हुआ है कि इस साल के बजट में ३॥ लाख रुपये मंजूर किये जा चुके हैं । वह रकम खर्च की जा रही है । मैं यह जानना चाहता हूं कि यह बिजली घर कायम करने के लिए कोई क्रमबद्ध कार्यक्रम तैयार किया गया है और वह क्या कार्यक्रम है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** मैं समझता हूं कि कोई क्रमबद्ध कार्यक्रम अवश्य होगा लेकिन अब अगला कदम इस केन्द्र के लिए विदेशी सहायता के सम्बन्ध में है । वह सहायता तकनीकी और वित्तीय, दोनों ही हो सकती है । एक बार उसका निश्चय हो जाने पर हम आगे बढ़ सकते हैं ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :** क्या आण्विक बिजली घर तापीय बिजली घर से अधिक सस्ता होता है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** कुछ जगहों में यह सस्ता होता है । खासकर राजस्थान में वह कुछ अधिक सस्ता और लाभदायक होगा क्योंकि वह कोयला वाले क्षेत्र से बहुत दूर है और कोयला लाने ले जाने में काफी खर्च होता है ।

†**श्री वारियर :** दूसरे बिजली घरों के साथ ही गुजरात या गुजरात के निकट यह बिजली घर स्थापित करने में सरकार का क्या उद्देश्य है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** पहला बिजली घर जो हम खोलने जा रहे हैं वह गुजरात के पास महाराष्ट्र में तारापोर नामक स्थान पर है । यह दूसरा बिजली घर है । तीसरा स्टेशन दक्षिण में कहीं खोला जाने वाला है ।

†**श्री यशपाल सिंह :** इस केन्द्र पर सेन्ट्रल गवर्नमेंट को कितना खर्च करना पड़ेगा ?

---

†*मूल अंग्रेजी में*

†**श्रीमती लक्ष्मी मेनन :** ३२ करोड़ रुपया ।

†**श्री हरिश्चन्द्र माथुर :** पिछले अधिवेशन में प्रधान मंत्री ने ठीक ही बताया था कि भारत केवल शांतिपूर्ण प्रयोजन के लिए ही अणुशक्ति का प्रयोग करेगा । अब चूंकि भारत की दुर्भाग्यवश एक ऐसे देश के साथ लड़ाई छिड़ गई है जो बहुत शीघ्र ही आण्विक शक्ति प्राप्त कर लेगा, क्या सरकार के सामने ऐसी कोई योजना है कि अभी या निकट भविष्य में आण्विक शस्त्रास्त्र तैयार करने के लिए इस अणुशक्ति का प्रयोग किया जाये ?

†**अध्यक्ष महोदय :** यह नीति विषयक व्यापक प्रश्न है । यह प्रश्न तो उस बिजली घर के सम्बन्ध में है जो चार या पांच साल के बाद तैयार होगा ।

†**श्री हरि विष्णु कामत :** मेरा प्रश्न उसी से सम्बद्ध है ।

†**अध्यक्ष महोदय :** सारी नीति अभी नहीं बतायी जा सकती ।

†**श्री राधे लाल व्यास:** क्या राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के अलावा मध्य प्रदेश को भी इस बिजली घर से पैदा की गयी बिजली से फायदा पहुंचेगा ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** हम बिजली तैयार करते हैं और वह कहीं भी ले जायी जा सकती है ।

राज्य योजना बोर्ड

\+

*१३७. **श्री श्रीनारायण दास :**
श्री अ० क० गोपालन :
श्री वासुदेवन नायर :
श्री हेम राज :

क्या **योजना** मंत्री ६ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या १७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उड़ीसा को छोड़ कर अन्य सब राज्यों ने राज्य योजना बोर्ड स्थापित कर दिये हैं; और

(ख) यदि हां, तो किन-किन राज्यों ने ऐसे बोर्डों की स्थापना कर दी है और उनके काम क्या हैं ?

श्रम और रोजगार मंत्रालय में उपमंत्री तथा योजना उपमंत्री (श्री चि० रा० पट्टाभिरमण) (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

श्री श्रीनारायण दास : क्या मैं जान सकता हूं कि विभिन्न राज्य सरकारों ने योजना आयोग के द्वारा जारी किये गये आदेश का पालन क्यों नहीं किया है ? क्या उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई कारण बतलाये हैं ?

योजना तथा श्रम और रोजगार मंत्री (श्री नन्दा) : पालन करने में कुछ समय लगता और वे अपने ढंग से इस तरफ बढ़ने की कोशिश कर रही हैं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री श्रीनारायण दास : क्या मैं जान सकता हूं कि योजना आयोग ने विभिन्न राज्य सरकारों को प्लैनिंग बोर्ड बनाने के सम्बन्ध में और संगठन के सम्बन्ध में कुछ सलाह दी है ? और यदि दी है तो वह क्या है ?

श्री नन्दा : कुछ तो यह प्लैनिंग कमिशन की रिपोर्ट में दिया है और कुछ अभी जिस वक्त वह इकट्ठे हुए थे, नैशनल डेवेलपमेंट कौंसिल में, उस समय उन्हें बतलाया गया था ।

†**श्री भागवत झा आजाद :** क्या योजना आयोग की इस इच्छा के विपरीत कि इन राज्य योजना बोर्डों की बैठकें अधिक जल्दी हुआ करें और वे योजना सम्बन्धी प्रश्नों को जल्दी निबटाया करें, क्या उन की बैठकें बहुत कम, शायद साल में केवल एक या दो बार ही, होती हैं ?

†**श्री नन्दा :** मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि राज्य निकायों के सामने विरले प्रश्न ही पेश होते हैं । राज्यों को अपने संसाधनों, अपने विकास कार्यक्रमों, दीर्घकालीन योजनाओं और पुनर्नवीकरण के प्रश्नों का भी विवेचन करना होता है । मैं समझता हूं कि इस प्रकार की प्रणाली से राज्यों को बहुत अधिक लाभ होगा ।

†**श्री वें० वेंकटासुब्बैया :** क्या कुछ राज्य सरकारों ने ऐसे राज्य योजना बोर्ड बनाने की अनिच्छा व्यक्त की है और यदि हां, तो क्या राज्यों के विचार केन्द्रीय सरकार को बता दिये जा चुके हैं ?

†**श्री नन्दा :** हम राज्य सरकारों के सम्पर्क में हैं । इस बारे में कोई कठोरता नहीं है । उसका एक उद्देश्य है और वे उसे किस तरह पूरा करते हैं यह उन्हीं पर निर्भर है । वे जिस तरह चाहें उस तरह व्यवस्था बदल सकते हैं । केवल उद्देश्य कार्यान्वित करना है ।

भूतपूर्व पुर्तगाली बस्तियों में भारतीय विधान लागू किया जाना

+

†*१३८. **श्री प कुन्हन :**
श्री अ० क० गोपालन :
श्री उमानाथ :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री यशपाल सिंह :
श्री यु० द० सिंह :
श्री पें० वेंकटासुब्बया :

क्या **प्रधान मंत्री** ९ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या १४७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गोआ, दमन और दीव में पुर्तगाली विधान का निरसन करने तथा इन बस्तियों में भारतीय विधान लागू करने के लिये क्या कार्यवाही की गई है; और

(ख) यदि अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है, तो विलम्ब के क्या कारण हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह) :** (क) और (ख). सरकार ने विनियम का प्रारूप तैयार कर लिया है और वह लगभग इस महीने के मध्य तक प्रख्यापित किया जायगा । विनियम में यह व्यवस्था है कि १०५ केन्द्रीय और राज्य अधिनियम गोआ, दमन और दीव में लागू किये जायें और तत्सम पुर्तगाली कानून, नियम, विनियम, आदेश आदि रद्द कर दिये जायें ।

†**श्री प० कुन्हन :** क्या सरकार श्रम सम्बन्धी कानूनों को भी इन क्षेत्रों में लागू करने जा रही है ?

†**श्री दिनेश सिंह :** मैं समझता हूं कि इन १०५ अधिनियमों में श्रम सम्बन्धी कानून भी शामिल हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि गोआ में किसी पुराने देशभक्त ने इसलिये अमारण अनशन किया था कि जल्दी से जल्दी भारतीय संविधान की सब धारायें गोआ में भी लागू हो जायें, और उस समय उसका अनशन इसलिये स्थगित कराया गया था कि दिसम्बर तक भारतीय संविधान वहां लागू हो जायेगा ? मैं जानना चाहता हूं कि इसको व्यावहारिक रूप देने की दिशा में क्या कार्य किया जायेगा ?

श्री दिनेश सिंह : मैंने अभी आपके सामने यह रखा कि लगभग १०५ एनैक्टमेंट्स ऐसे हैं जिनको गोआ में लागू करने के बाद गोआ का संविधान हमारे संविधान के साथ आ जायेगा, और वह इसी महीने के अन्त में हो जायेगा, दिसम्बर में तो अभी एक महीना है ।

चीन और तिब्बत में भारतीय राजनयिक कर्मचारी

†*१३९. { **श्री हरि विष्णु कामत :**
श्री गुलशन :
श्री कपूर सिंह :
श्री बूटा सिंह :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री बड़े :
श्री कछवाय :
श्री महेश्वर नायक :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या चीन सरकार ने चीन और तिब्बत में भारतीय राजनयिक कर्मचारियों की गतिविधियों पर और अधिक प्रतिबंध लगा दिये हैं ;

(ख) यदि हां, तो क्या प्रतिबन्ध लगाये गये हैं; और

(ग) इसके क्या कारण हैं ?

वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन) : (क) जी हां ।

(ख) अक्तूबर, १९६२ के आरम्भ से लासा स्थित भारतीय दूतावास (कान्सलेट जनरल) पर चीनी अधिकारियों ने और अधिक पाबन्दियां लगा दी हैं । ९ अक्तूबर से २५ अक्तूबर तक लासा के साथ तार सम्बन्ध तोड़ दिया गया था, अत्यावश्यक [illegible] प्राप्त नहीं की जा सकती थी और

†मूल अंग्रेजी में

विदेशियों को कन्सलेट जनरल में जाने की मनाही कर दी गयी थी । काउन्सल जनरल का टेलीफोन काट दिया गया था और कन्सलेट जनरल के कर्मचारियों के आने जाने पर कड़ी पाबन्दी लगायी गयी थी ।

पेकिंग स्थित हमारे दूतावास पर नई पाबन्दियां लगा दी गयी हैं । दूतावास के सामने पुलिस तैनात की गयी है और हमारे अफसरों और कर्मचारियों का आना-जाना कम कर दिया गया है ।

(ग) चीन स्थित हमारे दूतावासों को कामकाज करने में बाधा पहुंचाना ही इस का कारण मालूम होता है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : चूंकि हम अब दुर्भाग्यवश युद्ध के बीच हैं क्या सरकार का भारत में, दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता तथा अन्यत्र चीनी राजनयिक कर्मचारियों पर कम से कम पारस्परिकता के आधार पर, कड़ी पाबन्दी और रोक लगाने का विचार है और भारत में चीनी दूतावास द्वारा समय समय पर जारी किये गये प्रचार पुस्तिकाओं और अन्य प्रकाशनों पर भी रोक लगाने का उसका विचार है ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : जहां तक प्रकाशनों पर रोक लगाने का संबंध है, उनमें से अनेक प्रकाशनों पर रोक लगा दी गयी है। भावी प्रकाशनों पर रोक लगाने का सर्व साधारण आदेश हम नहीं जारी कर सकते । हम उन्हें देखेंगे और तब उन पर रोक लगायेंगे । दूतावासों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है । मैं अभी यह नहीं बता सकता कि सरकार उनके खिलाफ कब और क्या कार्रवाई करेगी। हमें इस मामले पर अभी गौर करना है ।

†**श्री हरिविष्णु कामत** : मेरा प्रश्न भारत में चीनी राजनयिक कर्मचारियों पर कड़ी रोक और पाबन्दी लगाने के बारे में है ।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : माननीय सदस्य ध्यान देंगे कि पेकिंग में दूतावास पर ही पाबन्दी है, व्यक्तियों पर नहीं । अर्थात् दूतावास के फाटक पर उन्होंने कुछ पहरेदार या पुलिस सिपाही रखे हैं उन लोगों को देखने के लिए जो अन्दर आते हैं और बाहर जाते हैं । कुछ और पाबन्दियां भी हैं जो वहां सभी विदेशी दूतावासों पर लागू होती हैं ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : क्या प्रधान मंत्री का ध्यान इन समाचारों की ओर दिलाया गया है कि चीन सरकार भारत के साथ राजनयिक संबंध तोड़ने वाला है और यदि हां, तो क्या हमारी सरकार चीन के साथ राजनयिक संबंध तोड़ने के मामले में कुछ सोच रही है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मने अभी अभी बताया है कि उस आशय के समाचार मैंने नहीं देखे हैं लेकिन यह सवाल हमेशा ही हमारे दिमाग में रहता है । जब हम कोई फैसला करेंगे तो हम इस जरूर अमल में लायेंगे ।

†**श्री हेम बरूआ** : इस बात को देखते हुए कि न्यू चाइना न्यूज एजेन्सी ने एक नयी बात यह सामने रखी है कि सैनिक कार्रवाई से ही चीन के खिलाफ भारत की चुनौती का सामना किया जा सकता है और इसलिए एक बड़ी लंबी लड़ाई का एलान किया जा रहा है, क्या सरकार यह नहीं सोचती कि राजनयिक संबंध तुरन्त तोड़ दिये जायें ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय :** इस सवाल का जवाब पहले ही दिया जा चुका है।

†**श्री हरि विष्णु कामत :** प्रधान मंत्री ने यह बताया है कि उस पर विचार किया जा रहा है।

श्री बड़े: क्या प्रधान मंत्री जी को यह बात मालूम है कि बम्बई और कलकत्ता की कंसुलेट्स ने महत्वपूर्ण चीनी कागज जला दिये हैं और पंचमांगी लोग उन से और बाहर के लोगों से मिलते हैं ? मैं जानना चाहता हूं कि जिस प्रकार से लासा में बन्दोबस्त किया गया है उसी प्रकार से यहां बन्दोबस्त क्यों नहीं किया जाता ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैं ने अर्ज़ किया कि इन बातों पर हम गौर कर रहे हैं। कंसुलेट्स और एम्बेसीज़ में ज़रा फर्क है। हम दोनों पर अलग अलग विचार कर रहे हैं और जो मुनासिब कार्रवाई हमारी राय में होगी करेंगे, और उसकी सूचना आपको देंगे।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** क्या सरकार को इस बारे में जानकारी है कि इस देश में चीन के गुप्तचरों का जाल कितना है, क्योंकि चंडीगढ़ में एक राज्य मंत्री का भाषण समाचारपत्रों में नहीं दिया गया जब कि वही भाषण उसी दिन शाम को पेकिंग रेडियो से प्रसारित किया गया था।

†**अध्यक्ष महोदय :** उसकी कोई संगति नहीं है।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :** खासकर लासा में हमारे दूतावास के संबंध में प्रधान मंत्री द्वारा बतायी गयी परिस्थितियों में क्या लासा स्थित हमारे राजनयिक कर्मचारियों को वापस बुलाने का कोई विचार है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू :** मैंने अभी अभी उसका जवाब दिया है।

†**अध्यक्ष महोदय :** एक ही सवाल किसी न किसी रूप में रखा जा रहा है।

†**श्री हेम बरुआ :** क्या मैं एक स्पष्टीकरण पूछ सकता हूं ? आपने अभी बताया कि श्री दी० चं० शर्मा का प्रश्न संगत नहीं है लेकिन हमारा अनुभव यह है कि ये राजनयिक दूतावास जासूसी के पक्के अड्डे बन गये हैं और इसलिए इस दूतावास तथा उसके कर्मचारियों पर पाबन्दी जरूर लगायी जानी चाहिये।

†**अध्यक्ष महोदय :** जी हां, वह संगत नहीं है।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** मैंने चीन की गुप्तचर सेवा के बारे में पूछा था।

†**अध्यक्ष महोदय :** जी हां, मैं बता चुका हूं कि वह इस प्रश्न से संगत नहीं है। उसका कोई दूर संबंध हो सकता है।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** आखिर उसकी गुप्तचर सेवा तो है।

†**अध्यक्ष महोदय :** इस तरह तो हर चीज संबंधित हो सकती है।

श्री कछवाय : मैं जानना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार चीनी दूतावास के कर्मचारियों पर कोई प्रतिबन्ध लगाना चाहती है।

अध्यक्ष महोदय : यह सवाल बार बार पूछा जा चुका है।

---

†मूल अंग्रेजी में

राज्यों की विकास योजनायें

+

†*१४०. { **श्री द्वा० ना० तिवारी :**
श्री मे० क० कुमारन :
श्री स० ना० चतुर्वेदी : }

क्या **योजना** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कुछ राज्यों को स्थानीय साधनों को बढ़ाने में समर्थता के कारण राज्यों की विकास योजनाओं के अन्तर्गत महत्वपूर्ण योजनाओं को कार्यान्वित करना कठिन अनुभव हो रहा है ;

(ख) क्या उन राज्यों ने विशेष-वित्तीय सहायता के लिये केन्द्र से प्रार्थना की है ; और

(ग) यदि हां, तो इस के संबंध में क्या कार्यवाही की गई है ?

†**श्रम और रोजगार मंत्रालय में उपमंत्री तथा योजना उपमंत्री (श्री चे० रा० पट्टाभिरामन्) :** (क) से (ग). राज्यों की आयोजनाओं में तीसरी योजना के दौरान कार्यान्वित की जाने वाली परियोजनाओं और कार्यक्रमों के लिए तथा आवश्यक संसाधनों के लिएं व्यवस्था की गयी है । प्रत्येक राज्य की वार्षिक आयोजना में ये सब ब्यौरे तैयार किये जाते हैं । यदि राज्य के द्वारा प्राप्त किये जाने वाले संसाधन वार्षिक-आयोजना में रखी गयी व्यवस्था से कम पाये जायें तो कार्यक्रमों में परिवर्तन करना आवश्यक हो सकता है । इस बात के लिए हर कोशिश की जा रही है कि महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को धक्का न पहुंचे ।

†**श्री द्वा० ना० तिवारी :** क्या किन्हीं राज्य सरकारों ने भारत सरकार से यह प्रार्थना की थी कि उनकी अत्यावश्यक परियोजनाओं के लिए उन्हें पेशगी दी जाये, क्योंकि वे अपने राज्यों में उसके लिए संसाधन प्राप्त नहीं कर पाये हैं ।

†**योजना तथा श्रम और रोजागार मंत्री (श्री नन्दा) :** जी हां, कुछ राज्यों ने इस विषय में आयोजन आयोग को लिखा है और हमने उचित उत्तर दिया है ।

†**श्री द्वा० ना० तिवारी :** किन राज्यों ने ऐसी प्रार्थना की है और क्या जवाब दिया गया है ?

†**श्री नन्दा :** मेरे पास अभी नाम नहीं हैं । राज्यों की आयोजनाएं हैं और यदि एक वर्ष में उन्हें और अधिक रकम की आवश्यकता हो तो कभी कभी पेशगी देना संभव होता है जो बाद के वर्षों में लौटानी होती है । कुछ राज्यों के मामले में ऐसा किया गया है । और उसे फिर करना होगा ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ :** इस बात को देखते हुए कि वित्त आयोग ने जम्मू और काश्मीर सरकार का वार्षिक अनुदान कम कर दिया है क्या योजना आयोग को उसने ऐसा कोई संकेत दिया है कि उसकी आयोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए वे अपनी निधियां प्राप्त नहीं कर सकेंगे ? यदि हां, तो योजना आयोग ने उस पर क्या कार्रवाई की है ?

†**श्री नन्दा :** हमें उसके बारे में जानकारी है । वित्त आयोग ने जो कुछ किया है उसमें हम हस्तक्षेप नहीं करते ।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, क्या जिन राज्यों की सीमा पर नया खतरा पैदा हुआ है, उस स्थिति को देखते हुये वहां की सरकार ने कोई विशेष प्रार्थना की है और क्या प्लानिंग कमिशन इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगा ?

श्री नन्दा : वह चीज ध्यान में है और जो भी वाजिब है किया जायेगा ।

श्री सरजू पाण्डेय : उत्तर प्रदेश सरकार विचार कर रही है कि उसके पास इतने रिसोरसेज़ नहीं हैं कि वह तीसरी पंचवर्षीय योजना को पूरा कर सके ? क्या उसने इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार को कोई लिखा पढ़ी की है ?

श्री नन्दा: इसमें दो पहलू थे । एक तो यह कि अगर वह जो चाहते थे इकट्ठा करना रिसोरसेज़, अगर वह नहीं कर सकेंगे तो सेंट्रल एसिसटेंस कम कर दी जायेगी । उसके बारे में जवाब दे दिया गया है कि जो हमें देना है उसमें हम कमी नहीं करेंगे । मगर जो उन्हें इकट्ठा करना था, अगर वह उसे नहीं कर सके तो उनको अपने प्लान में कुछ रद्दोबदल करना पड़ेगा ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त :** वर्तमान संकट को देखते हुये क्या राज्यों को अपनी योजनायें नये रूप से बनाने के लिये उन्हें कोई आदेश दिये गये हैं ? यदि हां, तो ये आदेश क्या हैं ?

†**श्री नन्दा :** वह दिया जा चुका है । राष्ट्रीय विकास परिषद् के सामने वह एक मुख्य विषय था और उस विषय पर एक विज्ञप्ति भी जारी की जा चुकी है ।

पश्चिमी बंगाल-पूर्वी पाकिस्तान सीमा पर संयुक्त सर्वेक्षण

†*१४१. { **श्री त्रिदिव कुमार चौधरी :**
श्री इन्द्रजीत गुप्त :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पश्चिमी बंगाल और पूर्वी पाकिस्तान के भूमि अभिलेख और सर्वेक्षण निदेशकों के २६, २७ और २८ सितम्बर, १९६२ के कलकत्ता में हुये सम्मेलन में यह निश्चय किया गया था कि पश्चिमी बंगाल और पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर ४ जन, १९६१ को जो संयुक्त सर्वेक्षण बन्द कर दिया गया था वह पुनः इस वर्ष १ नवम्बर से आरम्भ कर दिया जाये ;

(ख) क्या उपरोक्त सर्वेक्षण वास्तव में पुनः आरम्भ कर दिया गया है ; और

(ग) त्रिपुरा-पूर्व पाकिस्तान सीमा तथा असम-पूर्व पाकिस्तान सीमा के संयुक्त सवक्षण और सीमांकन के सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति क्या है ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमत्री (श्री दिनेश सिंह) :**(क) जी हां ।

(ख) जी हां ।

(ग) त्रिपुरा-पूर्व पाकिस्तान सीमा तथा आसाम-पूर्व पाकिस्तान सीमा के संयुक्त सर्वेक्षण तथा सीमांकन के बारे में वर्तमान स्थिति एक विवरण में बताई गई है जो लोक-सभा पटल पर रखा जाता है । विवरण में चालू क्षेत्रीय मौसम में किये गये काम का ब्योरा नहीं है क्योंकि अगले वर्ष मौसम की समाप्ति के बाद आंकड़े इकट्ठा किये जायेंगे ।

---

†मूल अंग्रेजी में

विवरण

गत क्षेत्रीय मौसम के अन्त तक भारत-पूर्वी पाकिस्तान सीमा के सीमाकांन में प्रगति

क्रम संख्या	क्षेत्र का नाम	क्षेत्र की कुल लम्बाई	थमले लगाकर गत क्षेत्रीय मौसम के अन्त तक पूरा किया गया सीमांकन
१	पश्चिमी बंगाल-पूर्व पाकिस्तान	१३४९ मील अनुमानत:	१०६४ मील अनुमानत :
२	आसाम-पूर्व पाकिस्तान	६२० मील अनुमानत :	४११ $^{१}/_{२}$ मील अनुमानत:
३	त्रिपुरा-पूर्व पाकिस्तान	५५० मील अनुमानत:	१८४ मील अनुमानत:

†**श्री त्रिदिव कुमार चौधरी :** क्या सभी प्रकार का तनाव दूर करने के लिय दोनों देशों के सर्वेक्षण कर्मचारियों की सुरक्षा के नियम बना लिये गये हैं ?

†**श्री दिनेश सिंह :** जी हां ।

†**श्री f दिव कुमार चौधरी :** क्या उत्तर बंगाल के जलपाई गुड़ी जिले में दाईखाता से हाल में ही पाकिस्तानी सेनायें हटाने का निर्णय इसी आधार पर है और क्या वहां पर भी संयुक्त सवक्षण आरम्भ किये गये हैं ?

†**श्री दिनेश सिंह:** इस क्षेत्र के विभिन्न भागों में संयुक्त सर्वेक्षण किया जा रहा है । मैं नहीं जानता कि इस स्थान पर सर्वेक्षण हो रहा है । सर्वेक्षण दलों को संरक्षण देने का निर्णय उप-आयुक्तों की बैठक में किया गया था और बाद में इस पर मुख्य सचिवों ने भी निर्णय कर लिया ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त :** क्या कलकत्ता में हुई गत बैठक में डाइरैक्टर आफ लैंड रिकार्ड एण्ड सव, वैस्ट बंगाल ने कहा है कि केन्द्रीय सरकार ने त्रिपुरा-पूर्व पाकिस्तान सीमा के प्रश्न पर चर्चा करने का अधिकार उन्हें नहीं दिया गया था ? यदि यह सच है कि तो इसके क्या कारण हैं ?

†**श्री दिनेश सिंह :** त्रिपुरा के लिये हमने एक अलग अधिकारी नियुक्त किया था ।

†**श्री स० मो० बनर्जी :** क्या बेरुबाड़ी में सर्वेक्षण कार्य निलम्बित कर दिया है ? यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं और क्या इसको शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है ?

†**श्री दिनेश सिंह :** इसका निलम्बन कर दिया गया है ।

†**श्री स० मो० बनर्जी :** समाचार-पत्रों में यह समाचार आया है कि बेरूवाड़ी में सर्वेक्षण कार्य दूसरे पक्ष द्वारा गलत रवैया अपना लेने के कारण निलम्बित कर दिया गया है । मैं जानना चाहता हूं कि क्या इसको पुनः आरम्भ करने की आशा है ; यदि हां, तो कब ?

†**श्री दिनेश सिंह:** मैं इस समय यह नहीं बता सकता हूं कि विशेष स्थान पर इसका निलम्बन कर दिया गया है ।

†मूल अंग्रजी में

एवरो–७४८

+

†*१४२. श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री दाजी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री द० कु० दास :
श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी :
श्री यलमन्दा रेड्डी :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकारी क्षेत्र में एवरो-७४८ विमान के निर्माण के लिये नेशनल एयर-क्राफ्ट लिमिटेड नामक एक नया सरकारी सहकारी उपक्रम स्थापित करने का विचार है ; और

(ख) यदि हां, तो इसका कारण और ब्योरा क्या है ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चावन)** : (क) और (ख). इस परियोजना के प्रबन्ध के लिये उपयुक्त संगठन बनाने पर विचार किया जा रहा है ।

वर्तमान साधनों का शीघ्रता से उपयोग करके एवरो-७४८ का निर्माण कानपुर के वर्तमान विमान बल स्थापना में इसलिये आरम्भ किया गया था । एक विमान बनाया गया था और इस प्रकार के अन्य विमान बनाये जा रहे हैं ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : उत्तर स्पष्ट नहीं था । परन्तु मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस कारखाने को इंडियन एयर फोर्स मैनटेनेन्स कमान्ड से अलग किया जायेगा ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैय्या)** : जैसा अभी बताया गया कि ऐसे प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है और संभव है अन्य बातों पर भी विचार करना हो ।

श्री म० ला० द्विवेदी : इस बात में क्या सचाई है कि एवरो-७४८ जितना कामयाब होना चाहिये था उतना कामयाब साबित नहीं हुआ है जैसी कि आशा थी और उसको सुधारने के संबंध में जो भारत सरकार की योजनायें थीं उस संबंध में क्या विचार किया जा रहा है और वे कब तक कार्यान्वित होंगी ?

†**श्री रघुरामैया** : एवरो-७४८ बनने के बाद दक्षिण पूर्व एशिया सफलतापूर्वक गया था । सच यह है कि अंग्रेजी निर्माताओं ने हमारे इस उत्पादन के लिये बधाई दी थी ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : क्या एवरो इंजनों का निर्माण आरम्भ करना असंभव है अथवा क्या इनका अभी भी आयात किया गया है ?

†**श्री रघुरामैया** : जी हां । हमने बंगलौर में डार्ट-७ इंजनों का निर्माण आरम्भ कर दिया है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

प्रश्नों के लिखित उत्तर

प्रतिरक्षा मंत्रालय का विभाजन

†*१४३. **श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि प्रतिरक्षा मंत्रालय को दो विभागों में बांटा जा रहा है ;

(ख) यदि हां, तो इसका क्या कारण है ; और

(ग) दोनों विभागों के कार्य क्या होंगे ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) प्रतिरक्षा मंत्रालय में प्रतिरक्षा उत्पादन विभाग बनाया गया है ।

(ख) क्यों कि तीनों सेवाओं में संकटकालीन स्थिति के कारण बहुत काम बढ़ गया है और इसमें शीघ्रता की आवश्यकता है और प्रतिरक्षा स्थापनाओं में उत्पादन करना है ।

(ग) दोनों विभागों के कार्य दिखाने वाला विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २८]** ।

इण्डोनेशिया से बैम्पायर विमानों की खरीद

†*१४४. **श्री गुलशन :**
श्री कपूर सिंह :
श्री यशपाल सिंह :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री ईश्वर रेड्डी :
श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री महेश्वर नायक :
डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या हाल ही में सरकार ने इंडोनेशिया से वैम्पायर जैट विमानों की खरीद की है ;

(ख) यदि हां, तो कितने और किन शर्तों पर ; और

(ग) इस खरीद के क्या कारण हैं ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) इंडोनेशिया सरकार से सैकन्ड हैंड वैम्पायर ट्रेनर विमान तथा कुछ पुर्जे खरीदने के सम्बन्ध में हाल में ही एक समझौता हुआ है ।

(ख) इसके अधीन ८ विमान हैं । शर्तें हमारे अनुकल हैं । विमान के मूल्य इंडोनेशिया सरकार को नहीं देने हैं परन्तु भारत में इसके लिये इंडोनेशिया विमान बल के कर्मचारियों का प्रशिक्षण करना है ।

(ग) यह खरीद जैट-ट्रेनर विमान की विमान बल में कमी को पूरा करने के लिये की गई है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

युद्ध-सामग्री कारखानों में उत्पादन

*१४५. श्री प्र० के० देव :
श्री प्र० चं० बरुआ :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या प्रतिरक्षा मंत्रालय ने युद्ध सामग्री कारखानों को अपना उत्पादन अधिकतम करने का आदेश दिया है चाहे निरन्तर सारा समय तीन पारियों में काम करना पड़े ;

(ख) क्या कारखानों का और चीजों के उत्पादन की दृष्टि से विस्तार भी किया जा रहा है ;

(ग) यदि हां, तो क्या युद्ध सामग्री कारखानों में उपभोक्ता सामान बनाना बन्द कर दिया गया है जो कि कुछ समय पहिले उन्हें व्यस्त रखने की दृष्टि से आरम्भ किया गया था ; और

(घ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

†**प्रतिरक्षा मन्त्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) जी हां, कई शिफ्ट बनाने और छुट्टी के दिनों में काम कराने के अधिकार देने के लिये आदेश दे दिये गये हैं ।

(ख) स्थापित क्षमता का अधिकतम उपयोग किया जा रहा है । क्षमता बढ़ाने तथा उत्पादन की नई लाइनों की स्थापना करने की परियोजनाओं की शीघ्रता की जा रही है ।

(ग) और (घ) . जी हां । असैनिक उपभोग की सभी वस्तुओं का उत्पादन रोकने के लिये तथा सेवाओं की आवश्यकताओं को उच्चतम प्राथमिकता देने के आदेश दे दिये गये हैं ।

सैनिक प्रशिक्षण

†*१४६. श्री हेम राज :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री प० ला० बारूपाल :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह :
श्री प्रकाश वीर शास्त्री :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार चीनी हमले को दृष्टिगत रखते हुये देश की रक्षा के लिये छात्रों और नागरिकों को सैनिक प्रशिक्षण देने का विचार कर रही है ; और

(ख) यदि हां, तो इस योजना का स्वरूप क्या होगा ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) और (ख). सरकार नेशनल केडट कोर की योजना के अधीन विद्यार्थियों को सैनिक प्रशिक्षण दे रही है और अन्य व्यक्तियों को लोक सहायक सेना और सिविलियन राइफल ट्रेनिंग की योजनाओं के अधीन प्रशिक्षण दे रही है ।

सरकार का विचार कालिजों तथा कालिजों में सभी उपयुक्त विद्यार्थियों को नेशनल कैडट कोर राइफल ट्रेनिंग योजना के अधीन लाने का है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

नागरिकों के लिए सिविलियन राइफल ट्रेनिंग योजना को बढ़ाने के तरीकों पर विचार किया जा रहा है।

आकाशवाणी से प्रचार

*१४७. **श्री बेरवा कोटा :**
श्री इ० मधुसूदन राव :

क्या **सूचना और प्रसारण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय भूभाग पर चीन द्वारा किए गए आक्रमण के बारे में आकाशवाणी से प्रचार का कोई नया कार्यक्रम बनाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो उसका ब्योरा क्या है ; और

(ग) यदि नहीं, तो भविष्य के लिए बनाये गये कार्यक्रम की क्या रूपरेखा बनाई गई है ?

सूचना और प्रसारण मंत्री (डा० बे० गोपाल रेड्डी) : (क) जी, हां ।

(ख) एक विवरण जिसमें अपेक्षित जानकारी दी हुई है, सभा की मेज पर रखा जाता है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या २९]**

(ग) सवाल नहीं उठता ।

तिब्बती शरणार्थी

*१४८. **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :
श्री दी० चं० शर्मा :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) अब तक कितने तिब्बती शरणार्थियों ने भारत में शरण ली है और उन पर कितना धन व्यय हुआ है ;

(ख) अब तक राज्यवार कितने ऐसे शरणार्थियों को पुनर्वासित किया गया है ;

(ग) इस समय भी कितने–कितने तिब्बती शरणार्थी ऐसे हैं जिन को बसाया जाना है; और

(घ) इन शरणार्थियों को अन्यत्र स्थायी रूप से बसाये जाने की कब तक आशा की जाती है ?

वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह) : (क) लगभग ३४,०००। अब तक जो खर्च आया है, उसके आंकड़े इकट्ठे किये जा रहे हैं और बाद में बता दिए जायंगे ।

(ख) १०,००० शरणार्थी अर्द्ध–स्थायी रूप से या तो बसा दिए गए हैं या बसाए जा रहे हैं। ३,००० शरणार्थियों को मैसूर में किसानों के रूप में बसाया जा रहा है और २,००० को लामाओं के रूप में वक्सा दुआर और डलहौजी में बसा दिया गया है।

(ग) लगभग २४,००।

(घ) कोई पक्की तारीख नहीं दी जा सकती। उपयुक्त जमीन लेने की कोशिशें बराबर की जा रही हैं ताकि उन्हें वहां पर किसानों के रूप में बसाया जा सके।

समाचार-पत्र उद्योग में एकाधिकार प्रवृत्तियां

†*१४९. **श्री श्रीनारायण दास :**
श्री भक्त दर्शन :
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **सूचना और प्रसारण** मंत्री १४ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ३०५ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या समाचारपत्र उद्योग में स्वामित्व के केन्द्रीकरण और एकाधिकारिक प्रवृत्तियों का अध्ययन पूरा हो गया है ; और

(ख) यदि हां, तो अध्ययन के निष्कर्ष क्या हैं ?

†**सूचना और प्रसारण मंत्री (डा० बे० गोपाल रेड्डी)** : (क) और (ख). सरकार का विचार है कि समाचारपत्र उद्योग में स्वामित्व के केन्द्रीयकरण और एकाधिकारिक प्रवृत्तियां ऐसी नहीं हैं जिनके लिए कोई तुरंत कार्यवाही की जा सके। स्थिति पर लगातार ध्यान दिया जा रहा है और प्रेस आयोग की सिफ़ारिशों के अनुसार मामला उचित समय पर प्रेस काउन्सिल के सामने लाया जायेगा जोकि शीघ्र ही स्थापित करने का विचार है।

राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन

†*१५०. **श्री अ० क० गोपालन :**
श्री दीनेन भट्टाचार्य :
श्री नम्बियार :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उनका ध्यान हाल ही में हुए राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन के अन्त में जारी की गई विज्ञप्ति के शीघ्र बाद राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों की बातचीत के सम्बन्ध में प्रधान मंत्री मैकमिलन के रेडियो प्रसारण की ओर दिलाया गया है ; और

(ख) क्या उन्होंने विज्ञप्ति और श्री मैकमिलन के रेडियो भाषण के बीच कोई अन्तर महसूस किया है ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन)** : (क) जी हां।

(ख) टिप्पणी में राष्ट्रमंडल प्रधान मंत्रियों के ही विचार व्यक्त हैं। परन्तु ब्रिटिश प्रधान मंत्री के प्रसारण में उनकी सरकार के विचार व्यक्त हैं। स्पष्ट है कि दोनों के एकसा होने की संभावना नहीं हो सकती है।

---

†मूल अंग्रेजी में

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय

†*१५१. श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री कजरोलकर :
श्री विशन चन्द्र सेठ :
श्री महेश्वर नायक :

क्या **प्रधान मंत्री** २७ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ६३२ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दक्षिण अफ्रीका में भारतीय उद्भव के व्यक्तियों के साथ बर्ताव के सम्बन्ध में उस देश के साथ बातचीत के मामले में इस बीच कोई प्रगति हुई है ;

(ख) क्या संयुक्त राष्ट्र महासभा की हाल की बैठक में यह मामला चर्चा के लिए उठा था; और

(ग) यदि हां, तो यदि भारत ने इस सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव प्रस्तुत किये थे अथवा किन्हीं प्रस्तावों का समर्थन किया था, तो वे क्या थे तथा उनके क्या परिणाम निकले ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन)** : (क) जी नहीं।

(ख) जी हां।

(ग) भारत ने अन्य ४३ राष्ट्रों के साथ मिलकर राष्ट्रसंघ से अनुरोध किया है कि 'दक्षिण अफ्रीका गणतंत्र सरकार की वर्ण भेद नीति' शार्षक में 'दक्षिण अफ्रीका में भारतीय उद्भव के व्यक्तियों के साथ बर्ताव' को भी शामिल कर लिया जाये ऐसा कर लिया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस बीच एक संकल्प पारित कर लिया है कि दक्षिण अफ्रीका के विरोधी देशों से राजनयिक और आर्थिक स्वीकृतियां और सुरक्षा परिषद से अनुरोध किया है कि वह महासभा के तथा परिषद के संकल्पों को दक्षिण अफ्रीका से पालन कराये और यदि आवश्यक हो तो दक्षिण अफ्रीका से राष्ट्र संघ को निकालने के संबंध में विचार करे।

टैंगानिका में भारतीय

†*१५२. श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री कपूर सिंह :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि टैंगानिका की एशियन सिविल सर्वेंट्स एसोसियेशन ने भारत सरकार से यह अनुरोध किया है कि वह ब्रिटिश सरकार से वहां के उपेक्षित भारतीय असैनिक कर्मचारियों को उनकी सेवाओं की समाप्ति पर उचित और न्यायपूर्ण प्रतिकर दिये जाने के प्रश्न पर बात-चीत करे; और

(ख) यदि हां, तो सरकार इस मामले में क्या कार्यवाही कर रही है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह)**: (क) जी हां।

(ख) भारत सरकार का विचार है कि इन अधिकारियों के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा अन्य डैजिगनेटेड आफीसरों के साथ किया गया है। इन शर्तों में इस प्रकार का प्रतिकर देना भी शामिल है जो 'अफ़्रीकी को ही सेवा में लेने' के कारण निकाले गये अधिकारियों को दिया जायेगा। सरकार ने ब्रिटिश सरकार तथा टेंगानिका सरकार को कई बार इस बारे में लिखा है।

पाकिस्तान द्वारा लौटाया गया भारतीय सर्वेक्षण अधिकारी का सामान

†*१५३. **श्री यशपाल सिंह :**
श्री बूटा सिंह :
श्री गुलशन :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पाकिस्तान सरकार ने वे नक्शे और अन्य दस्तावेज लौटा दिये हैं जो गत वर्ष जुलाई में बेरुबारी सीमान्त पर भारतीय सवक्षण अधिकारी से अवैध रूप से छीन लिये गये थे;

(ख) यदि हां, तो कब; और

(ग) क्या सब दस्तावेज ज्यूं के त्यूं हैं अथवा उनमें कांट-छांट की गई है?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह)** : (क) जी हां। पश्चिम दीनाजपुर सीमा पर भारतीय सर्वेक्षण अधिकारियों से जून, १९६१ में पकड़े गये अवैध दस्तावेज वापस लौटा दिए गए हैं;

(ख) दस्तावेज ३६ सितम्बर, १९६२ को पश्चिम बंगाल तथा पूर्वी पाकिस्तान के भूमि अभिलेख तथा सर्वेक्षण निदेशकों के कलकत्ता में हुए सम्मेलन में लौटा दिए गए थे।

(ग) सभी दस्तावेज ज्यूं के त्यूं थे।

चीन में भारतीय

२६७. **श्री लखमू भवानी** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय चीन में कुल कितने भारतीय निवास करते हैं;

(ख) इस वर्ष अब तक कुल कितने भारतीयों को चीन से बाहर निकाला गया; और

(ग) उनको निकालने के चीनी सरकार ने क्या कारण बताये?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : (क) सरकार के पास जो सूचना सुलभ है, उसके अनुसार चीन में रहने वाले भारतीयों की संख्या १८० है।

(ख) कोई नहीं।

(ग) प्रश्न नहीं उठता।

---

†मूल अंग्रेजी में

वैज्ञानिकों का पुगवश सम्मेलन

†२६८. **श्री श्रीनारायण दास** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने किसी भी प्रकार उन वैज्ञानिकों की कार्यवाही में रुचि ली है जिनका पुगवश सम्मेलन हाल में लन्दन में हुआ था और जिसमें नि:शस्त्रीकरण तथा विश्व शान्ति की समस्याओं पर विचार विमर्श हुआ था ;

(ख) यदि हां, तो अब तक भारत ने किस प्रकार की और किस ढंग से रुचि प्रदर्शित की है; और

(ग) क्या आगामी सम्मेलन भारत में होगा ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : (क) और (ख). विज्ञान तथा विश्वकार्यों सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों का नाम पुगवश कान्फ्रेंस है और वे गैर-सरकारी कान्फ्रेंसें हैं। इनमें विभिन्न देशों के प्रसिद्ध वैज्ञानिक अपने व्यक्तिगत रूप में भाग लेते हैं। इनका उद्भव वर्ष १९५४ में प्रधान मंत्री के एक सुझाव से हुआ जिसमें कहा गया था कि मानव जाति पर युद्ध का क्या प्रभाव होगा इसकी व्याख्या करने के लिए वैज्ञानिकों की एक समिति बनाई जाये। ग्रेट ब्रिटेन में आण्विक वैज्ञानिक संघ और अमरीका में अमरीकी वैज्ञानिक फीड्रेशन ने इस पर आगे विचार किया। तत्पश्चात् अन्य वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श हुआ जिनमें रूसी वैज्ञानिक भी सम्मिलित थे।

दसवां सम्मेलन लन्दन में ३ से ७ सितम्बर, १९६२ तक हुआ और प्रो० महालेनोविस ने व्यक्तिगत रूप में इसमें भाग लिया। कान्फ्रेंस की कार्यवाही का लेखा अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

भारत सरकार का इन गैर-सरकारी कान्फ्रेंसों से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है, तथापि वह पुगवश आन्दोलन का समर्थन करती है। उसे विश्वास है कि नि:शस्त्रीकरण और शान्ति के मामले में वैज्ञानिक बड़ी सहायता कर सकते हैं। वे प्रगतिशील राष्ट्रों को आधुनिक बनने और वैज्ञानिक प्रगति के लाभ प्राप्त करने में भी सहायता कर सकते हैं। दसवें सम्मेलन के आयोजकों के प्रार्थना करने पर प्रधान मंत्री ने सम्मेलन की सफलता के लिये शुभकामनाएं भेजी थीं।

दसवें सम्मेलन के अतिरिक्त, आस्ट्रिया में हुई तीसरी कान्फ्रेंस में डा० एच० जे० भाभा, डा० के० एस० कृष्णन् और प्रो० पी० सी० महालेनोविस ने भाग लिया। पांचवीं कान्फ्रेंस अगस्त, १९५९ में पुगवश, कनाडा में हुई थी जिसमें डा० एम० एल० आहोजा ने भाग लिया। नवीं कान्फ्रेंस कैम्ब्रज में अगस्त, १९६२ में हुई और उसमें डा० विक्रम साराभाई ने भाग लिया।

(ग) एक सुझाव दिया गया है कि आगामी कान्फ्रेंस भारत में हो। अभी इस बारे में कोई अन्तिम निश्चय नहीं हुआ है।

---

†मूल अंग्रेजी में

तारापुर में अणुशक्ति केन्द्र

†२६९. श्री सुरेन्द्र पाल सिंह :
श्री ईश्वर रेड्डी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री विभूति मिश्र :
श्री हरिश्चन्द्र माथुर :
श्री नम्बियार :
डा० लक्ष्मीमल सिंधवी :
श्री का० ना० तिवारी :
श्री मोहसिन :
श्री यशपाल सिंह :
श्री सं० ब० पाटिल :
श्री कपूर सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री श्याम लाल सर्राफ :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री मुरारका :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार को बम्बई के पास तारापुर में अपना पहिला अणुश केन्द्र खोलने के लिए विदेशी वित्तीय तथा टेक्निकल सहयोग की व्यवस्था करने में कुछ कठिना रही है ; और

(ख) यदि हां, तो वे कठिनाइयां क्या हैं और उन्हें दूर करने के लिए क्या कार्यवाही क रही है ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहर नेहरू)** : (क) नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

लन्दन में गांधी स्मारक

२७०. श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :
श्री वासुदेवन नायर :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि जब वे राष्ट्र मंडलीय प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में भाग लेने ल गए थे तो वहां उन्हें गांधी स्मारक के लिए एक भूमिखण्ड भेंट किया गया था ;

(ख) इस गांधी स्मारक को बनाने की क्या कोई योजना तैयार कर ली गई है ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) यदि हां, तो उसका विवरण क्या है और कब तक उस योजना को कार्यान्वित किया जा सकेगा ; और

(घ) इस योजना को कार्यान्वित करने पर कितना धन व्यय होगा ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : (क) और (ख). लन्दन में बरो काउंसिल आफ सेंट पैंक्रियाज ने महात्मा गांधी की मूर्ति की स्थापना के लिए जमीन दी है । इस मूर्ति के लिए आर्डर दे दिया गया है और जब वह तैयार हो जायगी, तब इस जमीन पर स्थापित कर दी जायगी ।

(ग) और (घ). इस पर जो खर्चा आयेगा, उसकी कोई और ब्यौरेवार जानकारी हमारे पास नहीं है । लोगों से चन्दा लेकर यह खर्च किया जा रहा है । इस काम के लिए एक समिति बना दी गई है ।

जम्मू तथा काश्मीर सीमा पर पाकिस्तानियों का छापा

†२७१. **श्री प्र० चं० बरुआ :**
श्री भक्त दर्शन :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि इस वर्ष सितम्बर मास के प्रथम द्वितीय सप्ताह में जम्मू के पास छम्ब सीमा पर पाकिस्तानी सेना पुनः सक्रिय हो गई है ;

(ख) यदि हां, तो इस कार्यवाही में गोली चलाने तथा प्रति-उत्तर में गोली चलाने की घटनायें हुई ; और

(ग) प्रत्येक ओर इन घटनाओं में कितने व्यक्ति मरे या घायल हुए ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) :** (क) हां, श्रीमान ।

(ख) सितम्बर, १९६२ के पहले-दूसरे सप्ताह में तीन घटनायें हुईं, अर्थात् एक ६ सितम्बर और दो १० सितम्बर को हमारी सीमा पुलिस को १० सितम्बर, १९६२ को आत्म रक्षा के लिए दो बार गोली चलानी पड़ी ।

(ग) एक भारतीय घायल हुआ ।

बागान मजदूर

†२७२. **श्री प्र० चं० बरुआ :** क्या **श्रम और रोजगार मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सम्पदा कर्मचारी संघ का वार्षिक सम्मेलन सितम्बर के दूसरे सप्ताह में कोयम्टूर में हुआ था ;

(ख) यदि हां, तो बागान मजदूर की स्थितियों में सुधार करने के लिए कान्फ्रेंस में क्या मुख्य मांगें रखी गई थीं ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) इन मांगों पर केन्द्रीय सरकार और सम्बन्धित राज्य सरकारों ने क्या निश्चय/कार्यवाही की है ?

†श्रम और रोजगार मंत्रालय में श्रम मंत्री (श्री हाथी) : (क) हां, ९-९-१९६२ को ।

(ख) और (ग). उपलब्ध जानकारी सम्बद्ध विवरण में दी है । [देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ३०]

भारतीय प्रधान मंत्री तथा पाकिस्तान के प्रेसीडेन्ट के बीच विचार विमर्श

†२७३. श्री श्रीनारायण दास :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री हेम बरुआ :
श्री विभूति मिश्र :
श्री द्वा० ना० तिवारी :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या प्रधान मंत्री और पाकिस्तान के प्रेसीडेन्ट अय्यूब के बीच हाल में, जब कि वे लन्दन में मिले थे, पारस्परिक हितों के बारे में कोई परामर्श हुआ था ; और

(ख) यदि हां, तो किन विषयों पर बातचीत हुई थी ?

†प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : (क) और (ख). इस वर्ष सितम्बर में लन्दन में राष्ट्रमंडल के प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था। उस समय प्रेसीडेन्ट अयूब खां और प्रधान मंत्री के बीच भारत-पाकिस्तान सम्बन्धी मामलों पर कोई बातचीत नहीं हुई थी। फिर भी, आकस्मिक तथा बहुत ही संक्षेप में प्रेसीडेन्ट ने पाकिस्तान से अवैध आप्रवासियों के वापस भेजने में भारत द्वारा की गई कार्यवाही का उल्लेख किया था। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी बंगाल में नदी-जल के प्रयोग की समस्याओं पर विचार करने के लिए मंत्रियों की बैठक के होने के औचित्य का भी उल्लेख किया था। प्रधान मंत्री ने उन्हें संक्षेप में इन दोनों मामलों के बारे में बताया था। दो अवसरों पर सारी बातचीत में पांच मिनट से अधिक नहीं लगे ।

कोझीकोड रेडियो स्टेशन

†२७४. श्री अ० क० गोपालन :
श्री कुन्हन :

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार के पास कोझीकोड रेडियो स्टेशन को केवल 'रिले स्टेशन' बनाने का कोई प्रस्ताव है ; और

(ख) यदि हां, तो इस प्रस्ताव पर क्या निश्चय किया गया है ?

†सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाम नाथ) : (क) नहीं, श्रीमान ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

---

†मूल अंग्रेजी में

विमान परिवहन उद्योग के लिये भविष्य निधि

†२७६. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **श्रम और रोजगार** मंत्री ६ अगस्त, १९६२ के तारांकिश प्रश्न संख्या ३३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विमान परिवहन उद्योग पर कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम, १९५२ न लागू करने के क्या कारण हैं ; और

(ख) क्या विमान परिवहन उद्योग के कर्मचारियों को स्वास्थ्य बीमा उपदान या बोनस योजनाओं का लाभ मिलता है ?

†**श्रम और रोजगार मंत्रालय में श्रम मंत्री (श्री हाथी)** : (क) अभ्यावेदन किया है कि विमान परिवहन उद्योग के अधिकतर मजदूरों को पहिले से ही कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम, १९५२ में उपबन्धित लाभों से उत्तम सेवा निवृत्ति लाभ मिल रहे हैं।

(ख) जानकारी एकत्रित की जा रही है ।

हिन्दी फिल्मों को प्रमाण-पत्र देना

२७७. **श्री भक्त दर्शन** :
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **सूचना और प्रसारण** मंत्री ३० अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या २०३३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि हिन्दी फिल्मों को अंग्रेजी के बदले हिन्दी में प्रमाण-पत्र देने के जिस सुझाव पर विचार किया जा रहा था, उस के बारे में क्या निश्चय किया गया है ?

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाम नाथ) : यह विषय अभी विचाराधीन है ।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण

†२७८. **श्री रा० शि० पाण्डेय** :
श्री मुरारका :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण ने योजना आयोग के लिये क्या जानकारी एकत्रित की है ;

(ख) क्या इस जानकारी की जांच व सुनिश्चय करने की कोई व्यवस्था है ; और

(ग) समय पर जानकारी प्रकाशित करने के लिये क्या कार्यवाही की गई है ?

†**वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन)** : (क) राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण ने विशेष रूप से योजना आयोग के लिये कोई जानकारी एकत्रित नहीं की । इस ने अपने सामान्य वार्षिक क्षेत्रीय कार्य में विभिन्न सामाजिक आर्थिक, कृषि तथा औद्योगिक विषयों पर जो जानकारी एकत्रित की है, उस का योजना आयोग ने यथा आवश्यकता प्रयोग किया है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण निदेशालय के जांच पड़ताल तथा निरीक्षण कर्मचारियों द्वारा देख भाल की निर्मित व्यवस्था तथा भारतीय सांख्यकीय संस्था द्वारा, जोकि सर्वेक्षणों सम्बन्धी तालिका, निर्माण तथा अन्य टेक्निकल कार्य करता है, तालिका बनने से पहिले जांच पड़ताल को छोड़ कर, स्वयं सर्वेक्षणों के डिजाइन में सामंजस्य के आन्तरिक परीक्षण की व्यवस्था है। यह सामंजस्य विभिन्न छोटे नमूनों तथा प्रत्येक राउण्ड में सम्मिलित सब-राउण्डों के आंकड़ों की तुलना के आधार पर होगा। फिर भी, जानकारी एक बार प्रकाशित होने पर फिर कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है जो उन की जांच या सुनिश्चय करे।

(ग) व्यावहारिक रूप में, १४वें राउण्ड (१९५८-५९) तक एकत्रित हुई सभी अनिवार्य जानकारी पहिले ही तालिका का रूप दे कर प्रकाशित की जा चुकी है। १५वें तथा १६वें राउण्ड की जानकारी अधिकतर तालिका बनाई जाने की अवस्था में है। भारतीय सांख्यकीय संस्था से निरन्तर कहा जा रहा है कि वह जानकारी को यथाशीघ्र उपलब्ध बनाने की दृष्टि से तालिका-कार्य में जल्दी करे।

सरकारी उपक्रम

†२७९. श्री मुरारका :
श्री रवीन्द्र वर्मा :

क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) तीसरी पंचवर्षीय योजना काल में सरकारी उपक्रमों के अतिरेक से कुल कितनी राशि प्राप्त होने की आशा है ;

(ख) तीसरी योजना के प्रथम वर्ष में वस्तुतः कितनी राशि प्राप्त हुई है और दूसरे वर्ष में कितनी प्राप्त होने की आशा है ;

(ग) क्या योजना के लक्ष्यों में कोई कमी होने की आशा है ; और

(घ) यदि हां, तो इसे दूर करने के लिये क्या प्रयास किया गया है ?

†**श्रम और रोजगार मंत्रालय में उपमंत्री तथा योजना उपमंत्री (श्री च० रा० पट्टाभिरामन)** : (क) तीसरी योजना काल में रेलवे को छोड़ कर सरकारी उपक्रमों के अतिरेक का ४५० करोड़ रु० होने का अनुमान लगाया गया था। ब्यौरा निम्न है :—

		(करोड़ रु०)
१.	केन्द्र —	
	१. इस्पात कारखाने . . .	१११
	२. उर्वरक कारखाने . .	३३
	३. डाक तथा तार	२८
	४. अन्य उपक्रम . . .	१२८
	योग . . .	३००

†मूल अंग्रेजी में

२. राज्य		(करोड़ रु०)
	१. विद्युत् बोर्ड .	११०
	२. सड़क परिवहन उपक्रम . . .	२०
	३. औद्योगिक उपक्रम तथा अन्य विभागीय योजनायें .	२०
	योग . .	१५०
३. केन्द्र तथा राज्य (१+२) .		४५०

(ख) वर्ष १९६१-६२ के लिये राज्यों के नियंत्रण में सरकारी उपक्रमों का अतिरेक २१.८ करोड़ रु० होने का संशोधित प्राक्कलन है। केन्द्र के नियंत्रण में सरकारी उपक्रमों का वास्तविक अंशदान का पता वर्ष के लेखापरीक्षित वित्तीय लेखा की व्यवस्था होने पर लगेगा। इस का अध्ययन किया जा रहा है।

वर्ष १९६२-६३ के लिये योजना के वित्तीय साधनों के प्राक्कलन में राज्यों के उपक्रमों के २७.८ करोड़ रु० और केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों के ३० करोड़ रु० दिखाये गये हैं।

(ग) तीसरी पंचवर्षीय योजना की समूची अवधि के लिये सरकारी उपक्रमों के संभावी अतिरेक का संशोधित प्राक्कलन बनाना कम से कम पहिले दो वर्षों के वास्तविक आंकड़े मिलने पर ही संभव हो सकेगा।

(घ) सरकारी उपक्रमों के संचालन सम्बन्धी परिणाम में सुधार करने और उन से आशातीत अतिरेक प्राप्त करने का कार्य सम्बन्धित सरकारी उपक्रमों तथा प्रशासक मंत्रालय का निरन्तर कार्य है।

राष्ट्रमण्डल के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन का व्यय

†२८०. **श्री गो० महन्ती** : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन का व्यय ब्रिटिश सरकार उठाती है ; और

(ख) यदि नहीं, तो भारत सरकार कितना व्यय उठाती है ?

† **प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : (क) और (ख). इस रूप में सम्मेलन का समूचा व्यय जिस में प्रतिनिधियों का आवास भी शामिल है, ब्रिटेन सरकार उठाती है। जाने वाले प्रधान मंत्री तथा उनके कर्मचारी सरकारी अतिथि समझे जाते थे। फिर भी, भारत से लन्दन तक और वापसी पर हमारे प्रतिनिधिमण्डल की विमान यात्रा तथा आकस्मिक व्यय भारत सरकार उठाती है।

†मूल अंग्रेजी में

विदेशों में भारतीय मिशन

†२८१. { **श्री विद्या चरण शुक्ल :**
श्री रा० शि० पाण्डेय :
श्री मुरारका :
श्री रवीन्द्र वर्मा :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि १९५६-५९ के वर्षों में विदेशों में एक भारतीय मिशन में स्थानीय रूप से रखे गये दो मेसेंजरों ने डाक टिकट खरीदने के लिये दी गई कुल अग्रिम राशि में से ६०,००० रु० से अधिक का गबन किया ;

(ख) यदि हां, तो यह घटना कहां हुई ; और

(ग) क्या इन मेसेंजरों के कार्य की देखभाल में उपेक्षा का उत्तरदायित्व निर्धारित किया गया है ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : (क) से (ग). हां, श्रीमान । बोन में भारतीय राजदूतालय में स्थानीय रूप से रखे गये दो मेसेंजरों ने तीन वर्ष से अधिक समय में ६०,००० रु० से अधिक राशि का गबन किया । पहिली बार इस का पता उस समय लगा जबकि डाक टिकट खर्च की प्रविष्टियों में परिवर्तन किये जाने का पता लगा । सम्बन्धित दोनों मेसेंजर सेवा से निकाल दिये गये और उन पर वहां के ही एक न्यायालय में दण्डनीय अपराध का अभियोग चलाया गया । उपरोक्त व्यक्तियों से अब तक लगभग ११०० रु० प्राप्त हो चुके हैं । अग्रेतर कार्यवाही विचाराधीन है ।

काम बन्दी

†२८२. { **श्री वारियर :**
श्री प्र० चं० बरुआ :

क्या **श्रम और रोजगार** मंत्री २७ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १७६७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दिसम्बर १९६१ से मार्च, १९६२ तक की अवधि में केन्द्रीय क्षेत्र में काम बन्दी की व्यवस्था पूरी हो गई है ; और

(ख) यदि हां, तो इस का क्या परिणाम रहा ?

†**श्रम और रोजगार मंत्रालय में श्रम मंत्री (श्री हाथी)** : (क) हां ।

(ख) केन्द्रीय कार्यान्विति तथा मूल्यांकन डिविज़न को कुल ४१ काम बन्दी (सभी हड़तालों) की सूचना दी गई । इन में से ३९ मामलों में संघों ने पूर्वसूचना दिये बिना ही और विवाद को निपटाने के लिये विद्यमान व्यवस्था का उपयोग किये बिना हड़ताल की । बाकी दो मामलों में जिन में सूचना दी गई थी, वहां संघों ने सीधी कार्यवाही करने से पहिले विद्यमान व्यवस्था का पूर्ण उपयोग नहीं किया । ४१ में से ७ मामलों में प्रबन्ध भी उत्तरदायी है । इन सभी मामलों में सभी सम्बन्धित व्यक्तियों पर अनुशासन संहिता के उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया ।

---

†मूल अंग्रेजी में

न्यूनतम मजूरी अधिनियम

†२८३. श्री यु० द० सिंह :
श्री पें० वेंकटासुब्बया :

क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का विचार अनुसूचित रोजगार में ऊंची मजूरी की सुरक्षा के लिये न्यनतम मजूरी अधिनियम में संशोधन करने का है क्योंकि अनुसूचित रोजगार में मजूरी की न्यूनतम निर्धारित दर कम हैं और संशोधन करने का दूसरा कारण यह है कि जो कर्मचारी विधान के अन्तर्गत अपनी दर लागू करना चाहते हैं उन्हें शिकार होने से बचाया जाये ; और

(क) यह संशोधित अधिनियम किस-किस उद्योग पर लाग होगा ?

†श्रम और रोजगार मंत्रालय में श्रम मंत्री (श्री हाथी) : (क) और (ख) प्रस्ताव विचाराधीन हैं ।

राज्य मंत्रियों का सम्मेलन

†२८४. श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री यशपाल सिंह :
महाराज कुमार विजय आनन्द :
श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सूचना और प्रसारण के राज्य मंत्रियों का सम्मेलन २५ अक्टूबर, १९६२ को हुआ था ;

(ख) यदि हां, तो सम्मेलन में किस-किस विषय पर विचार विमर्श हुआ था ; और

(ग) सम्मेलन ने क्या निश्चय किये हैं और उन का क्या ब्यौरा है ?

†सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाम नाथ) : (क) हां, श्रीमान ।

(ख) और (ग). सम्मेलन ने वर्तमान संकट तथा राष्ट्रीय एकता तथा पंचवर्षीय योजना सम्बन्धी प्रचार प्रयास में केन्द्र तथा राज्यों के प्रचार संगठन के बीच गहरा समन्वय सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक कार्यवाही से उत्पन्न होने वाली प्रचार समस्याओं पर विचार किया । कोई औपचारिक निश्चय नहीं किया गया है ।

प्रलेखीय चलचित्र

†२८५. श्री बिशनचन्द्र सेठ : क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने प्रलेखीय चलचित्रों के उत्पादन में वृद्धि करने का फैसला किया है ;

(ख) यदि हां, तो उस के क्या कारण हैं ;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) इस समय प्रति वर्ष कितने चलचित्र तैयार किये जाते हैं ; और

(घ) इस में कितनी वृद्धि की जावेगी ?

†**सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाम नाथ)** : (क) जी, हां।

(ख) विभिन्न मंत्रालयों आदि की बढ़ती हुई प्रचार आवश्यकताओं को पूरा करने और राज्य सरकारों की ओर से उन की प्रार्थना पर चलचित्रों की कुछ संख्या का उत्पादन करने के लियें।

(ग) लगभग ९८।

(घ) वर्ष १९६२-६३ के लिये लक्ष्य १२० चलचित्र है।

पाकिस्तानी राष्ट्रजनों द्वारा ढोरों का उठाकर ले लाया जाना

†२८६. **श्री स्वैल** : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि २७ सितम्बर, १९६२ को बड़ी संख्या में पाकिस्तानी राष्ट्रजन खासी जन्तिया पहाड़ी जिले में भारतीय प्रदेश में घुस आय और भारतीय राष्ट्रजनों की ४९ गायें उठा कर ले गये ; और

(ख) यदि हां, तो गायों को उन के स्वामियों को दिलाने अथवा उन के लिये क्षतिपूर्ति दिलाने के लिये सरकार ने क्या कदम उठाय हैं ?

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा और अणु-शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : (क) और (ख). २७ सितम्बर, १९६२ को पीरडीवा गांव के कुछ भारतीय राष्ट्रजन अपने ढोरों को पानी पिलाने के लिये पियान नदी पर ले गये थे। सुपलानघाट, जिला युनिाइटिड के० एण्ड० जे० हिल्स के निकट भार तीय प्रदेश में कुछ पाकिस्तानी राष्ट्रजन डाओस, लाठियां और छुरे से लैस घुस आये और जबरदस्ती ४९ ढोर अपने साथ हांक ले गये।

भूमि नियम करार के अन्तर्गत सेक्टर कमान्डर और जिला अफसर के स्तर पर पाकिस्तानी अधिकारियों से विरोध प्रकट किया गया है। आसाम सरकार ने भी पूर्वी पाकिस्तान की सरकार से विरोध प्रकट किया है जिस ने भारतीय सीमान्त चौकी के कमान्डर के जरिये चुराये गये ढोरों को उन के मालिकों को वापस करने की मांग की है।

फिल्म संस्थायें

†२८७. **श्री हेमराज** : क्या **सूचना और प्रसारण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष १९६२-६३ में पूना में कितने विद्यार्थियों ने भारत की फिल्म संस्था में दाखिला लिया है ; और

(ख) अभी तक कितने कर्मचारी रखे गये हैं और इस पर वार्षिक कितना व्यय किया गया है ?

†**सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाम नाथ)** : (क) ३८।

(ख) १२६. कर्मचारियों पर वार्षिक व्यय निम्न प्रकार है :

१९६०–६१ . . .	६३,००० रुपये
१९६१–६२	२,२७,३०० रुपये
१९६२–६३ (६ महीनों के लिये—१-४-६२ से ३०-९-६२ तक)	१,४०,२०० रुपये।

†मूल अंग्रेजी में

संघों को मान्यता प्रदान करना

†२८८. श्री बूटा सिंह :
श्री गुलशन :

क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बाताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि आचार संहिता के अनुसार किसी संघ का, जिस की मान्यता किसी अवैध कार्य के लिये समाप्त कर दी गई हो, पुनः मान्यता श्रम मंत्रालय द्वारा इस की सदस्यता का सत्यापन किये जाने के बाद मिल सकेगी ;

(ख) यदि हां, तो क्या डाक तथा तार, असैनिक उड्डयन, प्रतिरक्षा, रेलवे और केन्द्रीय लोक-कर्म विभाग में वर्ष १९६० में मान्यता रद्द किये गये और सितम्बर, १९६१ में पुनः मान्यता प्रदान किये गये संघों के बारे में ऐसा कोई सत्यापन किया गया है ; और

(ग) यदि नहीं, तो संघों को किस आधार पर पुनः मान्यता प्रदान की गयी ?

†श्रम और रोजगार मंत्रालय में श्रम मंत्री (श्री हाथी) : (क) आचार संहिता का उल्लंघन करने के लिये मान्यता रद्द हुआ संघ एक वर्ष बाद अथवा कुछ परिस्थितियों में दो वर्ष बाद पुनः मान्यता के लिये दावा कर सकता है यदि इस अवधि में इस को संहिता के नये उल्लंघन के लिये अपराधी न समझा गया हो और उन की सदस्यता भी काफी हो । कुछ मामलों में सदस्यता का सत्यापन आवश्यक भी नहीं है ।

(ख) यह प्रश्न उत्पन्न नहीं होता क्योंकि जिन संघों का उल्लेख किया गया है उन की आचार संहिता के अन्तर्गत मान्यता रद्द नहीं की गई है ।

(ग) सरकार इस निर्णय के अनुसरण में कि 'उन संघों की मान्यता, जो उन के जुलाई, १९६२ की केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल में भाग लेने के कारण रद्द की गयी थी, उस रद्द किये जाने के समय लागू शर्तों पर प्रदान की जानी चाहिये ।'

प्रतिरक्षा मंत्रालय के सेवा संवरण बोर्डों में असैनिक मनोवैज्ञानिक

†२८९. श्री दी० चं० शर्मा : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि द्वितीय वेतन आयोग ने प्रतिरक्षा मंत्रालय द्वारा चलाये गये सेवा संवरण बोर्डों में असैनिक मनोवैज्ञानिकों के पद को ऊंचा उठा कर प्रथम श्रेणी का बनाने की सिफारिश की है ; और

(ख) यदि हां, तो इस सिफारिश पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया) : (क) जी, नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

---

†मूल अंग्रेजी में

नौसैनिक हवाई अड्डा

†२९०. { **श्री अ० क० गोपालन :**
श्री प० कुन्हन :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या नौसैनिक हवाई अड्डा बनाने के लिये स्थान के बारे में कोई निर्णय किया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो उस का क्या ब्यौरा है ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) नौसेना के विमान आवश्यकता यूनिट की स्थापना के लिये केवल कुछ अन्तरिम व्यवस्था की गयी है ।

(ख) ब्यौरा बताना लोक हित में नहीं है ।

राइफलों का निर्माण

†२९१. **श्री कर्णी सिंहजी** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सच है कि आयुध कारखानों का देश में राइफल क्लबों के लिये .२२ टारगेट राइफल और .३१५ एमएम बिग बोर टारगेट राइफल बनाने का प्रस्ताव है ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : सेवाओं के लिये आयुध कारखानों में बनाई गई .२२ राइफलों का टारगेट राइफलों के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है । आयुध कारखानों में .३१५ एमएम बिग बोर टारगट राइफलों के निर्माण का कोई प्रस्ताव नहीं है ।

कारतूसों का निर्माण

†२९२. **श्री कर्णी सिंहजी** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या असैनिक शूटिंग के लिये क्रमशः २$^{1}/_{4}$″ लम्बाई ३$^{1}/_{4}$ डी० आर०—१$^{1}/_{4}$ औंस–७$^{1}/_{2}$ और ३ डी० आर–१$^{1}/_{8}$ औंस ७$^{1}/_{2}$ अथवा ८, १२ गज ट्रप और स्कीट कारतूस बनाने का प्रस्ताव है ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रघुरामैया)** : २$^{3}/_{4}$″ लम्बाई के १२ गेज ट्रैप और स्कीट कारतूसों का विकास किया जाता रहा है परन्तु उत्पादन वर्तमान संकट समाप्त होने के बाद ही किया जा सकता है ।

सैनिक प्रशिक्षण स्कूल

†२९३. { **श्री श्याम लाल सर्राफ**
श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय मिलिटरी कालिज, किंडरगार्डन, स्कूलों और सैनिक स्कूलों में प्रशिक्षण का क्या तरीका है ;

(ख) इन संस्थाओं में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम किस हद तक समान है ; और

(ग) क्या सरकार इन स्कलों में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को एकीकृत करेगी ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया) : (क) एक विवरण संलग्न है। [देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ३१]

(ख) ये सब रेज़िडेन्शल संस्थायें हैं और पब्लिक स्कूल के तरीके पर उच्च स्तर की शिक्षा देती हैं। क्योंकि इन सभी संस्थाओं में बालकों को वैसी ही सामयिक शिक्षा, अर्थात् यूनिवर्सिटी आफ कम्ब्रिज लोकल एग्ज़ामिनेशन सिन्डीकेट द्वारा आयोजित भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा के लिये तैयार किया जाता है, प्रशिक्षण का शैक्षणिक भाग लगभग समान है। प्रशिक्षण का गैर-शैक्षणिक भाग, इन संस्थाओं के उद्देश्यों से सम्बद्ध होते हुए, थोड़ा सा एक संस्था से दूसरी में भिन्न है।

(ग) जी, नहीं।

भारतीय वायु सेना के कैनबरा विमान का टूट कर गिर जाना

†२९४. श्री बिशनचन्द्र सेठ : क्या प्रधान मंत्री कैनबरा विमान के टूट कर गिर जाने के बारे में १३ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या २६७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार द्वारा आदेश दिये गये जांच-न्यायालय का प्रतिवेदन प्राप्त हो गया है ;

(ख) यदि हां, तो उस का क्या ब्योरा है ; और

(ग) जांच समिति द्वारा जिम्मेवार पाये गये व्यक्तियों के विरुद्ध सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया) : (क) जी, हां।

(ख) और (ग). बादल वाले मौसम में पहाड़ी के ऊपर उड़ते समय जमीन से टकराने के कारण दुर्घटना हुई। जांच-न्यायालय का विस्तृत प्रतिवेदन अभी एयर हैडक्वार्टर्स और सरकार के विचाराधीन है और जैसा बताया जायेगा उचित उपचारात्मक कार्यवाही की जायेगी।

भूतपूर्व सैनिक

†२९५. श्रीमती रेणु चक्रवर्ती : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या ५०७ आर्मी बेस वर्कशाप, कांकीनाडा के पेन्शनयाफ्ता और गैर-पेन्शनयाफ्ता भूतपूर्व सैनिकों के वेतन के बारे में कोई अन्तिम निर्णय कर लिया गया है ; और

(ख) क्या यह मामला वर्ष १९५९ से लम्बित है ?

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया): (क) सम्बन्धित ९७ मामलों में से २४ में वेतन निर्धारित कर दिया गया है।

(ख) जी, नहीं। प्रतिरक्षा सेवाओं में असैनिक (पुनरीक्षित वेतन) नियम, १९६०, जिनमें द्वितीय वेतन आयोग की सिफारिश के आधार पर विभिन्न पदों के लिये पुनरीक्षित वेतन दर लागू करने की व्यवस्था है, सितम्बर, १९६० में जारी किये गये थे परन्तु उस समय वे पुनर्नियोजित सरकारी कर्मचारियों पर लागू नहीं होते थे। पुनर्नियोजित पैन्शनयाफ्ता और गैर-पेन्शनयाफ्ता व्यक्तियों के वेतन-निर्धारित को पुनरीक्षित वेतन स्तर में नियमित करने के लिये अन्तिम सरकारी आदेश दिसम्बर, १९६१ में जारी किये गये। उसके बाद ही पृथक-पृथक व्यक्तियों के वेतन-निर्धारण का काम आरम्भ किया जा सका।

---

†मूल अंग्रेजी में

भारतीय नौ सेना

†२९६. **श्री यशपाल सिंह** : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष १९६०—६२ के दौरान प्रशिक्षण में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के लिये भारतीय नौसेना ने कितनी प्रगति की है ; और

(ख) इस अवधि में नौसेना में प्रशिक्षण के लिये कितने भारतीयों को विदेश भेजा गया ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय म राज्य मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) कुछ विशेष पाठ्यक्रमों, जिनके लिये यहां सुविधायें नहीं हैं, के अतिरिक्त, नौसैनिकों का सारा प्रशिक्षण भारत में किया जा रहा है । वर्ष १९६०—६२ में निम्नलिखित पाठ्यक्रम आरम्भ किये गये हैं :

(१) मैरीन इंजीनियरिंग कोर्स ;

(२) इलैक्ट्रिकल स्पेशलाइज़ेशन कोर्स ;

(३) एडवान्स्ड साइन्टीफिक कोर्सिस फोर नेवल आफिसर्स ;

(४) एयरक्राफ्ट मिकेनिशियन्स और आरटीफिसर कनवर्जन कोर्सिस फ़ॉर सेलर्स ;

(ख) ९२ ।

आगरा में प्रतिरक्षा कर्मचारियों के लिये क्वार्टर

†२९७. **श्री स० मो० बनर्जी** : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि छावनी बोर्ड, आगरा द्वारा वर्ष १९६२ में आगरा छावनी में शक्ति नगर में निम्न आय वर्ग प्रतिरक्षा असैनिक कर्मचारियों के लिये लगभग १०८ क्वार्टर बनाये ;

(ख) यदि हां, तो क्या किराया बिना बिजली के ४६ रुपये प्रति मास है ;

(ग) यदि हां, तो क्या अधिक किराये के कारण कर्मचारी इन क्वार्टरों में रहने में असमर्थ हैं ;

(घ) यदि हां, तो यह किराया किस आधार पर निर्धारित किया गया है ; और

(ङ) उचित किराया निर्धारित करने के लिये सरकार क्या कदम उठायेगी ?

†**प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया)** : (क) जी, हां ।

(ख) [illegible] किराये में क्रमशः २ रुपये और १ रुपया प्रतिमास की दर से जल संभरण और निगरानी शुल्क शामिल हैं ।

(ग) और (घ). जी, नहीं । इन क्वार्टरों का निर्माण हाल ही में पूरा हुआ है और आवंटन केवल १ नवम्बर, १९६२ से आरम्भ हुआ है । किराया उचित है और 'न हानि न लाभ' आधार पर निर्धारित किया गया है ।

(ङ) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

---

†मूल अंग्रेजी में

पंजाब में सैनिक स्कूल

†२९८. श्री हेमराज : क्या प्रधान मंत्री ३ सितम्बर, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या २१९३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पंजाब में एक तीसरा सैनिक स्कूल खोलने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या इसका ब्योरा तैयार कर लिया गया है ; और

(ग) यह कहां पर स्थापित होगा और पंजाब सरकार ने किस स्थान की सिफारिश की है ?

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री रघुरामैया) : (क) से (ग) प्रस्ताव अभी पंजाब सरकार के विचाराधीन है ।

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना

दिल्ली में पटाखा विस्फोट

श्री बागड़ी (हिसार) अध्यक्ष महोदय, मैं नियम १९७ के अन्तर्गत गृह-कार्य मंत्री का ध्यान निम्न अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर आकृष्ट करता हूं और चहता हूं कि वह इस सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दें :—

"८ नवम्बर सन् १९६२ को दिल्ली के लाजपतराय मार्केट में हुआ पटाखा विस्फोट जिसके कि फलस्वरूप कुछ लोगों को चोटें आईं ।"

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : ८ नवम्बर १९६२ को करीब २—०५ बजे दोपहर को लाजपतराय मार्केट के सामने सुभाष मार्ग पर एक बम फटा । चार आदमियों को मामूली खरोचें और चोटें आईं । उन्हें पुलिस डिस्पेंसरी में ले जाकर प्राथमिक चिकित्सा सहायता दी गई । पुलिस बम फटने के तुरन्त बाद ही मौके पर पहुंच गयी और उसने पूछताछ के लिए आठ आदमियों को हिरासत में ले लिया । यह शक है कि बम चलती हुई सवारी से फेंका गया था । यह मामूली किस्म का बम था और इसके अवशेष इंस्पैक्टर ऑफ एक्सप्लोजिव्स को परीक्षण के लिए भेज दिये गये हैं । विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा ६ के अधीन मामला दर्ज कर लिया गया है और तहकीकात की जा रही है ।

श्री बागड़ी : क्या गृह-कार्य मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि बार-बार विस्फोट होते हैं और इनक्वायरी होने के बाद भी कुछ उन का पता नहीं लगता है और यह आम चर्चा जो सारी दिल्ली में हो गयी है कि पुलिस के अंदर दो पार्टियां हैं, पुलिस की एक पार्टी का बम विस्फोटक करवाने में हाथ है तो क्या गृह मंत्री जी इस की इनक्वायरी की तरफ भी ध्यान दे रहे हैं कि पुलिस का भी इन में हाथ है या नहीं और क्या सरकार के नोटिस में यह भी आया है कि पुलिस की वह पार्टी जिसका कि इन विस्फोटों के पीछे हाथ है उस का नेतृत्व डी० आई० जी० दिल्ली करते हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री दातार : इस चीज से मैं इंकार करता हूं कि पुलिस की दो पार्टियां हैं और एक पार्टी यह कर रही है। यह आरोप जो हमारे मित्र ने पुलिस पर किये हैं मिथ्या हैं। यह जो बम विस्फोट हुए हैं उसके लिए सरकार खास तौर से जांच कर रही है।

श्री यशपाल सिंह : क्या सरकार यह बतला सकेगी कि अब तक जितने बम विस्फोट हुए हैं उनमें से क्या वह किसी एक भी बम विस्फोट का पता लगा सकी है। जब इतने विस्फोट अंट्रेसेबुल रह चुके हैं तो पुलिस विभाग के जो इन्चार्ज अधिकारी हैं उनको आज तक अलग क्यों नहीं किया गया और उनको रिप्लेस क्यों नहीं किया गया ?

†**श्री दातार** : मैं सरकार को बताना चाहता हूं कि लगभग २७ मामलों में सरकार अपराधियों का पता लगाने में सफल रही है। तथा २० को सजा दी गयी है। तथा कुछ मामले न्यायालय के सम्मुख हैं।

श्री राम सेवक यादव : यह जो बम विस्फोटों की जांच करने के लिए बाहर से पुलिस बुलाई जाने की बात थी, वह बुलाई गई है या नहीं, यदि नहीं बुलाई गई है तो क्यों नहीं बुलाई गई और यदि बुलाई गई है तो बतलाया जाय कि जांच का क्या परिणाम हुआ ?

श्री दातार : दिल्ली पुलिस और बाहर की पुलिस सब मिल कर इसकी जांच कर रहे हैं।

श्री मोहनस्वरूप : मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस मामले की तहक़ीकात और ज्यादा की जा रही है और मुलजिमों को ट्रेस करने की क्या कोई खास कोशिश की जा रही है ?

श्री दातार : हमने इसके लिए स्पेशल सुपरिनटेंडेंट ऑफ पुलिस की नियुक्ति की है और इनके बारे में खास तौर से जांच हो रही है।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद): मैं आपसे यह अनुरोध करना चाहता हूं कि जब तक सभा का सत्र चल रहा है तब तक प्रश्न काल के पश्चात् प्रधान मंत्री को प्रतिदिन वक्तव्य देना चाहिये जैसा कि युद्ध काल में ब्रिटेन में प्रधान मंत्री के द्वारा किया जाता था।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्य ने इस पर प्रधान मंत्री का ध्यान आकर्षित किया है। अब प्रधान मंत्री भी इस बात पर विचार कर के अपना निर्णय करेंगे।

सभा पटल पर रखे गये पत्र

संसद के पदाधिकारी (यात्रा और दैनिक भत्ते) नियम

†**संसद्-कार्य मंत्री (श्री सत्य नारायण सिंह)** : मैं संसद् के पदाधिकारियों के वेतन और भत्ते अधिनियम, १९५३ की धारा ११ की उपधारा (२) के अन्तर्गत दिनांक १५ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १२०९ में प्रकाशित संसद् के पदाधिकारियों के (यात्रा और दैनिक भत्ते) संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

[पुस्तकालय में रखी गयी, देखिये संख्या एल० टी० ५०९/६२]

सरकारी भूगृहादि (अवैध रूप से कब्जा करने वालों का निष्कासन) नियम

†**निर्माण, आवास और संभरण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री पू० शे० नास्कर)** : मैं सरकारी भूगृहादि (अवैध रूप से कब्जा करने वालों का निष्कासन) अधिनियम, १९५८ की धारा १३ की उप-धारा

†मूल अंग्रेजी में

(३) के अन्तर्गत दिनांक ३ नवम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १४५३ में प्रकाशित सरकारी भूगृहादि (अवैध रूप से कब्जा करने वालों का निष्कासन) संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

[पुस्तकालय में रखी गयी, देखिये संख्या एल० टी० ५१०/६२)

कहवा (पांचवां संशोधन) विधेयक

†प्रतिरक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चावन) : मैं श्री मनुभाई शाह की ओर से निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं:

(एक) कहवा अधिनियम, १९४२ की धारा ४८ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक २९ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १२७१ में प्रकाशित कहवा (पांचवां संशोधन) नियम, १९६२।

[पुस्तकालय में रखी गयी देखिये संख्या एल० टी० ५११/६२]

(दो) नारियल-जटा उद्योग अधिनियम, १९५३ की धारा १९ के अन्तर्गत वर्ष १९६१–६२ के लिये उक्त एक्ट के कार्य-संचालन और नारियल-जटा बोर्ड की गतिविधियों के बारे में वार्षिक प्रतिवेदन।

[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० ५१२/६२]

कोयला खान और श्रमिक कल्याण निधि इत्यादि का प्रतिवेदन

†श्रम और रोजगार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जयसुखलाल हाथी) : मैं निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

(एक) १५ सितम्बर, १९६२ को नई दिल्ली में हुए सीमेंट सम्बन्धी औद्योगिक समिति के चौथे अधिवेशन के मुख्य निष्कर्षों का विवरण।

(दो) १७ अक्तूबर, १९६२ को नई दिल्ली में हुए स्थायी श्रम समिति के बारहवें अधिवेशन के मुख्य निष्कर्षों का विवरण।

(तीन) वर्ष १९६१–६२ के लिये कोयला खान श्रमिक कल्याण निधि की गतिविधियों के बारे में प्रतिवेदन।

[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० ५१३/६२, एल० टी० ५१४/६२ तथा एल० टी० ५१५/६२]

विस्थापित व्यक्ति (समवाय और पुनर्वास) संशोधन नियम

श्री पू० शे० नास्कर : मैं विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम, १९५४ की धारा ४० की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ११६६ में प्रकाशित विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) छठा संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० ५१६/६२]

---

†मूल अंग्रेजी में

गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों सम्बन्धी समिति

नवां प्रतिवेदन

†**श्री कृष्ण मूर्ति राव** (शिमोगा) : मैं गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों सम्बन्धी समिति का नवां प्रतिवेदन प्रस्थापित करता हूं।

प्राक्कलन समिति

तीसरा और चौथा प्रतिवेदन

†**श्री दासप्पा** (बंगलौर) : मैं प्राक्कलन समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदन उपस्थापित करता हूं :

(एक) परिवहन तथा संचार मंत्रालय (संचार तथा असैनिक उड्डयन विभाग)—समुद्र-पार संचार सेवा—के बारे में प्राक्कलन समिति (दूसरी लोक-सभा) की—एक-सौ चौदहवें प्रतिवेदन में दर्ज सिफारिशों के बारे में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही के सम्बन्ध में तीसरा प्रतिवेदन ।

(दो) स्वास्थ्य मंत्रालय—लोक स्वास्थ्य (भाग १) के बारे में प्राक्कलन समिति (दूसरी लोक-सभा) की सैंतीसवें प्रतिवेदन में दर्ज सिफारिशों के बारे में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही के सम्बन्ध में चौथा प्रतिवेदन ।

धातु के टोकन (संशोधन) विधेयक

†**वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० रा० भगत)** : मैं श्री मोरारजी देसाई की ओर से प्रस्ताव करता हूं :

"कि धातु के टोकन अधिनियम, १८८९ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये।"

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है :

"कि धातु के टोकन अधिनियम १८८९ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

†**श्री ब० रा० भगत** : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं।

---

†मूल अंग्रेजी में

पेट्रोलियम पाइपलाईन (भूमि के प्रयोगता के अधिकार का आर्डर) विधेयक

†**खान और इंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हाजरनवीस)** : मैं श्री के० दे० मालवीय की ओर से प्रस्ताव करता हूं :

"कि पैट्रोलियम पाइप लाइन बिछाने के लिये भमि के प्रयोग के अधिकार के अर्जन तथा तत्सम्बन्धी विषयों की व्यवस्था करने वाले विधेयक को पुर: स्थापित करने की अनुमति दी जाये ।"

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है :

"कि पैट्रोलियम पाइप लाइन बिछाने के लिये भूमि के प्रयोग के अधिकार के अर्जन तथा तत्सम्बन्धी विषयों की व्यवस्था करने वाले विधेयक को पुर:स्थापित करने की अनुमति दी जाये ।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ

†**श्री हजरनवीस** : मैं विधेयक को पुर:स्थापित करता हूं ।

आपात की उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प—जारी

†**अध्यक्ष महोदय** : सभा अब ८ नवम्बर को प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत आपात की उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प तथा तत्सम्बन्धी स्थानापन्न प्रस्तावों तथा संशोधनों पर विचार करेगी । सभा-कार्य मंत्री ने मुझे यह सूचित किया है कि इस चर्चा के लिये एक दिन और बढ़ा दिया गया है । इस चर्चा में कल ७$^{1}/_{2}$ बजे तक ३४ सदस्य भाग ले चुके थे आज मेरे पास ७६ सदस्यों की सूची है । मेरे विचार से सभी सदस्यों को समय दे सकना सम्भव नहीं होगा । अत: सदस्यों को चाहिये कि वे इस सम्बन्ध में संयम से काम लेवें ।

सीमांत क्षेत्रों के कुछ सदस्यों ने कहा है कि उन्हें अवश्य समय मिलना चाहिये । मैं उन्हें समय देने को तैयार हूं तथापि किसी भी सदस्य को ७ मिनट अधिक से अधिक १० मिनट से ज्यादा समय नहीं लेना चाहिये ।

हम आज भी आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक देर तक बैठने को तैयार हैं ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : मेरा सुझाव यह है कि सभा को इस अवसर पर सारी रात बैठना चाहिये जिससे आपात की भावना प्रगट हो सके ।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैंने सभा के सामने यह सुझाव रखा था किन्तु सभा ने इसे पसन्द नहीं किया ।

†**श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी** (केन्द्रपाड़ा) : पिछले तीन दिनों से सभा में इस सम्बन्ध में चर्चा हो रही है । हमारे सामने इस समय एक ही समस्या है कि चीनियों के किस तरह बाहर खदेड़ा जाये । मुझे विश्वास है कि भले ही हमें कितनी ही मुसीबतों का सामना करना पड़े हम इस सम्बन्ध में कभा झक नहीं सकते हैं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी]

इस अवसर में मतभेदों को स्पष्ट नहीं करना चाहता हूं। हम प्रधान मंत्री के संकल्प के दूसरे अंश से पूरी तरह सहमत हैं। प्रधान मंत्री ने २० अक्तूबर को देश के नाम जो संदेश दिया था और जिसमें उन्होंने देश की रक्षा करने के लिये आह्वान किया था। प्रजा समाजवादी पार्टी ने सरकार को आक्रमक को बाहर निकाल फेंकने के लिये अपनी पूर्ण सहायता देने का वचन दिया। इस सम्बन्ध में हम जनता की दृढ़ प्रतिज्ञा में पूरे दिल से शामिल होते हैं।

संसद् के सत्रावसान के पूर्व हमें जनता को यह बता देना चाहिये कि सरकार ने, जनता के आक्रमकों से अपने इलाके को खाली करवाने के संकल्प को क्रियान्वित करने के लिये हमने क्या क्या कदम उठाये हैं। यह भी बताया जाना चाहिये कि हम अपनी सशस्त्र सेनाओं को कब तक पूर्णतः आटोमेटिक हथियारों से लैस कर सकेंगे क्योंकि इस समय हमें सबसे अधिक आवश्यकता हथियारों की है।

हमें उन देशों का आभार प्रगट करना चाहिये जिन्होंने संकट काल में शस्त्रास्त्रों से हमारी सहायता की है। इनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा मुख्य हैं। परन्तु हमें यह भी जानना चाहिये कि संयुक्त राज्य अमेरिका से अभी तक जो शस्त्रास्त्र प्राप्त हुए हैं क्या वे हमारी जरूरतों के लिये काफी हैं।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद् (नैशनल डिफेंस कौंसिल) के स्थान पर हमें चाहिये था कि हम वार कोंसिल युद्ध परिषद् आयोजित करते। इस परिषद् में प्रधान मंत्री, प्रतिरक्षा मंत्री, सेना, नौ सेना और वायु सेना के प्रधान और अनुभवी जनरल रहते जो प्रतिरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं पर विचार तथा स्थिति का निर्धारण करके निर्णय करते। असैनिक प्रशासन का भी पुनर्गठन किया जाना चाहिये। राज्यों तथा केन्द्र के वर्तमान मंत्रिमंडलों का आकार कम किया जाना चाहिये।

आक्रामकों को देश के बाहर खदेड़ने के सम्बन्ध में प्रतिरक्षा सेनाओं को कार्यवाही करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिये। हमें अपना राज्य क्षेत्र बातचीत द्वारा नहीं वरन् ठोस कार्यवाही करके वापस लेना चाहिये। भारत चीन पर अधिक समय तक विश्वास नहीं कर सकता है।

प्रधान मंत्री ने श्री मेनन का इस्तीफा मंजूर कर अच्छा कार्य किया है। हमारी पराजयों के सम्बन्ध में जो जांच समिति बैठने वाली है वह तत्काल बैठे जिससे कि इन पराजयों का दायित्व स्थिर किया जा सके।

चीन ने हमारे साथ भयंकर रूप से दगाबाजी की है। उसने हमारे साथ विश्वासघात किया है तब हम किस आधार पर यह आशा कर सकते हैं कि उनके साथ बातें करना लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

प्रधान मंत्री ने चीन के आक्रमण को हिटलर की तरह आक्रमण कहा है, यह बात सही है अतः हमें हिटलर की धूर्त चालों से भी सावधान रहना चाहिये और अपनी जनता को नैतिक पतन से बचाना चाहिये।

सभी देशों में कुछ तत्व ऐसे होते हैं जो जनता में गलतफहमी उत्पन्न करते हैं। अतः सरकार को यह बात निश्चित करनी चाहिये कि क्या वर्तमान परिस्थितियों में साम्यवादियों पर विश्वास किया जा सकता है।

†श्री त्यागी (देहरादून): इस विषय की गम्भीरता तथा समय के अभाव को देखते हुए मैं इस विषय पर बहुत संयम के साथ बोलूंगा। मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि हमारे देश में कोई तैयारी नहीं थी। चीन ने हमें बातचीत की आड़ में धोखे में रखा और इस बीच तैयारी करता रहा। इस प्रकार भारत को उसकी धूर्तता का शिकार होना पड़ा।

इस बात को देखते हुए भारत की जनता बातचीत के विरुद्ध है। प्रधान मंत्री की भले ही कुछ भी राय हो तथापि जनता का आदर किया जाना चाहिये।

देश को इस अतिक्रमण से बहुत ठेस पहुंची है। आज समस्त जनता एकमत होकर शत्रु का सामना करने के लिये कटिबद्ध है। दुःख यह है कि आज भी सरकार में शत्रु का सामना करने के लिये जिस तत्परता की आवश्यकता होनी चाहिये उसका अभाव है।

अब मैं सिद्धान्तों के सम्बन्ध में कहूंगा। हमें अपने उसूलों पर दृढ़ रहना चाहिए। तटस्थता की नीति अब तक सफल रही है। इसे हमें नहीं छोड़ना चाहिए। दूसरी असूल की बात जिसे नहीं छोड़ना है वह है समाज का समाजवादी ढांचा। यह हमारा ध्येय है। परन्तु हमें अपनी तटस्थता की नीति के सम्बन्ध में धार्मिक कट्टरता नहीं बरतनी चाहिए। हमें समय एवं संकट आदि के अनुसार कार्य करना चाहिए। दूसरे विश्वयुद्ध के समय कुछ शक्तिशाली देशों ने विभिन्न क्षेत्रों से सैनिक सहायता ली थी। हमें अपनी तटस्थता कायम रखते हुए भी हर प्रकार की सहायता स्वीकार करनी चाहिए।

हम संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन जैसे मित्र देशों को सहायता देने के लिए आभारी हैं। वे देश इसलिए भारत की सहायता के लिए आगे आये क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया कि यह विचारधाराओं का संघर्ष है जिस से भारत की स्वतन्त्रता को खतरा हो सकता है।

हमें अपने मित्रों और दुश्मनों को पहचानना चाहिए। यह बड़े आश्चर्य की बात है आस्ट्रेलिया जो कि कामनवेल्थ का सदस्य है चीन को अन्न और गेहूं दे रहा है। बारसा पैक्ट के देश चुप हैं। हमें अपनी तटस्थता कायम रखते हुए भी यह पहचानना चाहिए कि हमारा मित्र कौन है और शत्रु कौन है।

संदिग्ध व्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरती जानी चाहिये। दार्जिलिंग जिले में ध्वंसात्मक कार्रवाइयां देखने में आई हैं। ऐसे क्षेत्रों में आपातकालीन कानून भली प्रकार प्रख्यापित किए जाने चाहियें।

सीमांत क्षेत्रों में जनता को "राईफल ट्रेनिंग" दी जानी चाहिये। उनको राईफलें भी दी जानी चाहिएं ताकि लोगों में आत्मविश्वास हो। वे देश के लिए लड़ने के लिए तैयार हो जाएं।

यदि यह युद्ध चलता रहे तो चीनी हमारे उद्योगों को समाप्त करने की कोशिश करेंगे। हमें वायुसेना के सम्बन्ध में बिल्कुल जागरूक रहना चाहिए। आशाओं पर भारत के भाग्य को नहीं छोड़ा जा सकता। हमें अपनी सशस्त्र सेनाओं, विशेषकर विमान बल को मजबूत बनाना चाहिए। इस काम के लिए बड़े पैमाने पर सहायता लेनी चाहिए।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री त्यागी]

चीन भारत के विरुद्ध बड़ा गलत प्रचार कर रहा है। चीनी प्रचार का प्रतिवाद करने के लिए पूर्ण कदम उठाए जाने चाहिएं।

सरकार को चाहिए कि सब अनावश्यक व्यय कम कर देना चाहिए। आशा है कि पार्लिमेंट भी इस बात के लिए मेरा समर्थन करेगी।

†श्री मुरारका (झुंझनू) : इस समय हम सब ने मिल कर चीनियों का मुकाबला करना है। इस बात पर अधिक समय नहीं लगाया जाना चाहिए कि चीन ने यह आक्रमण क्यों किया।

यह लक्ष्य अच्छा है कि प्रतिरक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर रहना चाहिए। परन्तु इस समय संसार में शायद ही कोई ऐसा देश हो जो अपने संसाधनों पर निर्भर रहते हुए आधुनिक युद्ध लड़ सके। ऐसी स्थिति में भारत को अपने मित्र देशों से शस्त्रास्त्र लेने में हिचक नहीं चाहिए। देश की तटस्थता की नीति भी तभी कायम रह सकती है यदि हम शक्तिशाली हों।

वर्तमान संकट में हमारे प्रति रूस का रवैया ठीक नहीं रहा है। रूस ने केवल बातचीत पर ही बल दिया है। उन्होंने मैकमाहोन रेखा को भी नहीं माना है। उन के ऐसे रवैये से भारत के लोग उनकी सच्चाई के संबंध में संदेह करने लगे हैं। इसके विपरीत संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन से हमें सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ है तथा उन्होंने हमारी तटस्थता की नीति का अनुमोदन भी किया है।

मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। पहले, सरकार को जनता से सोना उधार लेना चाहिए। इस सोने को १५ या २० वर्ष उपरान्त बिना ब्याज के वापस करे। 'डिफेंस बान्ड' विदेशों में भी बेचें जाएं जैसे कि इंगलैंड ने द्वितीय महायुद्ध में किया।

दूसरे, करारोपण तथा अनिवार्य बचतों द्वारा अतिरिक्त आय के संग्रह के लिए उपयुक्त संस्था की स्थापना की जानी चाहिए।

कारखानों में उत्पादन बढ़ाना चाहिए। उत्पादन बढ़ाने के प्रयोजन के लिए कार्य के घण्टे ८ से बढ़ाकर ९ कर देने चाहिएं।

हमारे प्रतिरक्षा उद्योगों के लिए कच्चा माल, स्पेर तथा पुर्जे [illegible] किये जाने चाहियें।

वर्तमान संकट का सामना करने के लिए तथा देश की प्रतिरक्षा करने के लिए शस्त्रास्त्र, विमान तथा उपकरण प्राप्त किये जाने चाहिएं। चूंकि वर्तमान हथियार बड़े जटिल हैं अतः बाहर से प्रशिक्षक भी आने चाहिएं जो कि उन हथियारों को चलाने के सम्बन्ध में हमारे सैनिकों को बता सकें। इस में कोई बुराई नहीं है। दूसरे यदि कुछ देर के लिए हमें सहायता लेने के लिए अपने असूल छोड़ने भी पड़ें तो इसमें भी कोई कठिनाई नहीं नी चाहिए।

---

†मूल अंग्रेजी में

अन्त में मैं कहूंगा कि हम शान्ति चाहते हैं। युद्ध हमारे ऊपर लादा गया है। यदि अब भी आदर सहित शान्ति हो सके तो हम उसका स्वागत करेंगे।

†**श्रीमती विजय राजे** (छतरा) : भारत के सीमान्त प्रदेशों की रक्षा के लिए जिन जवानों ने बलिदान दिया है उन जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

नेफा में जो दुर्घटनाएं हुई हैं वे बहुत भयंकर हैं। हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि पिछली गलतियां दोहराई न जाएं।

हमें पाकिस्तान से समझौता करने की कोशिश करनी चाहिए। नेपाल के साथ जो गलतफहमियां हैं उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। सरकार को भूटान और सिक्किम को अपनी राज्यक्षेत्रीय एकता बनाये रखने में सहायता करनी चाहिए।

पाकिस्तान और नेपाल को भी चीन के खतरे को समझना चाहिए।

केवल भारत को ही चीन का खतरा नहीं है, परन्तु विश्व में प्रजातन्त्र को खतरा है। हमें इसकी रक्षा करनी है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन ने हमारी जो सहायता की है, हम उसके आभारी हैं। जिस उदारता से उन्होंने हमारी सहायता की है उसी उदारता से उसे हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।

अपंग सैनिकों और विशेष कर उन सैनिकों के जो युद्धभूमि में मारे गए परिवारों के जीवनयापन की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडलों आदि पर व्यय कम कर देना चाहिए। मितव्ययता के लिए प्रत्येक राज्य में राज्यपाल रखने की बजाये क्षेत्रीय राज्यपाल रखे जायें।

हमें अपना लक्ष्य पूरा करने तक लगातार कोशिश करते रहना चाहिए।

†**श्री ह० प० चटर्जी** (नवद्वीप) : हमें साम्यवादी दल के सद्भाव पर सन्देह नहीं करना चाहिए।

हमने पहली गलती यह की कि हमने चीनियों को तिब्बत हड़प करने दिया। हमें तिब्बत को राष्ट्रसंघ में स्थान दिलाना चाहिए था जैसा कि हमने नेपाल के मामले में किया था।

इस घोर संकट में जब कि चीन आगे बढ़ रहा है हमें सरकार का पूरा समर्थन करना चाहिये। इस समय कोई विवादास्पद बातें नहीं कहनी चाहिएं।

हमें जहां से भी सहायता मिले ले लेनी चाहिए। इस समय हमारे सामने एक ही लक्ष्य है कि देश से चीन को निकाला जाए।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**डा० मेलकोटे** (हैदराबाद) : मैं श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत संकल्प का पूर्ण-रूप से समर्थन करता हूं। सबसे प्रथम मैं उन जवानों के परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं जो कि आक्रांता चीन से लड़ते हुए रणक्षेत्र में शहीद हो गये। और जो लोग आज रणक्षेत्र में वीरता से लड़ रहे हैं, उन्हें मुबारकबाद देता हूं। यही हैं वे वीर पुरुष जो आज अपने खून से भारत का इतिहास लिख रहे हैं। हमारे लिए ये लोग प्रत्येक प्रकार से अभिनन्दन योग्य है।

हमारे राष्ट्र की जनता ने भी जिस प्रकार धन और रक्त का बलिदान करने की भावना व्यक्त की है वह भी सराहनीय है। इसके साथ ही हमें अपने प्रधान मंत्री जी की सराहना करनी है जो कि इस संकट के काल में देश का नेतृत्व कर रहे हैं। सभी दलों के लोगों ने भी जिस धीरता का परिचय दिया है, उसके लिए वे भी मुबारकबाद के योग्य हैं। सभी देश की रक्षा और गौरव के लिए काम और बलिदान करने को लालायित हैं। मैं इस संदर्भ में यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि हमें अपने जवानों के परिवारों और सम्पत्ति का पूरा ध्यान रखना है।

सरकार की नीति के सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि आलोचना करनी बहुत सरल होती है। परन्तु यदि हम गम्भीरता से सोचें तो मालूम होगा कि गत १५ वर्षों में हमने बहुत महत्वपूर्ण प्रगति की है। हमने छोटे छोटे देशों को अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने में पूरी सहायता दी है। विश्व में शांति बनाये रखने के लिए जो कार्य हमने किया है वह इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। वीर व्यक्ति की अहिंसा का पालन करना हमारी नीतियों का आधारभूत सिद्धान्त रहा है।

आज चीन ने हम पर आक्रमण किया है। मैकमहोन लाइन की बात बिल्कुल झूठी है। चीन ने सीमा लाइन के कारण हम पर आक्रमण नहीं किया। इसे यदि किसी बात से पेट दर्द हुआ है तो वह है लोकतंत्रीय आयोजन। यदि हमने चीन को अपनी सीमा से धकेल कर अपनी लोकतंत्रीय आयोजनाओं को सफल बना लिया तो कमाल हो जायेगा। भारी जनसंख्या, गरीबी, अशिक्षा, अमैत्रीपूर्ण पड़ौसी, और उत्तरी सीमा पर बर्बर साम्यवादियों के होते हुए, हमने जो कुछ भी किया वह कुछ कम नहीं है।

अन्त में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस संकटकाल में हमें साम्यवादी दल पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए। उन्होंने हमेशा देश के साथ गद्दारी की है। मैं आन्ध्र प्रदेश के मुसलमानों की ओर से आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वे अपने अन्य भारतीय बन्धुओं के साथ कदम मिलाते हुए देश की रक्षा के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने को तत्पर हैं। मेरा सरकार से अनुरोध है कि उसे देश के उठ रहे जोश का ठीक दिशा में प्रयोग करना चाहिए।

श्रीमती सुभद्रा जोशी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, यहां पर बहुत आवश्यक विषय पर हम लोग दो, तीन रोज से बात कर रहे हैं पर मुझको इस बात का बहुत खेद है कि जितनी गम्भीरता से इस पर बात होनी चाहिए थी मेरा खयाल है कि वह उतनी गम्भीरता से नहीं हुई है।

हमारे देश पर जब से विदेशियों का आक्रमण हुआ है तब से इमरजेंसी डिक्लेयर हो गयी और डिफेंस आफ इंडिया रूल्स लागू कर दिये गये। जरूरत इस बात की थी कि उन तमाम चीजों को

†मूल अंग्रेजी में

सामने रखते हुए वह और ज्यादा गम्भीरता से बातचीत करते। चूंकि समय कम है इसलिए मैं उस पर ज्यादा वक्त नहीं लगाना चाहती कि आज हमारे देश में या हम लोगों के दिल में कितना जोश-खरोश है और जिन्होंने हमारे देश पर आक्रमण किया है उन के लिए कितनी नाराजगी है। मेरा ऐसा विचार है कि तमाम देश भर में इस पर दो राय नहीं हैं कि विदेशी आक्रमणों का बड़े अच्छे तरीके से मुकाबला करना चाहिये। इसलिए उसको प्रकट करने में मैं संसद् का और समय नहीं लेना चाहती हूं।

एक बात मैं कहना चाहती हूं। जब से युद्ध की घोषणा हुई है जितने भी लोगों ने और हमारे सदस्यों ने चाहे यहां और चाहे बाहर जितनी भी बातचीत की है उस से एक चीज मुझको याद आती है। मालूम नहीं जो उपमा मैं देने चली हूं यह कहां तक मुनासिब है लेकिन वह बातचीत सुन कर मुझे तो ऐसा लगा जैसे हमारे यहां जब भोजन किया जाता है तो सब से पहले जब भोजन आता है तो उसको प्रणाम किया जाता है और जितना समय खाने में लगता है उसके बाद एक दफा फिर प्रणाम करते हैं कि भगवान ने उनको भोजन दिया। शुरू करते वक्त भी प्रणाम और आखिरी वक्त भी प्रणाम। बीच का जो समय होता है उसको खाने में लगाते हैं भोजन चबाने में लगाते हैं। ठीक यही बात भाषणों के सम्बन्ध में हुई है। हमारे यहां बहुत सारे भाषण जो हमने सुने उनमें भाषण जब शुरू किया जाता है तो हर सदस्य ने कहा कि हम प्रधान मंत्री के हाथ मजबूत करना चाहते हैं और जब भाषण खत्म हुआ तो आखिर में भी कहा कि हम प्रधान मंत्री के हाथ मजबूत करना चाहते हैं। लेकिन बहुत सारे सदस्यों ने जो बीच बीच में टीका टिप्पणी की उससे कुछ ऐसा मालूम हुआ कि जो कुछ वह कहते थे उससे प्रधान मंत्री के हाथ मजबूत नहीं होते हैं। कम से कम मेरा ऐसा विचार है।

मैं, अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा माननीय सदस्यों से कहना चाहती हूं कि यहां कुछ सदस्यों ने पर्सनालिटी कल्ट की भी चर्चा की। कुछ व्यक्तिगत बातें कीं। उन्होंने यह भी कहा कि अगर एक नेता नहीं रहता है तो कुछ पर्वाह नहीं हमारे देश में सैकड़ों नेता पैदा हो जाते हैं। यह तमाम बातें कीं। मेरा उन मित्रों से कहना है कि यह कोई हाथ मजबूत करने वाली बातें नहीं हैं। मैं उनसे सफाई से कहना चाहती हूं कि आज हमारे देश का एक एक बच्चा जो विदेशी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए खड़ा हुआ है उसके सामने सिर्फ यही नहीं है कि विदेशियों ने देश पर आक्रमण किया बल्कि उनके दिल में आज यह भरोसा और विश्वास है कि हमारे देश का नेतृत्व आज एक बहुत सुयोग्य व्यक्ति के हाथ में है। समस्त देशवासियों का उनके महान् नेतृत्व में अगाध विश्वास है।

यहां पर भी और बाहर भी हमारी फौजों और हमारे जवानों के बारे में जो तरह तरह की बातें कही जा रही हैं, अगर मैं उनको इस सदन के सामने न रखूं, तो अनुचित होगा। यह कहा गया है कि हमारे जवानों के पास कपड़े नहीं हैं, जूते नहीं हैं, कमीजें नहीं हैं। हमारे जवानों के पास ये चीजें हैं या नहीं, इस बात का जवाब देना हुकूमत का काम है। मुझे इस बारे में कुछ मालूम नहीं है। लेकिन मुझे हैरानी और अफसोस है कि ऐसे ऐतराज उन जगहों से उठाये जा रहे हैं, जिनके बारे में मुझे शुबहा है कि गरीब आदमियों के साथ कभी भी उनकी हमदर्दी नहीं रही होगी। वे दिल्ली के मैदानों में ऐसी बातें कह कर लोगों को जोश दिलवा रहे हैं, उनको भड़का रहे हैं। मैं कहना चाहती हूं कि अगर उनका अपना इतिहास देखा जाये, तो मालूम होगा कि जवानों या गरीबों के लिए कमीजों की चिन्ता तो क्या, वे अपने स्वार्थ के लिए उनकी खाल भी उतार लें। (अन्तर्बाधा)

श्री प्रिय गुप्त (कटिहार) : वे कौन लोग हैं ? **नो एब्स्ट्रैक्ट टाकिंग।**

श्रीमती सुभद्रा जोशी : अध्यक्ष महोदय, अगर मैं कोई ग़लत बात कहूं, तो आप उसको राइट आफ कर दीजिये। मैं यह कहना चाहती हूं कि इस किस्म की बातें सुन कर दिल को चोट लगती है।

अध्यक्ष महोदय : आप खुद ही गलत बात न कहें, ताकि मुझे राइट आफ करने की जरूरत न पड़े । माननीय सदस्य कान्ट्रोवर्शल बातों में न पड़ें ।

श्रीमती सुभद्रा जोशी : इस वक्त देश के सामने बहुत बड़ी विपत्ति है । उस विपत्ति का फायदा उठा कर कुछ लोग ऐसा प्रचार कर रहे हैं, जिससे देश की रक्षा-व्यवस्था मजबूत नहीं हो सकती है । मैं अर्ज करना चाहती हूं कि जिस तरह से नुक्ता-चीनी करने वालों के दिलों में रोष, नाराजगी और जोश है, उसी तरह से मेरे दिल में भी है । इसलिए अगर मैं अपने विचार इस सदन के सामने प्रकट करती हूं, तो दूसरों को उन्हें सुनना चाहिए ।

इस विपत्ति का फायदा उठा कर हमारी योजनाओं की नुक्ता-चीनी की जाती है । यह कहा जाता है कि हमारी योजनायें ग़लत हैं, यह क्यों नहीं किया, वह क्यों नहीं किया । मैं सफ़ाई से कहना चाहती हूं कि आज जो ग़रीब से ग़रीब आदमी भी अपनी आधी या पूरी तन्ख्वाह दे रहा है, ज़ेवर दे रहा है, औरतें अपनी सुहाग की निशानियां दे रही हैं, उस की वजह क्या है । सिर्फ़ आजादी की बात नहीं है । सिर्फ़ देश पर आक्रमण की बात नहीं है । आज हिन्दुस्तान के लोगों ने आज़ादी की कीमत को महसूस कर लिया है । आज वे जानते हैं कि आज़ादी कुछ मुट्ठी भर लोगों के लिए नहीं ली गई थी । आज हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा जानता है कि आज़ादी हमारे लिए ली गई थी, हम सब लोग इस के हिस्सेदार हैं । आज़ादी इसलिए ली गई थी कि देश के बच्चे बच्चे का स्तर ऊंचा हो, इस बात का रीयलाइज़ेशन आज देश के कोने कोने में हो गया है । आज देश का बच्चा बच्चा, मजदूर, किसान, कर्मचारी और दूसरे लोग सरकार या देश या नेहरू जी के साथ इसलिए हैं कि वे पिछले दस वर्षों के दौरान कार्यान्वित की गई योजनाओं की वजह से आज़ादी की कीमत ज्यादा समझते हैं बनिस्बत उस वक्त के, जब कि वे हिन्दुस्तान की आज़ादी हासिल करने के लिए लड़ रहे थे । इसलिये मैं यह कहना चाहती हूं कि योजनाओं पर यह आक्रमण करना बहुत ग़लत बात है ।

कल माननीय सदस्य, श्री प्रकाशवीर शस्त्री, की एक बात से मुझे बहुत दुख हुआ । उन्होंने कहा कि हमको पाकिस्तान से ख़तरा है और जो छः करोड़ आदमी पाकिस्तान का रेडियो सुनते हैं, उनसे भी हुशियार रहना चाहिए । इस विपत्ति के समय आज हमको एक एक की मदद लेने की ज़रूरत है और आज देश का बच्चा बच्चा मदद करने के लिए तैयार भी है । लेकिन इस वक्त मैं उस विषय में नहीं जाना चाहती, क्योंकि उनके और दूसरे कई साथियों के विचार हमेशा से ऐसे रहे हैं । मैं सिर्फ़ यह कहना चाहती हूं कि आज इस मुसीबत के वक्त, जब कि देश दुश्मनों का भुकाबला कर रहा है, हमारी सीमा पर जो फौजें लड़ रही हैं, जो जवान लड़ रहे हैं, उनमें हिन्दू भी हैं, मुसलमान भी हैं, सिख भी हैं और ईसाई भी हैं, ब्राह्मण भी हैं और हरिजन भी हैं । तमाम लोग देश की रक्षा के लिए वहां पर जिन्दगी और मौत की लड़ाई में पड़े हुए हैं । वे लोग वहां पर सिर्फ हिन्दुओं की रक्षा करने नहीं गए हैं, या सिर्फ़ मुसलमानों या सिखों या ईसाइयों की रक्षा करने नहीं गए हैं । वे लोग वहां पर मातृभूमि की चप्पा-चप्पा भूमि की रक्षा करने के लिए जान देने के वास्ते गए हैं ।

इसलिए अगर आज यहां पर ऐसे लोगों की बातों से ऐसा वातावरण पैदा हो कि हमारे वे जवान, जो कि अपने घर और बीवी-बच्चों को छोड़ कर सीमा पर हमारे देश के लिए लड़ रहे हैं, यह महसूस करने लगें कि हमारे घर के लोग सही-सलामत नहीं हैं और हमारे बीवी-बच्चों और मां-बाप पर शुबहा किया जा रहा है, तो वे हमारे लिए कहां तक लड़ेंगे । यह बात हमारे देश की रक्षा के लिए अच्छी नहीं है । मैं आपके ज़रिये उन लोगों से बा-अदब अर्ज करना चाहती हूं कि चूंकि उनके अपने कहने के मुताबिक हमारे देश पर आक्रमण से बड़ा ख़तरा पैदा हो गया है और उसका मुकाबला करने के लिए

सबको मिल कर पूरी तैयारी करनी चाहिए, इसलिए उनको इस बारे में ज्यादा ख़याल रखना चाहिए और ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिएं ।

जहां तक पीकिंग रेडियो का ताल्लुक है, वह तो दुश्मनों का रेडियो है । उससे तो कुछ उम्मीद करना फिजूल है, क्योंकि वह तो हम लोगों को परेशानी में डालने के लिए मौके का पूरा फ़ायदा उठायेगा । लेकिन हमारे यहां भी ऐसी बातें कही जाती हैं—संसद के सदस्य वे बातें कहते हैं, राजनीतिज्ञ कहते हैं—और उनके बारे में हम सब को केयरफुल होना चाहिए, क्योंकि अगर हम ग़ैर-ज़िम्मेदारी से और बग़ैर सोचे-समझे ऐसी बातें करेंगे, तो दुश्मन, चाहे वे पीकिंग में हों या किसी दूसरे मुल्क में, उसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकते हैं ।

यहां पर मैं कम्यूनिस्ट पार्टी को मुबारकबाद देना चाहती हूं कि उसने बुद्धिमत्ता से काम लिया । अफ़सोस यह है कि यह बुद्धिमत्ता साल भर पहले क्यों नहीं आई । उनको उसी वक्त सही पोज़ीशन अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए थी । लेकिन अगर आज उन्होंने समझ लिया है, तो आज भी उनको मुबारक हो । जिन लोगों की कार्यवाहियों और बातों से देश के हितों को नुकसान पहुंचता है, अगर सरकार उन पर कड़ी निगरानी रखे, तो उनको ऐतराज़ नहीं करना चाहिए । जैसाकि माननीय सदस्य, श्री त्यागी, ने कहा है, ऐसी टेंडेंसीज़, ऐसे वक्तव्यों, ऐसे अखबारों और ऐसे भाषण देने वालों—चाहे वे किसी भी जमाअत के हों—के ख़िलाफ़ भी इसी सख्ती से कार्यवाही की जाये, जो कि हुकूमत की ताकत को कमजोर करते हैं, उस को छोटा दिखाते हैं, जिससे सीमा पर लड़ने वाले हमारे जवानों को यह विश्वास होता है कि हमारी हुकूमत कमजोर है, या हमारे पास खाना, सामान या हथियार नहीं हैं, क्योंकि मैं समझती हूं कि इस किस्म की कार्यवाहियां, वक्तव्य और भाषण हमारी रक्षा-व्यवस्था को कमजोर करते हैं ।

†**श्री मानवेन्द्र शाह** (टिहरी गढ़वाल) : मैं केवल असैनिक प्रतिरक्षा के सम्बन्ध में ही अपने विचार प्रस्तुत करूंगा । हमें हिमालय की तराई के क्षेत्रों की ओर अधिक ध्यान देना होगा । एक तो इसलिए कि अब सर्दी शुरू होने को है और दूसरा यह कि यहां नेफा से आबादी अधिक है । तीसरे यह कि कुछ भी फेरबदल हो उन्हें सारे पहाड़ी क्षेत्रों में लागू किया जाय ।

[**उपाध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए]

लदाख स्काउट्स की तरह का मिलिशिया बनाया जाना चाहिए । राज्य दलों का निर्माण किया जाना चाहिए । युद्ध के शरणार्थियों की व्यवस्था का भी हमें प्रबन्ध करना होगा । लोगों को खतरनाक क्षेत्रों में रहने के लिए जाने से भी रोका जाना चाहिए । गढ़वाल में रहने वाले बहुत से लोग भूतपूर्व सैनिक हैं । इस प्रकार के बोंडों का प्रन्बध माननीय वित्त मंत्री महोदय द्वारा किया जाना चाहिए ताकि यदि उन्हें अपना घर छोड़ना पड़े तो उन्हें बांड कैस करवा कर जीवन यापन के लिए धन मिल सके । परिवहन सुविधाओं की व्यवस्था भी की जानी चाहिए ।

श्री चांडक (छिंदवाड़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, इस सदन में आज चार दिन से प्रधान मंत्री जी द्वारा रखे गये दो प्रस्ताओं पर चर्चा हो रही है । यह बात मानी हुई है कि चीनियों ने जिन के साथ हमने काफी मित्रता रखी और जिन के प्रति हमने बहुत अधिक ईमानदारी दिखाई, जिन के साथ हमने अच्छ सम्बन्ध रखने की पूरी पूरी कोशिश की, लेकिन हमारे मित्रता के हाथ को उन्होने झटकारा और भारत पर अन्यायपूर्ण फौजी आक्रमण किया । यह आक्रमण न केवल भारत पर ही आक्रमण किया बल्कि समस्त सभ्य और प्रजातांत्रिक राष्ट्रों को और विश्व शांति को भी खतरा पहुंचाने की चेष्टा की है । यह एक महान संकट हमारे सामने आ खड़ा हुआ है और इसका हमें मुकाबिला करना है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री चांडक]

इसके बावजूद भी हमने यह निश्चय किया है और हमारी यह पालिसी रही है और है कि हम नान-एलाइंड रहें, हम किसी भी ग्रुप में शामिल न हों। भारत ने पंचशील का संदेश दुनिया को दिया है, भारत ने विश्व शान्ति का झंडा फहराने में अग्रदूत का काम किया है, संसार को शांति का संदेश दिया है। हम किसी पर आक्रमण करना नहीं चाहते। हमने तो इस प्रस्ताव के जरिये अपना यह पक्का निश्चय, हिन्दुस्तान की समस्त जनता का पक्का निश्चय, व्यक्त किया है और कहा है कि हम एक एक इंच जमीन भी अपनी चीनियों के कब्जे में नहीं रहने देंगे और उनको खदेड़ कर ही चैन लेंगे। आज इस मुल्क में एक नया ही वातावरण देखने को मिल रहा है। अभी हमारी बहन सुभद्रा जोशी जी ने कहा कि भारत के लोग, भारत की जनता अपनी स्वाधीनता के मूल्यों को समझ गई है। यह ठीक बात है। बरसों तक अपनी कुर्बानी दे कर, बरसों तक अपना बलिदान दे कर हमने यह आजादी हासिल की है और अपनी प्रगति के महान् काम में हम आज लगे हुये हैं। जो आजादी हमने हासिल की है वह थोड़े से लोगों के लिये नहीं की है, बल्कि सारी जनता के लिये की है। यही कारण है कि जन मानस आजादी के मूल्यों को समझ गया है। आज हिन्दुस्तान का बच्चा, बच्चा, हमारे प्रधान मंत्री जी की आवाज पर, उनके कहने पर सब कुछ बलिदान करने के लिये तैयार है। आज वह चीनियों के खिलाफ लड़ाई करने के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिये तत्पर है, आत्मसमर्पण करने के लिये तैयार है। भारत का हृदय आज जाग उठा है। आज जो वातावरण है, वह स्वयं-स्फूर्ति है, मुल्क के अन्दर जो जागृति पैदा हुई है, चेतना पैदा हुई है, जो हमलावर को अपनी धरती से हटा देने की आवाज उठी है, उसका अधिक से अधिक उपयोग, ज्यादा से ज्यादा जपयोग होना चाहिये और अपनी भूमि को जितनी जल्दी हो सके, दुश्मन के चंगुल से बचाना और उसको वापिस लेना है, उस धरती से चीनियों को खदेड़ बाहर करना है। इस प्रस्ताव में यह निश्चय व्यक्त किया गया है और उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूं। इसकी जितनी सराहना की जाये थोड़ी है।

आज इसके लिये जो तैयारियां हो रही हैं, उनकी मैं तारीफ किये बिना नहीं रह सकता हूं। मैं उन मित्रों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस आपत्ति के समय हमें शस्त्रों से मदद की है और दे रहे हैं। वे हमें काफी युद्ध का सामान भेज रहे हैं। और भी जो लोग हमारी मदद कर रहे हैं, उनके प्रति भी मैं आभार मानता हूं और इसके लिये उनको धन्यवाद देता हूं। हमारे सैनिकों ने बड़ी बहादुरी के साथ, बड़ी हिम्मत के साथ कम संख्या में होते हुये भी, चीनियों का जो मुकाबिला किया है। उन्होंने अपने आपको देश की खातिर बलिदान किया है, मुल्क की आजादी की रक्षा की है, इस तरह से जो सैनिक वीर गति को प्राप्त हुये हैं, उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

आज जो नव चैतन्य वातावरण पैदा हुआ है, मैं देखता हूं कि इसी तरह का वातावरण सन् १९२० में पैदा हुआ था जब गांधी जी ने आजादी की आवाज लगाई थी और मुल्क को एक झंडे के नीचे एकत्र किया था। जब उन्होंने यह संदेश दिया था और तब जो राष्ट्रीय एकता की स्थिति पैदा हो गई थी, जो चैतन्यमय वातावरण पैदा हो गया था, मेरे ख्याल से वही स्थिति और वही वातावरण आज भी हमारे यहां पैदा हो गया है। आज की स्थिति में हमारे मुल्क की एक ही आवाज होनी चाहिये। एक नेता, एक आवाज, एक नारा और एक झंडा, तिरंगा झंडा होना चाहिये जिस के नीचे हम ने आजादी की लड़ाई को लड़ा था। मैं यह कहूंगा कि आज वही वातावरण, वही स्फूर्ति हम में पैदा हुई है। मुझे विश्वास है कि आज समूचे राष्ट्र का विश्वास हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू में है, जो कि हमारी पिछली आजादी की जंग के भी सेनापति रहे हैं और सौभाग्य से आज भी हमारा सेनापतित्व करते हैं। आज मुल्क जाग्रत हो उठा है और हमने निश्चय कर लिया है कि किसी भी हालत में हम चीनियों को अपने मुल्क की एक इंच भूमि पर भी नहीं रहने देंगे।

यहां तीन चार दिनों से बहुत सी बातें हुईं, और उनमें से कई प्रकार की बातें, भले ही वह डाइरेक्ट हों या इनडाइरेक्ट हों, हमारी नान-अलाइनमेंट की नीति के ऊपर भी कही गई हैं। मैं तो यह कहता हूं कि हमारी नान-अलाइनमेंट की नीति हमारे स्वतन्त्र भारत के लिये और जो मुल्क अपनी तरक्की करना चाहता है और संसार को शांति का सन्देश देना चाहता है, उसके लिये सर्वश्रेष्ठ नीति रही है। पहले थी, आज है और आगे भी रहेगी, ऐसा मरा विश्वास है। उसी नान-अलाइनमेंट की नीति के कारण आज संसार में हमें अधिक से अधिक सहानुभूति मिल रही है और हमारे देश का मस्तिष्क ऊंचा हुआ है। मैं तो यह चाहूंगा कि आज इस आपत्ति को देख कर ही हम अपनी नीति को न बदलें। हम ने दो संकल्प किये है। एक तो यह कि हमारी वैदेशिक नीति नान अलाइनमेंट की रहेगी और दूसरे सोशलिस्ट समाज की रचना का। हमारी यह दोनों नीतियां साथ साथ रहें और चलें। उन में किसी प्रकार का अन्तर नहीं होना चाहिये। हां, एक बात जरूर है जिस को मैं थोड़ा अनुभव करता हूं कि जो हमारे मित्र राष्ट्र अमरीका, इंगलैंड, कनाडा वगैरह आज स्वयं आ कर अपनी इच्छा से, स्वयम् की स्फूर्ति से हमें हथियार तथा युद्ध सामग्री वगैरह सप्लाई कर रहे है, जो शस्त्र वगैरह दे रहे हैं, चाहे वे किस्त पर दें या और किसी तरह से दें, उस में हमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। यह बात जरूर है कि वह बिना शर्त के हो। जब वे कहते हैं कि उस में कोई ऐसी बात नहीं है कि वह किसी कारण से दे रहे हों, तो मैं समझता हूं कि उस को स्वीकार करने में अपत्ति नहीं होनी चाहिये, उस को स्वीकार करना चाहिये।

अन्य दूसरी बातें भी यहां कही गई हैं। मैं तो यह समझता हूं कि आज के इस मौके पर मैं इस बात को कह सकता हूं कि हम सब अपने को सैनिक समझें। जैसा पंडित जी ने कल कहा हमारी सारी आगे की प्लैनिंग इस आधार पर होनी चाहिये कि फार्म और फैक्टरी तथा अन्य सब जगह काम करने वाले अपने को सैनिक समझें। मैं तो कहता हूं कि हर नागरिक आज देश में अपने को सैनिक समझे, और जितनी जनता में एनर्जी है, शक्ति है, चाहे आर्थिक शक्ति हो चाहे शारीरिक शक्ति हो, चाहे बौद्धिक शक्ति हो, जिस का भी उपयोग दुश्मनों को जीतने के लिये और अपनी टेरिटरी से हटा देने के लिये हो सकता हो, उस को पूरी तरह काम में लेना है। यह सारी शक्ति मुल्क में पड़ी हुई है, लेकिन उस को चैनेलाइज किया जाय और ठीक से आर्गेनाइज किया जाय, मुझे आशा है कि हमारी सरकार इस ओर पूरा पूरा ध्यान दे रही है। इसलिये हमारी जो प्लैनिंग है वह तमाम इसी तरह से होनी चाहिये जिस को आप विक्टरी प्लैनिंग कह सकते हैं, और इस दिशा में हमारी ही सारी शक्तियां लगनी चाहियें। प्लैनिंग इस तरह की होनी चाहिये कि हर चीज का उत्पादन तथा अन्य शक्तियां जिस को वार एफर्ट कह सकते हैं, वार मैटरियल्स कह सकते है, चाहे फील्ड में हो या फैक्टरी में हो, उसकी क्रियायें जल्दी जल्दी हों। कदम बहुत तेजी से उठने चाहियें, और हमें सब प्रकार की तैयारियां करनी चाहियें। मैं नहीं समझता कि हमारी सरकार इस ओर ध्यान नहीं दे रही है। केवल यह सोचना है कि हमारे यहां टोटल मोबिलाइजेशन हो। स्थिति एसी हो, कि चाहे कला का क्षेत्र हो चाहे रेडियो हो, लेखन प्रकाशन की हर जगह से ऐसी चीज निकले जिसके जरिये मुल्क में एक उत्साहमय वातावरण पैदा हो, और अनुशासनबद्ध लड़ाई की तैयारी हो सके। हमारा पक्ष न्याय का है, सत्य का है और अन्त में हमारी विजय होगी, यह बात सही है, लेकिन हमारी जितनी बातें है वह लोगों को ठीक से मालूम हो जायें। लोगों की सारी शक्ति का उपयोग इसी ढंग से होना चाहिये। इस समय शासन के जारिये, चाहे केन्द्रीय शासन हो या राज्य शासन हो या व्यक्तिगत जीवन हो, हर एक जगह कम से कम और आवश्यक वस्तुओं का ही उपयोग हम करें। जो चीजें अत्यन्त आवश्यक हों, उन का ही उपयोग हम करें। बाकी जो खर्चे हों, जिसको फुजूलखर्ची समझा जा सकता हो, उनको खत्म करना चाहिये।

[श्री चांडकउ]

ढेबर भाई ने एक सजेशन दिया था कि हमारे दो डिपार्टमेंट ऐसे हैं, एक तो रूरल डेवेलपमेंट डिपार्टमेंट और दूसरा कम्युनिटी डेवलपमेंट डिपार्टमेंट, इन में ६,००० जीपें है। यह उन के लिये जरूरी न हों ऐसी बात नही है, लेकिन उन जीपों को आज हम उस में से निकाल कर युद्ध के काम में लगा सकते है। वैसे ही मैं यह कहना चाहता हूं कि आज हम शा न की ओर से सांस्कृतिक कार्यों आदि में करोड़ों रुपये खर्च कर रहे है। मैं नहीं कहता कि वह व्यर्थ है, लेकिन आज के जमाने में यह सब ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कि उस की आवश्यकता न हो। हर जगह के नाच तमाशे खेल आदि जो सांस्कृतिक कार्यक्रम हैं, जिन में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, उनको भी हमें बन्द करके पैसा बचाना चाहिये।

अन्त में मैं यह अपील करूंगा कि इस समय जो भी शक्ति हमारे पास मौजूद है उन सारी शक्तियों का हम को ठीक उपयोग करना है, और मुझे आशा है कि हमारा शासन ऐसा करेगा। हमारे नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में इस मुल्क के बच्चे बच्चे को जो अटूट विश्वास है उस को हम काम में लायेंगे। हमें विश्वास है कि हमारा मार्ग सत्य और न्याय का है और अन्त में भारत की विजय होगी, इस में कोई सन्देह नहीं है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक व्यक्तिगत सफाई देना चाहता हूं। मेरी अनुपस्थिति में कांग्रेस को एक जिम्मेदार मेम्बर श्रीमती सुभद्रा जोशी ने मेरे ऊपर एक आरोप लगाया था, मैं चाहता हूं आप उस को सुनें। यह आरोप यह था कि मैं ने अपने भाषण में परसों यह कहा था कि ६ करोड़ भारतीय मुसलमान कराची का रेडियो सुन कर अपना मस्तिष्क बनाते हैं। मेरे पास जो पार्लियामेंट का अधिकृत भाषण साइक्लोस्टाइल छप कर आया है, वह मैं ने हाथ में ले रखा है, उस में ६ करोड़ के शब्द हो नहीं हैं, मुसलमान का शब्द भी नहीं है, बल्कि यह शब्द हैं कि बहुत से आदमी ऐसे हैं जो पाकिस्तान का रेडियो सुन कर अपना मस्तिष्क बनाते हैं। मैं चाहता हूं कि जो शब्द माननीय सदस्य ने कहे हैं उन को निकाल दिया जाय।

उपाध्यक्ष महोदय : आप बाद में मेरा ध्यान इस की ओर दिला सकते हैं।

श्री लाखन दास (शाहजहांपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, पहले तो मैं प्रधान मंत्री के उस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिय खड़ा हुआ हूं जोकि हाउस में चल रहा है। मैं उस का हृदय से समर्थन कर रहा हूं। दूसरे जो हमारे दुश्मन चीन ने हमारी उत्तरी सीमा पर अनधिकृत अधिकार कर लिया है, उस की मैं निन्दा करता हूं।

इस के साथ मुझे कुछ सुझाव भी देने हैं,। मैं सदन का ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। गरीब जनता तो दे ही रही है, अमीर जो घिस घिस कर चन्दा दे रहे हैं उन से मैं बतलाना चाहता हूं कि जिस वक्त मेरे जिले शाहजहांपुर में पहली मीटिंग हुई थी, उस वक्त मैं अपनी पास बुक ले गया था, बगैर किसी के कहे हुए, अखबारों में यह देख कर कि हमारे देश पर आपत्ति आई है। मैं एक गरीब आदमी हूं जोकि लोक सभा में आया हूं। आपने सुना होगा कि एक भोंपूवाला, जिस ने एक पैसा भी खर्च नहीं किया वह इस सदन में गरीबी की वजह से चुन कर आया, जिस गरीब ने १६०० पैसे भी नहीं देखे हैं। भगवान की कृपा से मेरे पास १६५० रु० पास बुक में बचा था, उस पास बुक को मैं ने जिलाधीश के सामने भेज दिया। रुपया निकालने में कुछ कानूनी अड़चन थी, एक समय में पूरे का पूरा रुपया नहीं निकल सकता था। मैंने उसी वक्त पास बुक में अपने हिसाब को खत्म कर दिया। उस के बाद मेरे पास कुछ नहीं था। कांग्रेस के आन्दोलनों में मैं ३०० बीघा जमीन और अपनी नौकरी पहले ही खो चुका था। गुटबन्दी के कारण, अच्छा न होते हुए भी, मैं कांग्रेस से अलाहिदा हुआ या अलाहिदा कर दिया गया। इस का मुझे कोई दुःख नहीं है।

अब मैं दूसरी प्रतिज्ञा लेता हूं कि मैं अपना सारा का सारा समय, बजाये नुक्ताचीनी करने के अपने क्षेत्र में बिताऊंगा । मैं अपने घर का कोई काम काज नहीं करता हूं । मैं यह भी बतला देना चाहता हूं कि जिस समय भी मेरे शरीर की आवश्यकता होगी मैं देने के लिये तैयार हूं ।

ज्ञानी गुरुमुख सिंह जी ने अपने भाषण में कुछ जातियों की ओर संकेत किया था और कहा था कि उन को लड़ने का अधिकार है । वही बहादुर हो सकते हैं । एक देवी जी ने भी यही फरमाया था । ऐसा कहना हम गरीब अछूतों पर अन्याय है । मुझे मौका तो दीजिये । यद्यपि मैं एक अछूत हूं पर मैं किसी से कम रहने वाला नहीं हूं । ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता । जिन को गांधी जी ने बरसों उपदेश दिया उन को ऐसी बातें नहीं कहनी चाहियें ।

ज्यादा अमीर आदमी लड़ाई नहीं लड़ सकते । बड़े से बड़े चुनाव लड़े गये हैं तो गरीबों के दम से लड़े गये हैं । अगर इस बात की कोई पाबन्दी भी है कि जाट और सिखों आदि को लिया जाय तो मैं कहूंगा कि उस पाबन्दी को हटा कर हरिजनों को भी फौज में भरती किया जाय और उन के अपने अफसर मुकर्रर किये जायें और उन्हें शिक्षा दी जाय । मेरा तो विश्वास है कि ये भंगी और चमार कहलाने वाले दुखी हरिजन उन से आगे होंगे । उन में आराम तलबी हो सकती है, गरीबों में नहीं । गरीब अपना खून दे कर भी राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं ।

मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता और न किसी पर आक्षेप या किसी की टीका टिप्पणी करना चाहता हूं। मेरा शरीर भी अगर देश के काम आयेगा तो मैं हंसते हंसते दे दूंगा और तो मेरे पास कुछ नहीं है । जय हिन्द ।

†**श्रीमती अक्कम्मा देवी** (नीलगिरि) : मैं प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत किये गये संकल्पों का पूरा समर्थन करती हूं । इस संकट के समय प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह राष्ट्रीय नेता को पूरी पूरी सहायता दे । यह आलोचना करने का समय नहीं है । न ही यह विदेश नीति की आलोचना करने का समय है । इस समय यह कहने का कोई औचियत्य नहीं है कि 'हमें यह करना चाहिये था, या कि 'हम तैयार नहीं थे' इस समय प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह खेत में, कारखाने में और युद्ध भूमि में संतोषजनक काम कर के चीनियों को भारत से निकाला जाये। भारत उठेगा और चीनियों के ऊपर विजय प्राप्त करेगा ।

अपने मित्रों की तरह, मैं भी अमेरिका, ब्रिटेन और कनेडा द्वारा दी गई सैनिक सहायता के लिये भी आभारी हूं । मैं सरकार से प्रार्थना करूंगी कि वह मित्र देशों से हर प्रकार की सहायता लेना स्वीकार करे । मेरा पहला सुझाव यह है कि अपव्यय बन्द किया जाये और अधिकतम मितव्ययता से काम लिया जाये । हमें अपने जवानों के लिये ऊनी कपड़े, पौष्टिक खाद्य और हथियार सम्भरण करने के लिये बचाना चाहियें । हमें जवानों के परिवारों के लिये, जिन्हों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है, बचाना चाहिये ।

मेरा अगला सुझाव यह है कि भरती केवल शहरों से नहीं बल्कि देश के सब गांवों से भी की जानी चाहिये और भरती किये हुए लोगों को सैनिक प्रतिरक्षा के अलावा असैनिक प्रतिरक्षा में भी प्रशिक्षण देना चाहिये ।

मेरा अगला सुझाव यह है कि कृषि उत्पादन सौगुणा बढ़ाया जाये और मूल्यों को बढ़ने न दिया ये । मेरा अन्तिम सुझाव यह है कि आयुध कारखानों में श्रमिकों को कोई अड़चन नहीं पैदा करनी चाहिये और समय को नष्ट नहीं होने देना चाहिये ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री शिवाजी राव शं० देशमुख** (परभणी) : मुझे संदेह नहीं कि प्रत्येक भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित संकल्प का अनुमोदन करेगा । इस समय देश में जितनी एकता है, वह इस सदन की एकता से भी अधिक है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत की पवित्र भूमि को और भारत की आज़ादी की पूरी रक्षा की जायेगी, चाहे आक्रमणकारियों की ताकत कितनी अधिक क्यों न हो ।

आपात् के प्रति साम्यवादियों के रवैये की बहुत चर्चा की गई है, हमारे प्रधान मंत्री ने साम्यवादी दल पर प्रतिबन्ध न लगा कर ठीक कदम उठाया है । क्योंकि आपात काल में कोई दल किसी विदेशी दल विशेष कर एक आक्रमणकारी के प्रति वफ़ादार नहीं हो सकता । किन्तु कुछ लोग साम्यवादियों की निष्ठा में सन्देह करते हैं । मैं समझता हूं कि इस अवसर पर साम्यवादी दल न केवल बातों से बल्कि कार्यों से सरकार का साथ देगा । मुझे विश्वास है कि राष्ट्र उन की इस राष्ट्रीयता की भावना की कद्र करेगा, यदि उन्हों ने यह रास्ता अपनाया । इसलिये मैं उस दल पर कोई आक्षेप नहीं करना चाहता ।

महाराष्ट्र और पंजाब की सरकारों ने साम्यवादी दल के उन अवांछनीय व्यक्तियों को गिरफ्तार कर के, जिन की निष्ठा चीन के प्रति थी, पहल की है ।

चीन चाहता है कि साम्यवादियों के बीच वही विश्व का नेता बने । इसलिये चीन अनुभव करता है कि जब तक भारत को नीचा न दिखाया जाये और भारतीय जनतंत्र को निष्फल दिखा कर न बताया जाये, चीन साम्यवादी गुट में नेतृत्व नहीं कर सकता ।

हमारी तटस्थता की नीति के बारे में बहुत कुछ कहा गया है । यही नीति ही हमारे लिये सब से अच्छी है और कोई हमें इस को छोड़ने की आशा नहीं कर सकता । किन्तु पश्चिम जनतंत्रों के प्रति हमारे जो सन्देह हैं, वे अब हट जाने चाहियें । इस विषय में हमारी तटस्थता की नीति पर पुनर्विलोकन होना चाहिये ।

अब मैं अपने सुझाव पेश करता हूं । राष्ट्रीय आपात के दिनों में सरकार को सब अनावश्यक खर्च बन्द कर देना चाहिये । केन्द्र में और विभिन्न राज्यों में युद्ध मंत्रिमण्डल बनाये जाने चाहियें और इन की सदस्यता कम से कम होनी चाहिये ।

हम इस बात का भी स्वागत करते हैं कि महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री प्रधान मंत्री और राष्ट्र की सेवा के लिये प्रतिरक्षा मंत्री बनाये जा रहे हैं ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** (शिवसागर) : तिब्बत को अपनी स्वतंत्रता के बनाये रखने में सहायता देने का भारत पर नैतिक उत्तर दायित्व था । हम ने यह बड़ी सख्त भूल की है । अपनी सुरक्षा के हेतु तिब्बत, नेपाल, भूटान तथा सिक्किम के 'बफ्फर' राज्यों को बनाये रखना बहुत आवश्यक है ।

पीकिंग के नेताओं पर बहुत अधिक विश्वास करना भी एक बड़ी गलती थी, जो हम ने की ।

यह बात बहुत उत्साहवर्धक है कि आज लोग शत्रु से लड़ने के लिये पूर्णतः तैयार हैं । यह जोश इतना अपने आप उठा है कि हमारी अन्तिम विजय में कोई सन्देह नहीं

---

†मूल अंग्रेजी में

हो सकता । समय की आवश्यकता यह है कि आम उत्साह को ठीक रीति से काम में लाया जाये ।

सरकार आसाम, नागालैंड, मनीपुर तथा त्रिपुरा के सारे खंड की सुरक्षा की ओर अधिक ध्यान दे । हमें देखना चाहिये कि स्टिलवेल नामक सड़क, जो आसाम को उत्तरी बर्मा के मार्ग से चीन से मिलाती है और जो इस समय प्रयोग में नहीं है, ठीक प्रकार से सुरक्षित किया जाये । आसाम के सभी हवाई अड्डों आदि को पर्याप्त रूप से लैस किया जाय तथा सुरक्षित रखा जाये ।

सरकार की गुप्त सूचना तथा प्रचार व्यवस्था का पुनर्गठन किया जाना चाहिये ।

†**श्री वासुदेवन नायर** (अम्बलपुजा) : प्रधान मंत्री ने कहा है कि हमें चीनी हमले से बहुत धक्का लगा है । मैं यह कहना चाहता हूं कि जितना धक्का हम साम्यवादियों को लगा है, और किसी को नहीं लगा । हमारे दल के विचारों को राष्ट्रीय परिषद् के संकल्पों में स्पष्ट रूप से बताया गया है । इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हम एक हो कर रहें और काम करें । वास्तविक राष्ट्रीय एकता समय की सब से बड़ी आवश्यकता है ।

पिछले १० वर्षों से इस सदन में प्रधान मंत्री की नीतियों की चर्चा करते आये हैं और जहां तक वैदेशिक नीतियों का सम्बन्ध है, हमने उन का समर्थन किया है । तटस्थता की नीति का भी हम ने सदैव समर्थन किया है । इस समय संकट का लाभ उठा कर कुछ अन्य लोग जिन नीतियों का प्रचार कर रहे हैं, वे हमारी नीतियों के विरुद्ध हैं । हमें अपनी मूल नीतियों को रद्द नहीं करना चाहिये । सरकार को चाहिये कि देशभक्ति के वेश में समस्त प्रकार के सैद्धान्तिक तथा प्रतिगामी आंदोलनों को बिना रोक के न चलने दे ।

हमारे कुछ मित्र कहते हैं कि हम सरकार का समर्थन नहीं कर रहे और वे हमें यह दोष देते हैं कि हम कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं । हम राष्ट्रीय आपात में सारे राष्ट्र के साथ हैं और प्रधान मंत्री का समर्थन करते हैं । किन्तु हम देश में क्या देख रहे हैं ? स्वतंत्र दल ने सरकार का समर्थन करने के लिये शर्तें लगाई हैं । श्री हेम बरुआ ने समाचारपत्र का एक समाचार पढ़ कर सुनाया था कि हावड़ा में जो मूर्ति जलाई गई थी, वह साम्यवादी दल का काम था । किन्तु **आनन्द बाजार पत्रिका** में, जिसके प्रबन्धक वहीं हैं जो **हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड** के हैं, जो समाचार इस के बारे में छपा है, इस का कोई उल्लेख नहीं है ।

साम्यवादी दल की स्थानीय समिति के सचिव ने घटना के बाद एक वक्तव्य दिया था कि साम्यवादी दल का इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं और न ही साम्यवादी दल ऐसे कार्यों में विश्वास करता है ।

श्री बरुआ ने संकेत किया था कि सीमा पर चंदा इकट्ठा किया गया है । हम यह चंदा आसाम और बंगाल से ही नहीं बल्कि सारे देश के लोगों से एकत्र कर रहे हैं । यह लोग यह आरोप लगाते हैं कि इस चंदे की रसीदें इसलिए दी जा रही हैं कि लोग चीनियों के आने पर उन्हें दिखा सकें तो मैं प्राधिकारियों से कहूंगा कि वे निश्चय ही इस की जांच करें ।

इस आपातकाल में हमें सभी राजनैतिक दलों से अपील करनी चाहिये कि देश के सभी हितों को संगठित किया जाये । देश को जिस खतरे का सामना करना पड़ रहा है उसके मुकाबले में साम्यवादी दल किसी से पीछे नहीं रहेगा ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री कृ० च० पंत (नैनीताल) : इस चर्चा में कई सदस्य भाग ले चुके हैं तथा अन्य कई भाग लेने के इच्छुक हैं । इससे स्पष्ट है कि यह स्थिति अत्यन्त गम्भीर है । इस समय हमारे उत्तरी सीमांत पर भयंकर खतरा पैदा हो गया है । यह धावा बिना किसी कारण या आधार के किया गया है । यह विवाद भूमि के जरा सी टुकड़े के लिये नहीं है अपितु यह हमारी मातृभूमि की प्रतिष्ठा, हमारे सिद्धान्तों तथा हमारे जीवन दर्शन का प्रश्न है, यह उन आदर्शों का प्रश्न है जिनका हम आदर करते हैं तथा जो भारतीय भूमि का आधार है ।

इस संघर्ष का परिणाम केवल भारत और चीन पर ही नहीं पड़ेगा अपितु सारे एशिया और संभवतः सारे विश्व पर पड़ेगा । वस्तुतः यह इस संघर्ष से सभी राष्ट्र और जनता सम्बन्धित हैं, इसका विश्लेषण करने पर यह प्रतीत होगा कि यह संघर्ष उन दो दलों के बीच में है जिन में से एक तो शांतिपूर्ण सह अस्तित्व में विश्वास करते हैं और दूसरे जो कि अपने विशेष सिद्धान्तों के लिये मानवता का बलिदान कर सकते हैं । यह स्मरण रखना चाहिये कि चीन युद्ध छेड़ने में, भले ही इसके कितने ही घातक परिणाम हों, जरा भी नहीं हिचकेगा यदि उसे जरा भी यह विश्वास हो कि इससे उसे कुछ ठोस बात हासिल होगी ।

इस सम्बन्ध में मैं रूस और चीन के बीच भेद करना चाहता हूं । निसंदेह रूस और चीन के बीच सम्बन्ध गहरे हैं तथापि हमें यह बात स्वीकार करनी चाहिये कि विश्वव्यापी महायुद्ध छिड़ने पर रूस का बहुत कुछ दाव पर लग जायेगा तथा साम्यवाद हो या न हो तथापि रूस भी चीन के चंगुल से नहीं बच सकता है । मेरे विचार से रूस इस खतरे को भली भांति समझता है ।

सभा को यह जान लेना चाहिये कि चीन कितने भयंकर रूप से महत्वाकांक्षी है । ११ नवम्बर की 'लिंक' पत्रिका में चीन के कालेज के विद्यार्थियों के लिये विहित एक इतिहास की पुस्तक में दिया गया मानचित्र प्रकाशित हुआ है । इस में न केवल नेपाल, सिक्किम, भोटान, बर्मा और सारा दक्षिण पूर्वी एशिया को उन भू-भागों के अन्तर्गत दिखाया गया है जिन्हें कि साम्राज्यवादियों ने चीन से हथिया लिया था । इस में पामीर का भी वह भाग शामिल है जिसके सम्बन्ध में कहा गया है कि इसे ब्रिटेन और रूस ने १८९६ में चुपचाप बांट लिया था । इस में कजाकिस्तान, खिरजीज, तथा ताजिकिस्तान के भी बड़े बड़े भाग शामिल हैं । उस पुस्तक के अनुसार ये भू-भाग साम्राज्यवादी रूस ने १८६४ में चुंगचक की संधि के आधार पर हथिया लिये थे । नेपाल को इस बात पर गहराई से सोचने की आवश्यकता है ।

नेपाल की सुरक्षा के सम्बन्ध में इस देश में बहुत चिन्ता व्यक्त की जा रही है । इस के न केवल भौगोलिक तथा राजनैतिक कारण हैं अपितु दोनों देशों के बीच बहुत गहरे मंत्री सम्बन्ध हैं, जो अभी हाल की भ्रांतियों के बावजूद भी हमें पूरी तरह आशा है बने रहेंगें ।

मुझे विश्वास है कि नेपाल और रूस भी इस बात से अवगत है कि चीन ने किस प्रकार भारत के साथ विश्वासघात किया तथा भारत की सच्चाई का बदला धोखेबाजी से चुकाया । वस्तुतः विश्व की समस्याओं के प्रति दोनों देशों के दृष्टिकोण में बुनियादी भेद है । चीन इस बात पर विश्वास करता है कि विश्व में तब तक शांति नहीं हो सकती जब तक कि सारा विश्व साम्यवादी नहीं हो जाता, जब कि भारत इस बात पर पूरा विश्वास करता है कि बिना दूसरों पर हस्तक्षेप किये हुए अपने सिद्धान्तों के अनुसार जीने का पूरा हक है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

हमारी वैदेशिक नीति इसी आधार पर कायम है। इस आधार की बुनियाद बहुत गहरी है। यह नीति,अर्थात् शांति तटस्थता तथा अन्य देशों के प्रति मित्रता तथा देश में योजना, समाजवाद तथा लोकतंत्र का प्रसार भारतीय राष्ट्र की निहित शक्ति का परिणाम है। यदि हम केवल परिस्थितियों के दबाव के वशीभूत होकर अपनी बुनियादी नीति छोड़ देवें तो हमारे लिये यह भयंकर अभिशाप होगा। संकटकाल में हमें इन बुनियादी तथ्यों पर विश्वास रखना चाहिये।

निसंदेह ऐसे संकटकाल में हमें विश्व के सभी राष्ट्रों से सहायता की प्रार्थना करनी चाहिये। हमें अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और फ्रांस तथा अन्य एशियाई देशों का कृतज्ञ होना चाहिये जिन्होंने भारत का समर्थन किया है। अपने अस्तित्व के लिये संघर्षरत राष्ट्र के लिये मित्रता की सब से बड़ी कसौटी केवल यही हो सकती है कि अवसर में कौन मित्र उसका साथ देता है।

यह संघर्ष निसंदेह काफी अर्से तक चलेगा तथापि संकट काल में हमारे साहस और निश्चय की परीक्षा हो सकेगी। यह भी सम्भव है कि हमारे जीवन के सर्वोत्तम वर्ष इन दोनों देशों के संघर्ष के फलस्वरूप शोचनीय बन कर रह जायें। तथापि जब हम कहते हैं कि हम इस संघर्ष का मुकाबला करने के लिये तथा इसके लिये अपना तन मन अर्पण करने के लिये बिल्कुल तैयार हैं तो हम इस बात को मन में रखते हुए कहते हैं कि हमें इसके लिये कैसे भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ेगा। मैं ने जर्मनी में स्वयं अपनी आंखों से देखा है कि युद्ध की विभिषिका क्या होती है। तथापि हमारे पास सिवाय इसके कोई चारा नहीं है कि हम इस संघर्ष का पूरी तरह मुकाबला करें। मैं यह बात इसी आधार पर कह रहा हूं कि देश की जनता ने शत्रु का मुकाबला करने के लिये पूरी जागरूकता दिखायी है।

हमारे देश की जनता ने जो उत्साह दिखाया है हमें उस पर गर्व होना चाहिये। हमारे नेताओं को जनता के इस उत्साह का रचनात्मक उपयोग करना चाहिये।

इसके लिये हमें केन्द्र तथा राज्यों में अपनी प्रशासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना चाहिये। निर्णय में शीघ्रता और कुशलता होनी चाहिये। सामान्य जनता को इस आपात काल का सही बोध तभी हो सकता है जब कि हम हर मामले में शीघ्रता दिखायें। सरकार तथा जनता को चाहिये वे समाज विरोधी तत्वों को सावधान कर देवें कि उनके साथ कठोर बर्ताव किया जायेगा। जो लोग राष्ट्र को हानि पहुंचा कर लाभ उठाना चाहते हैं उन्हें कठोर दंड दिया जाये। हमें अपने उत्पादन तीसरी परियोजना के लक्ष्यों से भी आगे बढ़ाने चाहिये। इसके लिये हमें अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करना होगा। यह अवसर है जब कि सरकार को चाहिये कि वे कीमतों और किस्म के सम्बन्ध में सही पैमाने लागू करे। जनता में अनुशासन की भावना की वृद्धि की जाये।

आज हमारे सामने केवल एक ही प्रश्न है और यह है कि प्रत्येक चीनी को भारतीय भूमि से बाहर खदेड़ दिया जाये। मैं इस अवसर पर उन जवानों को श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं जिन्होंने देश के लिये अपने प्राणों की बलि दी है। भारतीय सैनिक विश्व से सबसे अच्छे योद्धा हैं। यदि उन्हें उचित शस्त्रास्त्र और आत्मविश्वास दिलाया जाये तो निसंदेह हमारी विजय होगी। हमें इस अवसर पर एक बार पुनः यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम अपने प्रिय नेता प्रधान मंत्री पंडित नेहरू के सच्चे अनुयायी हैं। जो कि देश की स्वतंत्रता और दृढ़ निश्चय के सच्चे समर्थक हैं।

†**श्री ज० ब० सिं० बिष्ट** (अल्मोड़ा) : मैं उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं जो एक सीमांत प्रदेश है तथा जहां के बहुत से योद्धा इस समय लद्दाख और नेफा में लड़ रहे हैं।

मैंने १९५८ में या १९५९ में इस सभा में अपने एक भाषण में कहा था कि भारत को आत्मतुष्ट नहीं होना चाहिये। निस्संदेह हमारी जनता में उत्साह है।

शत्रु के मुकाबले के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के प्रदर्शन किये जा रहे हैं किन्तु इस के लिए अपेक्षित वास्तविक प्रयत्न नहीं किये जा रहे। ऐसी गंभीर परिस्थितियों में ठीक अवसर पर सहायता के लिए मैं इंग्लैंड और अमरीका का धन्यवाद करना हूं। इस समय के युद्ध क्षेत्र में ही चीनियों का विनाश होना चाहिये अन्यथा पहाड़ की तलहटियों में मुकाबला करना घातक होगा।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद् बहुत बड़ी है। उसमें केवल सेवा निवृत्ति प्राप्त जेनरल, सेवा नायक और मंत्रिमंडल की अपातकालीन समिति के सदस्य ही होने चाहिये।

हमारे सैनिक विश्व के महानतम योद्धाओं में गिने जाते हैं और यदि उन्हें ठीक प्रकार के शस्त्रास्त्र मिलें तो स्वतंत्र रहने की इच्छा के बल पर इस हम अवश्य विजयी होंगे।

†**डा० मा० श्री अणे** (नागपुर) : मैं प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत किये गये संकल्पों का समर्थन करता हूं। इनकी आवश्यकता इस लिए पड़ी कि चीन ने बिना कारण हमारे ऊपर आक्रमण कर दिया है।

अमरीका और अन्य देशों का विरोध सहते हुए भी भारत चीन के प्रति मित्रता का पालन करता रहा है और उसे संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने के लिए प्रयत्नशील रहा है। आज हमें कटु अनुभव से पता लगा है कि राष्ट्र संघ में उसे न लिये जाने के कारण ठीक ही है।

जब चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया तो उसका विरोध नहीं किया। हम जब कहते हैं कि मकमोहन लाइन हमारी सीमा है तो हम स्वीकार करते हैं कि तिब्बत को अंग्रेजों के साथ सीमा सम्बंधी करार करने का अधिकार था और वह प्रभुता सम्पन्न राज्य था। किन्तु उस पर आक्रमण के समय विरोध न करने का प्रायश्चित आज हम कर रहे हैं।

हमें अब अन्तर्राष्ट्रीय विधि की बातें नहीं करनी चाहियें क्योंकि चीन उस कानून को नहीं जानता। हमारा एक ही कर्तव्य है कि अपनी सेवा को शस्त्र-स्त्र से सुसज्जित करें और आक्रमणकारी को देश से निकालें और अन्य देशों से जो भी सहायता मिलती है उसे प्राप्त करें। हर्ष की बात है कि कुछ बड़े राष्ट्रों ने हमारी सहायता की है। कुछ मित्र राष्ट्रों ने सहायता नहीं की क्योंकि

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बांधवा :

प्रधान मंत्री के आह्वान के उत्तर में लोगों ने उदारतापूर्वक चंदा दिया है सरकार को भी खर्च कम करना चाहिये और केन्द्र तथा राज्यों में मंत्रिमंडलों के मंत्रियों में कमी करनी चाहिये। संसद की दोनों सभाओं और अन्य स्थानीय निकायों के सदस्यों को उदारतापूर्वक प्रतिरक्षा के लिए चंदा देना चाहिये। तभी हम लोगों से सभी प्रकार के त्याग के लिए कह सकेंगे।

यह बड़े संतोष की बात है कि सभी राजनैतिक दलों ने सरकार को सहायता देने का आश्वासन दिया है। साम्यवादियों के अन्तिम संकल्प के अनुसार वे भी सहायता देंगे। ऐसी स्थिति में

---

†मूल अंग्रेजी में

ऐसे दलों के गिरफ्तार लोगों को छोड़ देना चाहिये जिनकी देश भक्ति पर अविश्वास नहीं किया जा सकता । पता नहीं भगवान को यही मंजूर हो कि यदि हम जीत जायें तो तिब्बत का भी भाग्योदय हो जाये । ऋग्वेद में कहा है : –

अस्माकम वीरा उत्तरे भवन
त्वरफानू उदेवा अवता हवेषु,

अर्थात् हमारे वीर योधा विजयी हैं । और देवता हमारे योद्धाओं की रक्षा करें ।

†**महाराज कुमार विजय आनन्द** (विशाखापटनम) : मैं प्रधान मंत्री के संकल्पों का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । देश की महिलाएं जवानों के कल्याण के लिए बहुत काम कर रही हैं । उन्हें भी राइफल चलाना सीखना चाहिये और इंगलैंड की तरह दफ्तरों में पुरुषों का स्थान ले लेना चाहिये ताकि पुरुष युद्ध में सक्रिय भाग ले सकें ।

भारत के साम्यवादी दल पर प्रतिषोध नहीं लगाना चाहिये बल्कि साम्यवादियों को स्वयं अनुभव करना चाहिये कि वे सब से पहले भारतीय हैं और अन्त तक भारतीय रहेंगे । इस आपातकाल ने राष्ट्र के अनेक भागों में संगठन पैदा कर दिया है ।

पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध घृणा का जो प्रचार शुरू कर दिया है वह समझ में नहीं आता क्योंकि यदि चीनी भारत पर कब्जा कर लें तो क्या पाकिस्तान बच सकता है ।

हमारी तटस्थता की नीति सफल रही है और इसी के कारण सभी सभ्य देश हमारी सहायता के लिए तैयार हैं । श्री टुंकू ने न केवल भारत का पूरा समर्थन किया है बल्कि भारत के लिये निधि भी स्थापित की है । सम्राट हेल सलेसी ने भारत के प्रति सहानुभूति दर्शायी है और कहा है कि विश्व की शान्ति खतरे में है ।

मैं आक्रमण में विश्वास करता हूं । प्रतिरक्षा का उपाय आक्रमण ही है । हमें चेतावनी दे देनी चाहिये कि यदि इसी प्रकार आक्रमण होते रहे तो सभी चीनियों को भारत से निकाल दिया जायेगा ।

मैं जवानों की सहायता के लिए एक क्रिकेट मैच का आयोजन कर रहा हूं । सभी को उसकी टिकटें खरीदनी चाहियें । चलचित्र उद्योग युद्ध में बहुत सहायता कर सकता है । चलचित्रों में जवानों को वीर योद्धाओं के रूप में दिखाना चाहिये । चलचित्र अभिनेता और अभिनेत्रियां देश भक्ति के गीत सुनायें । प्रथम महायुद्ध सर हेनरी थाडेर युद्ध क्षेत्र में जा कर सेनाओं को गीत सुनाया करता था ।

जवानों की मृत्यु पर उनकी विधवाओं को केवल २० रुपये निवृत्ति वेतन मिलता है जो कि काफी नहीं है । इसे बढ़ाना चाहिये ।

†**श्री पी० रा० रामकृष्णन** (कोयम्बटूर) : साम्यवाद के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी साम्यवादी दल ने किसी साम्यवादी देश को आक्रांता का नाम दिया है । हमारी तटस्थता की नीति बहुत सफल है । यह ठीक है कि हम इस युद्ध के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे । वर्तमान आपातकाल में प्रतिभावान लोगों को युद्ध कार्य में लगाना चाहिये और देश के सभी संसाधनों का उपयोग करना चाहिये ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री पी० रा० रामकृष्णन]

सरकार के कार्य संचालन को तेज़ करना चाहिये । शीघ्र परिणाम प्राप्त करने के लिए शीघ्र निर्णय करने सरकार के कार्यों में समन्वय स्थापित करना चाहिये । सब से बड़ी आवश्यकता है समन्वय, निर्देशन, उत्पादन तथा संभरण । देश में उत्साह और दृढ़ निश्चय है उसे व्यर्थ वहीं जाने देना चाहिये ।

†**श्री बासप्पा** (तिपतुर) : आज सर्वत्र देश में एक रोष की लहर दौड़ गयी है। एक सब से बड़ी बात यह हुई है कि सारा देश प्रधान मंत्री के नेतृत्व में संगठित हो गया है। आज देश के छोटे छोटे मामलों को लोगों ने भुला दिया है। सबने यह समझ लिया देश दल और व्यक्ति से ऊपर की चीज है। हमें देश के हित को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए। हम सबको अपने सभी मतभेद भुला कर वर्तमान संकट का मुकाबला करना होगा। चीन ने जो चुनौती हमको दी है उसका मुकाबला करने में हमें पूरी तरह डट जाना चाहिए। हमें बर्बर चीनियों को देश से निकाल कर ही दम लेना है।

हमारा पक्ष सत्य पर आधारित है अतः इसके कारण हमें मित्र देशों से सहायता प्राप्त हो रही है। श्री त्यागी जी का यह कहना भी ठीक ही है कि हमें अपने खर्चे इत्यादि कम करने चाहिए। परन्तु मैं इस बात से सहमत नहीं कि हम अपनी आधारभूत नीति को छोड़ देंगे। हमें तटस्थता की नीति नहीं छोड़नी चाहिए, इसके कारण हमें विश्व में बहुत से अच्छे अच्छे मित्र प्राप्त हुए हैं। इस नीति के फलस्वरूप सरकार की आलोचना करना मैं उचित नहीं समझता। जो लोग हमें सहायता दे रहे हैं उन्होंने भी इस नीति पर कोई आपत्ति नहीं की। अतः इस परिस्थिति में सरकार अथवा प्रधान मंत्री को इस नीति को बदलने के लिए कहना उचित नहीं है। यह ठीक है कि हमें युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार रहना चाहिए।

रूस उचित दिशा में कोई कदम उठाने में क्यों संकोच कर रहा है, इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। परन्तु मैं अवश्य निवेदन करना चाहता हूं कि हमें उसे उचित निर्णय करने के लिए समय देना चाहिए। साम्यवादी भाइयों को भी देश के हित का ध्यान रखना चाहिए ।

इस संदर्भ में मुझे अपने जवानों को भी श्रद्धा के फूल भेट करने है। हमारी जनता भी जागरूक हो चुकी है और देश की रक्षा के लिए लोग अपना सर्वस्व भेंट कर रहे हैं हमें यह भी पूरी आशा है कि जो देश हमारा समर्थन नहीं कर रहे हैं वे हमारे उद्देश्य को समझेंगे और आवश्यक कार्य करेंगे। पं० नेहरू जी ने ठीक ही कहा है कि यह लड़ाई एक तरह से हमारे लिए वरदान सिद्ध होगी और इससे हमारी एकता और योग्यता में बहुत अधिक वृद्धि हो जायेगी ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** (जोधपुर): धूर्त शत्रु ने हमारे देश पर आक्रमण किया है। आज हम आक्रान्त को निकालने के लिए कटिबद्ध हो रहे है। चीन बिना कारण ही हम पर चढ़ आया है। और हम अपने राष्ट्र के गौरव की रक्षा करने को तैयार हो रहे हैं। अपने समस्त साधन इस दिशा में लगा रहे । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस समय हमें

---

†मूल अंग्रेजी में

मतभेदों की बात नहीं करनी चाहिए और अपने राष्ट्रगणों पर अविश्वास प्रकट नहीं करना चाहिए ।

प्रधान मंत्री जी का संकल्प हृदय हिला देने वाला हैं, परन्तु मेरा मत है कि इसमें सैनिक शिक्षा के बारे में एक कंडिका और जोड़ी जानी चाहिए। साथ ही मैं इस बात पर भी जोर देना चाहता हूं कि हमें चीनियों के साथ सभी राजनीतिक सम्बन्ध समाप्त कर देने चाहिए । चीन को राष्ट्रसंघ द्वारा आक्रांता घोषित करवाना चाहिए । और इस बात का पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि इस आक्रान्ता को भारत भूमि से निकालने के लिए राष्ट्रसंघ से सभी प्रकार की सहायता ली जाय । हमें चीन के राष्ट्रसंघ में लिये जाने का समर्थन नहीं करना चाहिए । इस मामले में हम पहिले भी भूल करते रहे हैं । हमें एक बात समझ लेनी चाहिए कि चीन को राष्ट्रसंघ के 'चार्टर' पर कोई विश्वास ही नहीं है । इस उद्देश्य के लिए उसका समर्थन करना अपना आत्मघात करने के समान है ।

यह तो अच्छा ही हुआ है कि हमारे प्रधान मंत्री महोदय ने प्रतिरक्षा विभाग स्वयं सम्भाल लिया है । इस दिशा में मेरा निवेदन यह है कि केवल आक्रांता का सामना करने और अपना बचाव करने से ही काम नहीं चलेगा । हमें उन पर हमला भी करना होगा । एक बात तो स्पष्ट ही हो गयी है कि हमने चीनियों के मित्रता के दिखावे में विश्वास करके गलती की है । इससे भी बड़ी गलती यह रही कि जब उसने तिब्बत पर हमला किया तो हम चुप रहे । मैं अनुरोध करूंगा कि हमें पूरे प्रयत्न करक तिब्बत के लोगों को अपनी मातृ-भूमि को मुक्त करवाने के लिए पूरी सहायता देनी चाहिए ।

एक बात तो सर्वत्र दिखाई दे रही है कि जनता का उत्साह सरकार की कार्यवाही से बढ़कर रहा है । सरकार को नागरिक सुरक्षा की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए । इस कार्य को सीमान्त प्रदेशों में तो बड़े व्यापक आधार पर करना चाहिए । सैनिक प्रशिक्षण देने के लिए सेवानिवृत सैनिक कर्मचारियों को बुला लिया जाना चाहिए । मेरा अब भी विश्वास है कि अन्तिम विजय पंचशील की हो होगी ।

श्रीमती विजयराजे सिंधिया (ग्वालियर): अध्यक्ष महोदय, हमारे देश की सीमा पर चीनी आक्रमण के कारण जो परिस्थिति उत्पन्न हुई है और उससे सम्बन्धित जो दो प्रस्ताव सदन के सामने प्रधान मंत्री जी ने रखे हैं, उन पर विचार प्रकट करने के लिए और उनका समर्थन करने के लिए आपने जो मुझे शुभ अवसर दिया है, उसके लिए मैं आपकी आभारी हूं ।

भारत सदा शान्ति-प्रिय देश रहा है और इतिहास का पन्ना उलटने पर हम देखते हैं कि हमारे देश ने कभी किसी अन्य देश की भूमि हथियाने के अभिप्राय से आक्रमण नहीं किया है । हालांकि हमारे ऊपर आक्रमण बराबर होते आए हैं । इसी परम्परा के अनुरूप ही हमारे नेता और प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने भी विश्व शान्ति की नीति को बनाये रखा और इसी सिद्धान्त के फलस्वरूप हमने तटस्थता की नीति को अपनाया और इसका सदा पालन करने का प्रयास किया है । हम अपने पड़ौसी देशों तथा राष्ट्रों के साथ हमेशा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखेंगे । अगर इस मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की इच्छा होते हुए भी किसी पड़ौसी देश ने हमारे साथ विश्वासघात किया है तो इसका अर्थ यह नही होता है कि हमारे इस सिद्धान्त में कोई कमी है ।

[श्रीमती विज्य राजे सिंधया]

हमने जिस समय स्वतंत्रता प्राप्त की उस वक्त देश की आर्थिक व्यवस्था बहुत अस्त-व्यस्त थी। अतएव यह स्वाभाविक ही था कि पहले हम अपने घर को सुधारते और निर्माण की ओर कदम बढ़ाते। हमारी इस आर्थिक प्रगति में बाधा डालने के लिए तथा एशिया के एक सब से बड़े प्रजातंत्रीय राष्ट्र को नीचा दिखाने के प्रयोजन से ही आज चीन हमारे ऊपर आक्रमण करने को उतर आया है। यह लड़ाई चीन और भारत के बीच ही नहीं है, वरन् एक विस्तारवादी और बर्बरदेश तथा विश्व की समस्त जो शान्तिप्रिय और आजादी-प्रिय जनता है, जो शान्तिप्रिय और आजादी-प्रिय राष्ट्र हैं, उनके बीच में है। हम उन प्रगतिशील तथा उदार मित्र राष्ट्रों के प्रति अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने हमारी इस संकट के वक्त मदद की है और जो मुक्त-हस्त और बिना शर्त के हमारी मदद के लिए आगे आ खड़े हुए हैं। इस अनुष्ठान में हमें अपने इन मित्र राष्ट्रों से जितनी भी सहायता जिस किसी भी रूप में वह मिलती हो, सहर्ष ग्रहण करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिये।

इसके साथ ही साथ पाकिस्तान, नेपाल आदि पड़ौसी राष्ट्रों के साथ हमारे मैत्री सम्बन्ध और भी दृढ़ हों, इस बात का हमें सतत् प्रयत्न करने रहना चाहिये।

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी
आपत काल परखिये चारी"

तुलसीदास की इन पंक्तियों के अनुसार हम ने भी आज देख लिया है कि हमारा असली मित्र कौन है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो यह अभिशाप भी हमारे लिये एक वरदान प्रतीत हो रहा है। क्योंकि इस कसौटी पर ही आज हमारी देशभक्ति परखी जा रही है। देश के अन्दर राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का जो एक बड़ा भारी प्रश्न हमारे सम्मुख खड़ा था, आज मालूम होता है कि वह अपने आप ही हल हो चला है। आज हम एक सूत्र में बंध से गये हैं और अपने जनप्रिय नेता श्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अपने देश के ऊपर आई हुई आपत्ति का सामना करने के लिये जुट कर आगे बढ़ रहे हैं।

यह लड़ाई केवल हमारे बाहरी शत्रु से ही लड़ कर खत्म नहीं होती, हमें तीन मोर्चों पर लड़ाई लड़ने की तैयारी करनी है। पहले तो हम अपने आत्म निरीक्षण के द्वारा, आत्म बल को बढ़ाते हुए, अपने अन्दर नैतिक शक्ति को जगाते हुए अपने शत्रु का मुकाबला करने के लिये खड़े हो जायें। दूसरा मोर्चा यह है कि हमारे बीच में जो देशद्रोही तत्व गुप्त रूप से विद्यमान है, जोकि दुश्मनों के भेदी के रूप में काम कर रहा है, उस के कुचक्रों पर सख्त नियंत्रण रखने की हमारे लिये अत्यन्त आवश्यकता है। कहावत प्रसिद्ध है :

"घर का भेदी लंका ढाये"।

इसलिये हमें सतर्क रहना है कि वह हमारे यहां की किसी किस्म की सूचना बाहर न भेजे और हमारे देश के ऊपर आई हुई आपत्ति का सामना करने में हमारे सामने बाधा न खड़ी करे। तीसरे जो हमारे बाहय शत्रु हैं वे तो हैं ही। उन के साथ लड़ कर हमें विजय प्राप्त करनी है। मेरे विचार से हमारी सब से पहली आवश्यकता नैतिक शक्ति को बढ़ाने की है, जिस के बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त होना असम्भव है। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण पूज्य महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में सत्य

और अहिंसा के वल पर लड़ी गई सफल लड़ाई हमारे सामने है । आज हमें न केवल अपनी इस बहुमूल्य स्वतंत्रता की रक्षा करनी है वरन् जनतंत्रवाद को भी एशिया में कायम रखना है, जिस में कि हम सब का कल्याण निहित है । भारतएक स्वाभिमानी राष्ट्र है,वह स्वप्न में भी ऐसी टोटैलिटेरियन शासन प्रणाली बरदाश्त नहीं कर सकता जिसमें कि व्यक्ति का कोई स्वत्व नहीं रहता है और जनता की आवाज में कोई ताकत नहीं रहती है ।

कई कारणोंवश हम मानते हैं कि इस कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिये शायद हमारी जितनी तैयारी होनी चाहिये थी, उतनी नहीं है, पर वक्त का तकाजा यह है कि हम इन आलोचनात्मक प्रवृत्तियों को अलग रख कर अपने नेता श्री नेहरू जी के नेतृत्व में रचनात्मक ढंग से इस मुसीबत का सामना करने के लिये तत्पर हो जायें । देशभक्ति की यह चिंगारी हम देखते हैं कि संपूर्ण देश में दावानल की तरह फैल चुकी है, और जिस जोश के साथ देश के कोने कोने से हमें सहयोग मिल रहा है उस से हम शत्रु पर अविलम्ब विजय प्राप्त करेंगे, इस में जरा भी शक नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है । सत्य की सदा विजय हुई है और होगी, इस में लेशमात्र भी शंका हमें नहीं है । अतएव हमें अपने दुश्मनों की कोरी धमकियों से कतई डरना नहीं चाहिये, चाहे उन का सैन्य बल हम से कितना ही अधिक क्यों न हो । हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि जहां वे अपने देश से हजारों मील दूर लड़ रहे हैं, वहां लड़ाई आज हमारे अपने देश की सीमा पर हो रही है । जिस के फलस्वरूप हमें एक सहूलियत यह है कि समय पर हमारी सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है । शूरता और वीरता में भारतीय सेना की परम्परा विश्व की सेनाओं में सर्वोपरि मानी जाती है । अपने साहस और आत्म बल के अमोघ अस्त्र से सुसज्जित हो कर एक भारतीय सैनिक चीन के १०० सैनिकों का मुकाबला करने की ताकत रखता है और चीन को भारत से लोहा लेने का मजा चख कर ही रहना पड़ेगा ।

आज तक जो हमारी सैनिक व्यवस्था थी वह शान्तिकाल के अनुरूप थी, युद्ध की परिस्थिति के लिये वह पर्याप्त नहीं थी । उस के अन्दर नये ढंग से परिवर्तन लाते हुए, रिओरिएन्टेशन करते हुए, उसे एक संगठित और विस्तृत रूप देना अत्यन्त आवश्यक है । हम अपने सेवा निवृत्त अनुभवी जनरलों और अन्य मिलिटरी आफिसर्स की सेवाओं का भी इस में लाभ उठायें, जिन को दूसरे महायुद्ध का बड़ा अच्छा अनुभव है । और हमें यह जान कर खुशी हुई कि ऐसे कई आफिसर्स ने सहर्ष अपनी सेवायें अर्पित भी की हैं । यहां पर यह सुझाव रखना भी मैं अप्रासंगिक नहीं समझती कि हमारे देश के राजों, महाराजों, उद्योगपतियों तथा सिविल आफिसर्स की सेवायें भी उन के अपने अपने क्षेत्र में ली जायें क्योंकि उन में से बहुत से ऐसे हैं जिन्हें पिछले महायुद्ध का अच्छा अनुभव है ।

युद्ध की सफलता केवल सैन्य बल पर ही निर्भर नहीं है वरन् देश के हमारे किसान व मजदूर भाइयों का, जोकि हमारे देश के आर्थिक स्ट्रक्चर के दो बड़े सुदृढ़ स्तम्भ हैं, योगदान भी उतना ही महत्व रखता है । लड़ाई लड़ने के लिये खाद्य तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन और संग्रह पर्याप्त रूप में होना अत्यन्त आवश्यक है । हमें अपनी जरूरत की सब चीजें स्वयं प्रचुर मात्रा में पैदा करनी हैं ताकि लड़ाई के जमाने में हमें दूसरे देशों पर अधिक निर्भर न रहना पड़े ।

पिछले महायुद्ध और इस युद्ध में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है कि पिछली लड़ाई हम दूसरे देशों में लड़ते रहे हैं, जबकि आज हमारा देश ही एक युद्धस्थल बन गया है । इसलिये सीमाओं पर लड़ने के अतिरिक्त हमें अपने देश की आन्तरिक सुरक्षा, सिविल डिफेन्स, की भी पूरी तैयारी करनी

[श्रीमती विजय राजे सिंधया]

पड़ेगी ताकि हर व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा के साथ ही साथ अपनी और अपने परिवार की रक्षा भी कर सके ।

मैं यह भी अनुभव करती हूं कि अभी हमारी प्रचार तथा प्रोपेगेंडा की मशीनरी जो है उस में लड़ाई के जमाने में जिस प्रकार की गतिविधि आनी चाहिये वैसी नहीं पाई जाती । यह कहने से मेरा कदापि यह अभिप्राय नहीं है कि हम चीन के अनर्गल प्रचार की नकल करें । आवश्यकता तो इस बात की है कि प्रचार इस ढंग से हो जिस से कि जनता में जोश और उत्साह पैदा हो और हम पूर्णतः सुसंगठित हो सकें । इस के अतिरिक्त मोर्चे पर अपनी जान की बाजी लगा कर लड़ने वाले अपने बहादुर सिपाहियों तक हम यह बात पहुंचा सकें कि उन के हाथों को मजबूत करने के लिये हम क्या क्या कर रहे हैं जिस से कि उन का उत्साह वर्धन होता रहे और उन का आत्मविश्वास और दृढ़ हो सके ।

पिछले युद्ध का यह अनुभव है कि ऐसे संकटकाल में अनेक समाजद्रोही तत्व सर उठाने लगते हैं, जो परिस्थिति का फायदा उठा कर मुनाफाखोरी, चोरबाजारी और होर्डिंग अर्थात् अवैध संग्रह करने का प्रयास करते हैं । शासन तो इस दिशा में प्रयत्न करेगा ही, परन्तु साथ ही साथ मैं सोचती हूं कि हमारा भी फर्ज हो जाता है कि हम शासन के साथ हाथ बटायें इस कार्य में, और जनता में एक जागृति पैदा कर दें तथा उस में उत्तरदायित्व की भावना बढ़ाने में सहायक हों । इसलिये मेरे विचार से अशासकीय ढंग पर विभिन्न राष्ट्रीय समितियां केन्द्रीय स्तर पर और प्रान्तीय स्तर पर कायम होने की जरूरत है ।

महिलाओं में कुछ ऐसे नैसर्गिक गुण हैं कि जिन का उपयोग, मेरे विचार से, इस आपत्ति काल में बड़ी अच्छी तरह किया जा सकता है । मुझे विश्वास है कि हमारी बहनें इस अवसर पर बिना किसी संकोच और बिना किसी रिजर्वेशन के आगे आयेंगी और अपनी सेवायें अधिक से अधिक मात्रा में नर्सिंग, फर्स्ट एड आदि कार्यों में सहर्ष अर्पण करेंगी । यह इस लिये भी आवश्यक हो जाता है कि कदाचित् यह लड़ाई बहुत दिनों तक चलेगी । मुझे आशा है कि हमारा स्वास्थ्य विभाग इस ओर अवश्य ध्यान देगा ।

मैं यह अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूं कि मैं उन भाइयों के लिये भी दो शब्द कहूं जो अपनी जान की बाजी लगा कर देश की रक्षा के लिये लड़ रहे हैं । भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारतीय सैनिक कभी मोर्चे से विमुख नहीं हुआ और आज भी वह विषम परिस्थितियों के बावजूद धोखेबाज पड़ोसी का सामना डट कर रहा है । हमें उन पर बड़ा गर्व है । पिछले दो महायुद्धों में हम ने जो लड़ाइयां लड़ीं वे तो अपनी लड़ाइयां नहीं थीं । हम दूसरे के लिये लड़ रहे थे । आज हम यह लड़ाई मातृभूमि की सुरक्षा तथा जनतंत्र को कायम रखने के लिये लड़ रहे हैं । इसलिये इस का महत्व सौगुना अधिक हो जाता है, और यही कारण है कि आज हमारे योद्धा भी पूरे उत्साह से लड़ रहे हैं और देश के अन्दर भी देश भक्ति की लहर चारों ओर फैलती नजर आ रही है । ऐसे समय में हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने उन बहादुर वीरों को यह आश्वासन दें कि उन के लड़ाई में बलिदान हो जाने अथवा अपंग होने की स्थिति में उन के परिवार की देखरेख करना हम लोगों की जिम्मेदारी होगी ताकि वे निश्चिन्त हो कर अपने कर्तव्य के पालन में जुट सकें ।

अध्यक्ष महोदय, मेरा एक सुझाव यह है कि देश का प्रत्येक समृद्ध परिवार लिखित रूप में यह वचन दे कि ऐसे वीरगति प्राप्त वीरों के कम से कम एक परिवार का वह भार उठायेगा ।

अपने वीर सैनिकों के प्रति अपनी श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप मैं एक छोटा सा यह भी सुझाव देना चाहती हूं कि मोर्चे से लौटे हुए सैनिकों को सोने से तोल कर वह सोना राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान किया जाये । इस प्रकार के सुझाव मैं ने अपने मुख्य मंत्री को भी भेजे हैं । मैं सोचती हूं कि इस से उन को पता चलेगा कि हमारे हृदय में उन के लिये क्या भावना है, और उन के मोराल को पुष्ट करने में और उन का उत्साह वर्धन करने में इस से बहुत सहायता मिलेगी ।

अन्त में हमारे वे जवान जो मातृभूति की बलि वेदी पर बलिदान हुए हैं, उन की ओर नतमस्तक हो कर अपनी श्रद्धांजलि भेंट करती हूं और जो भाई बहादुरी के साथ मोर्चे पर डट कर लड़ रहे हैं, उन के प्रति अपनी समस्त शुभ कामनायें देती हूं ।

†**श्री कपूर सिंह** (लुधियाना) : चीन के सम्बन्ध में सदन के माननीय नेता ने जो संकल्प प्रस्तुत किया है, मैं उस का समर्थन करता हूं परन्तु शर्त यह है कि श्री रंगा का संशोधन स्वीकार कर लिया जाना चाहिये । मेरा निवेदन यह है कि वर्तमान संकट के संदर्भ में सिखों का उल्लेख आना बड़ा ही जरूरी है । हिमालय की सीमा पर हमारे देश पर आक्रमण हुआ है, इस का सिखों से विशेष सम्बन्ध है । १७वीं शताब्दी में लद्दाख मुगल साम्राज्य का एक अंग था, परन्तु १७वीं शताब्दी के मध्य में महाराजा रणजीत सिंह ने उसे अपने सिख साम्राज्य में सम्मिलित कर लद्दाख को जरनल जोरावर सिंह की कमान में रखा गया था । महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के दो वर्ष बाद, राजकुमार नौ-निहाल सिंह ने ल्हासा से कर मांगा था । तिब्बत से यह भी कहा गया था कि वह पंजाब सरकार के परामर्श से कार्य करे और पीकिंग से कोई सम्बन्ध न रखे । १८४१ में पंजाबियों ने गारो नगर जीत लिया था २९ अगस्त १८४२ को सिख दरबार का झंडा तुकलाकोट पर लहराने लगा था । इस तरह पंजाबी तिब्बत के भीतर तक घुस गये थे । पंजाब की स्वतंत्रता का नाश हो जाने पर महाराज गुलाब अंग्रेजों की सहायता से काश्मीर का महाराजा बना । उसे भी तुरन्त अपनी सेनाऐं लेह में भेजनी पड़ी थीं । वहां उन्होंने चीनी सेनाओं को मार भगाया और १८४२ में सिख दरबार का करार हुआ । महाराजा गुलाब सिंह के प्रतिनिधि ने चीन के सम्राट् और दलाई लामा के प्रतिनिधि के बीच इस करार पर हस्ताक्षर किये गये ।

इस करार के अन्तर्गत यह निश्चित हुआ कि परम्परा से चली आ रही लद्दाख और ल्हासा की सीमायें कायम रखी जायेंगी और चाय तथा पश्मीना ऊन का व्यापार पूर्ववत लदाख के रास्ते होता रहेगा । मैं ने यह बात इस लिए विस्तार से बताई है कि इस मामले के इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जा रहा है । कहा जाता है कि जम्मू और काश्मीर तो डोगरा नरेश का तोहफा है । कई एक सरकारी क्षेत्रों में भी इस तथ्य को समर्थन देने का प्रयत्न किया गया है । सिखों को यह बात अच्छी नहीं लग रही ।

इसके अतिरिक्त इसलिए भी मैंने यह बताया है कि चीन सरकार सिखों द्वारा किये गये सारे कार्य के चिह्न मिटाना चाहती है । क्योंकि उन्होंने अपने बल अथवा तेज से प्राकृतिक सीमा निर्धारित कर दी थी ।

इन परिस्थितियों में सिख आज अपने देश की रक्षा करना अपनी जिम्मेदारी समझते हैं । आज जिस तरह हमारे पड़ोसी ने आक्रमण किया है, उसी तरह १८४५ ई० के शीतकाल में अंग्रेजों की सेनायें सिख राज्य में घुस आ ई थीं । ईस्ट इंडिया कम्पनी उस समय सिखों से समझौता कर

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री कपूर सिंह]

चुकी थी। उस समय सिखों ने जो वीरता दिखाई उसका वर्णन पंजाब के मुसलमान कवि शाह मुहम्मद ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में किया है। आज भी देश के सिख, देश पर मरने का अपना अधिकार मांगते हैं। उन पर जो साम्प्रदायिकता का आरोप लगाया जाता है वह गलत है, वे केवल अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहते हैं। पवित्र अमृतसर से लेकर कन्या कुमारी तक के भारत की रक्षा उनका पवित्र कर्तव्य है।

इन शब्दों से मैं श्री रंगा के संशोधन का समर्थन करता हूं। और मेरा मत है कि यदि यह स्वीकार न किया तो सदन के नेता का संकल्प यथार्थवादी नहीं। इसके साथ मेरा यह भी निवेदन है कि संकल्प में हमें उन राष्ट्रों के प्रति आभार प्रदर्शन करना चाहिए जिन्होंने हमें तुरन्त सहायता दी है।

†**श्री रामरतन गुप्त** (गोंडा) : चार दिन से इस समस्या पर जो विवाद हो रहा है उससे यह लगता है कि हम इस विकट समस्या को अभी समझ ही नहीं पाये। यदि हम अपनी पुरानी भूलों को याद कर उन्हें कोसते रहे तो क्या इस से हमें कुछ सहायता प्राप्त हो जायेगी? अब तो हमें अपने भविष्य का विचार करना है। हमें अब वर्तमान अनुभवों के आधार पर अपनी नीति बनानी होगी। हमें यह सोचना है कि आखिर चीन यह आक्रमण क्यों कर रहा है। क्या वह कुछ क्षेत्र लेना चाहता है? क्या हमें वह अपनी सैनिक शक्ति दिखाना चाहता है, क्या वह हमें संसार के समक्ष अपमानित करना चाहता है।

मैं सदन का ध्यान इस ओर आकृष्ट करवाना चाहता हूं कि माऊ ने चीन को बहुत तैयार कर लिया है। ऊपर से हमारे मित्र बन कर भीतर ही भीतर वह अपनी तैयारी करते रहे हैं। उसके प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत अपने पड़ौसियों से भी अलग अलग हो गया है। चीन का लक्ष्य अलग से चीन का साम्यवादी गुट बनाने का है, अतः यह आक्रमण कोई छोटी सी बात नहीं, इस पर हमें बहुत ही गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

इस समय भारत को वैसी ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा है जैसा कि पिछले युद्ध के दिनों में ब्रिटेन के सामने आई थी जबकि हिटलर ने यूरोप विजय की थी। यह इतिहास की पुनरावृत्ति हुई है। और हमें इतिहास की बहुत बड़ी परीक्षा में से निकलना है। चीन का हमारे देश पर हमला करने में कुछ गहरा उद्देश्य है। उन उद्देश्यों को समझने के लिये हमें अब तक की समस्त घटनाओं पर विचार करना होगा और साम्यवाद के इतिहास पर भी दृष्टि डालनी होगी। चीन और रूस के तथाकथित मतभेद मार्क्स अथवा लेनिन द्वारा प्रतिवादित सिद्धान्तों के सम्बन्ध में नहीं है वरन् अन्तःकालीन अवधि के दौरान उनकी क्रियान्विति से सम्बन्धित है।

इस संदर्भ में मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि चीन समस्त दक्षिण-पूर्व एशिया पर कब्जा करना चाहता है। वह तब तक वैसा नहीं कर सकता जब तक कि भारत की स्वतंत्रा कायम है और वह अन्य प्रजातंत्रों के लिये प्रेरणा का स्रोत बना रहता है। कूटनीतिक ढंगों का प्रयोग करते हुए, हो सकता है कि चीन इस समय हमारे साथ समझौते की बातचीत के लिए तैयार हो परन्तु वे हमारे साथ अन्तिम बातचीत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि भारत एक शक्तिशाली तथा संगठित राष्ट्र नहीं बन जाता। इस समय हमें समझौते की बातचीत पर अधिक जोर नहीं

†मूल अंग्रेजी में

देना चाहिए । हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह संघर्ष काफी लम्बा चलेगा । अतः हमें अपने अन्दर अनुशासन पैदा करके एक लम्बे युद्ध के लिये तैयारी करनी चाहिये ।

श्री ज० ब० सिंह : अब तो इसके लिए टाइम एक्सटेंड कर दिया गया है । काफी मैम्बर साहिबान बोल चुके हैं । कल दिन में बैठ कर अगर बाकी मैम्बर साहिबान को एकमोडेट किया जा सके तब तो हाउस को एडजर्न कर दीजिये, वर्ना टाइम एक्सटेंड कर दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : मेरा खयाल है कि आज हम सात बजे तक बैठ जायें और कल के लिये यह रखें कि जब तक सब बोल न लें, तब तक बैठे रहें । कल आखिरी दिन है ।

कुछ माननीय सदस्य : आज भी आठ बजे तक बैठें ।

अध्यक्ष महोदय : अच्छी बात है, आठ बजे तक बैठेंगे ।

श्री शिव नारायण (बांसी) : कल हम लोग साढ़े सात बजे तक बैठे थे । उन ३४ मैम्बरों में से एक नहीं बुलाया गया है सारे दिन के अन्दर ।

अध्यक्ष महोदय : यह बात गलत है । किसी साहब को शक है तो मेरे पास आ जायें और मैं उनको बतला दूंगा कि उन में से बहुत से बुलाये जा चुके हैं ।

श्री राधेलाल व्यास (उज्जैन) : पार्टी ह्विप ने एक लिस्ट दी थी, उसका क्या हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय : अब हम आगे चलें ।

श्री गहमरी : (गाज़ीपुर) : अध्यक्ष महोदय, यह बता दीजिये, किन किन लोगों को आठ बजे तक बोलने का मौका मिलेगा ।

अध्यक्ष महोदय : मैं उम्मीद करता हूं कि जितने यहां बैठे हैं, सब आठ बजे तक बैठे रहेंगे ।

†**श्री कोया** (कोज़ीकोडे) : जनाब, हमारा देश . . . . (**अन्तर्बाधाएं**)

†**अध्यक्ष महोदय :** हम आठ बजे तक बैठेंगे, फिर निर्णय करेंगे कि हमें और बैठना चाहिए ।

†**श्री कोया :** आज हमारे ऊपर उस पड़ोसी ने आक्रमण किया है जिस से हमारी दोस्ती रही है ।

(उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

हमारी सरकार सदैव शान्तिमय मार्गों के बारे में कहती रही है । चीन के सिद्धान्त भिन्न थे ।

हमारे ध्येय सचाई और न्याय पर आधारित हैं । अतः अन्त में विजय हमारी होगी ।

सारा देश सरकार के पीछे है । हम सरकार को यह बताना चाहते हैं कि भारतीय भूमि का एक इंच भी चीनियों के कब्जे में नहीं होना चाहिये । चीनियों को हिमालय से पीछे बाहर खदेड़ दिया जाये ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री कोया]

यह बात तो स्पष्ट है कि रूस तो चीन का साथ देगा। अतः जो देश हमें सहायता देना चाहते हैं उन से सहायता ले लेनी चाहिए। इस के रास्ते में हमारी तटस्थता की नीति नहीं ठहरनी चाहिए। सब लोग चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, ईसाई हो या सिख या पारसी हो सरकार के पीछे हैं।

श्री यमुना प्रसाद मंडल (जयनगर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे शान्ति प्रिय देश पर जो यह आघात हुआ है उसकी ओर सारे संसार के ४० देश नजर लगाये देख रहे हैं। आज एक ऐसा देश जो खूंख्वार कहा जा सकता है, जिस के लिए कठोर से कठोर शब्द भी व्यवहार किये जायें तो कम ही होंगे, हमारे शान्ति प्रिय देश पर आघात कर रहा है।

आज जब हमारे देश के सब से बड़े नेता अणुयुद्ध के किनारे पर आये हुए विश्व को शान्ति की ओर ले जाना चाहते थे, उस समय कम्युनिस्ट चीन ने कुछ और ही सोचा और अपने स्वप्न को पूरा करने की फिक्र की। बड़े बड़े कूटनीतिज्ञों का विचार है और उन्होंने देखा है कि उसके पास बड़े बड़े नक्शे हैं और उसके बड़े बड़े मन्सूबे हैं। वह एक हिमालयन स्टेट कायम करने का सपना देखता है, जो सपना सदा सपना ही रहेगा।

इतना ही नहीं, कूटनीतिज्ञों का तो यह भी कहना है कि उसका इरादा कुछ सीमा प्रदेश लेने का ही नहीं है, वह तो गंगा के किनारे तक आने की इच्छा रखता है। इसलिए आज सारे संसार की दृष्टि हमारी ओर लगी हुई है कि किस प्रकार एक शान्ति प्रिय देश पर, एक तटस्थतावादी देश पर, जो कि शान्ति में विश्वास रखता है और जिसने महात्मा गांधी के नेतृत्व में शान्तिपूर्ण तरीकों से अपनी स्वतंत्रता हासिल की उस पर एक ऐसे मित्र ने जिस पर उस देश ने भरोसा किया था पीछे से एक ट्रेचरस हमला किया है।

चाऊ एन लाई साहब यहां आये और उन्होंने दोस्ती का हाथ आगे बढ़ाया लेकिन उन्होंने आखिर में हमको झकझोर दिया और २० अक्तूबर की यह घटना सारी दुनिया के सामने है। इस विषम परिस्थिति में जिस प्रकार हमारे वीरों ने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है इसका कहीं मुकाबला नहीं मिलेगा।

विश्व के इतिहास में हमारे बहादुरों ने जो बहादुरी दिखाई है अद्वितीय है।

पहले विश्व युद्ध में और दूसरे विश्व युद्ध में हमारे जवानों ने दूसरे के अधीन रहते हुए भी जो वीरता दिखायी उसको आज भी लोग मानते हैं और विश्व को विश्वास है कि हिन्दुस्तान के सिपाही कितने बहादुराना तरीके से लड़ते हैं। ऐसे बहादुर देश पर यकायक जो छापा मारा गया, उससे देश की रक्षा करने में जो वीर वीरगति को प्राप्त हुए हैं उनके प्रति हमारा सिर बरबस झुक जाता है। इन वीरों के वीरगति प्राप्त करने से देश में एक उफान सा आ गया है और सारे देश में एक स्पांटेनियस रिवोल्यूशन सा आया मालूम होता है। आज गांवों में यह स्थिति है कि यहां से रेडियो दो दो और तीन तीन मील दूर पर हैं वहां भी लोग जाकर अपने वीरों का समाचार जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। आज यह स्थिति है कि अगर कोई समाज विरोधी कार्य करता है तो लोग जमा हो जाते हैं और कहते हैं कि आज वह जमाना नहीं है कि मुनाफाखोरी की जाए।

आज देश में अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए जो अभूतपूर्व जाग्रति हुई है वह सन् १९४२ में भी देखने को नहीं मिली थी। सन् १९४२ में तो हमने देखा था कि बहुत से लोग विदेशी शासक

के डर से चुप थे, लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज तो यह हाल है कि चार चार साल के बच्चे आते हैं और कहते हैं कि हमको भी लड़ाई के मोर्चे पर भेजो।

आज देश की ४४ करोड़ जनता शान्ति दूत पंडित जवाहरलाल नेहरू के पीछे हैं। और हमारे वीर सिपाही मोर्चे पर वीरता का जो परिचय दे रहे हैं उसका उदाहरण नहीं मिल सकता। एक एक हिन्दुस्तानी सिपाही ने मरते मरते सात सात चीनियों को घायल किया है और फिर बयानट से मारा गया। इससे पता चलता है कि इस महान राष्ट्र की भावना को संगीनों और गोलियों से नहीं दबाया जा सकता। वह हमारा ट्रेचरस एनीमी सुन ले और संसार के लोग सुन लें अगर चीन यह सोचता है कि बयानट्स और बुलेट्स से हमारी स्वतंत्रता को हड़प लेगा तो यह उसकी भूल है। हमारे इस पवित्र देश ने एक अभूतपूर्व ढंग से अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त की है। आज चीन सुन ले कि संसार के चालीस बयालीस देश हमारे प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित कर रहे हैं, और जो देश डिमाक्रसी के सिटाडिल हैं, जैसे कि यू०के०, यू० एस० ए० और कनाडा, वे आज इस ढंग से हमारी सहायता कर रहे हैं कि हमारी स्वतन्त्रता मजबूत हो और उसको अक्षुण्ण रखा जाए। सचमुच इन राष्ट्रों के प्रति भी हमारा सिर आभार से झुक जाता है। उन्होंने हमको संकट की घड़ी में सहायता देकर अपनी मित्रता का परिचय दिया है जैसा हमारे मित्र ने कहा था :

धीरज, धर्म, मित्र आदि की संकट काल में परीक्षा होती है। विपत्ति के समय में ही शत्रु और मित्र का पता चलता है। ऐसे समय में जो इन ४० राष्ट्रों ने हमारे प्रति अपनी सहानभूति दिखायी है यह सचमुच हमारे देश के लिये बहुत बड़ी सम्पत्ति है, इसको एक बहुत बड़ी थाथी समझा जा सकता है।

आज हमको अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये क्या करना है। हम को इस बारे में इंगलैंड से कुछ सीखना चाहिए। इंगलैंड के उस महारथी चर्चिल ने लड़ाई के दिनों में सब लोगों का काम बांट दिया था, पचास से साठ—(अन्तर्बाधा) हम लोग पहली लड़ाई लड़ रहे हैं और हमें पूरा अनुभव नहीं है इसलिए किसी से सीखने में हर्ज नहीं है। चर्चिल ने लड़ाई के समय में बच्चों के लिए, बूढ़ों के लिए, नवयुवकों के लिए, नारियों के लिए काम निश्चित कर दिया था और सारा देश एक डिसिप्लिंड हो कर लड़ता था। उसी तरह आज हमको लड़ना है और अपने कर्तव्य को समझना है और अपने कर्तव्यों को पूरा करना है। आज अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए देश का बच्चा बच्चा तैयार है। हमारी महिला सदस्याओं ने भी अपनी तैयारी प्रकट की है और कहा है कि महारानी लक्ष्मीबाई की तरह हम भी लड़ेंगी। यह बहुत अच्छा है कि इस समय २२ करोड़ महिलाओं का हमको सहयोग प्राप्त हो रहा है। हमको उनकी शक्ति से भी काम लेना चाहिए।

आज चीन शान्तिपूर्ण ढंग से नहीं सोचता। वह सोचता है कि जिस तरह उसने कोरिया में ७० हजार चीनियों को बयानट्स और बुलेट्स के सामने रख कर कामयाबी प्राप्त की उसी तरह यहां भी करेगा। चीन में लोगों के जीवन का मूल्य चींटियों के समान है। इस बार भी वह चाहता है कि बड़ी संख्या में अपने लोगों को इस दावानल में खत्म कर दे। वहां मानवता के लिए कोई स्थान नहीं है। आप चीन के इरादों का इसी से अन्दाज लगा सकते हैं कि उसने तिब्बत में बीस डिवीजन फौज रख छोड़ी है और हमारी उन सीमाओं को जो इंटरनेशनल बाउंडरीज़ कहलाती हैं और वाटरशेड के लिहाज से भी जो प्राकृतिक सीमा है उसका विरोध करना चाहता है। चीन का बराबर यह कहना और दावा करना कि ३८००० वर्ग मील वह नेफा में चाहता है और १२००० वर्ग मील भूमि उधर लद्दाख में भी चाहता है उससे साफ पता चलता है कि उसकी विस्तारवादी नीति कितनी बढ़ी चढ़ी है और इस तरह से बेजा दावा और अतिक्रमण करके वह भारत का कितना बड़ा इलाका अपना बतला कर हड़पने की कोशिश कर रहा है। जैसा कि अन्य माननीय सदस्यों ने कहा भी है और मैं भी

[श्री यमुना प्रसाद मंडल]

उन के साथ हूं कि हमें दृढ़ता और संगठित होकर इस चीनी बर्बरता का मुकाबला करना पड़ेगा और उन्हें अपनी पवित्र भूमि से खदेड़ने के लिए बहुत देर तक लड़ना पड़ेगा और उसके लिए बड़ी तैयारी हमें करनी पड़ेगी। मेरे अन्य मित्रों ने कहा भी है यह लड़ाइयां नहीं हैं, परन्तु एक युद्ध है और हमें इसे जीतना है। चूंकि सत्य और न्याय हम लोगों के पक्ष में है इसलिए यह निश्चित है कि अन्त में विजय सत्य की ही होगी।

यहां पर पड़ौसी देशों का भी वर्तमान संकट को लेकर जिक्र किया गया। सीलोन और बर्मा की यहां पर चर्चा हुई और वह ठीक ही हुई। मैं जिस दरभंगा जिले से आता हूं वह नेपाल की सरहद को छूता है और मैं अपने क्षेत्रों में गया तो लोगों ने कहा कि वहां के अर्थात् नपाल के राजा महेन्द्र बड़ दूरदर्शी हैं। आज ही राजा महेन्द्र का मैंने एक ववतव्य वर्तमान भारत—चीनी संघर्ष के सम्बन्ध में पढ़ा है जिसमें उन्होंने कहा है कि उनका देश सिनो-इंडियन बौर्डर डिस्प्यूट में बिल्कुल न्यूटरल है लेकिन आगे चल कर जो उन्होंने कहा है जब दो सांड लड़ रहे हैं तो मैं बछड़े की तरह नहीं रह सकता, अब यह कहां तक तटस्थतावादी नीति से मेल खाता है यह कहना मुश्किल है। जैसा कि श्री के० सी० पंत ने सुझाव दिया है मैं भी चाहता हूं कि भारत अपने पड़ौसी देश नेपाल के साथ अपने सम्बन्ध अधिक सुदृढ़ और मंत्रीपूर्ण बनाने के लिये एक गुडविल मिशन नेपाल भेजे और इस सद्भावना मिशन का नेतृत्व करने के लिए हमारे संसद्-कार्य मंत्री श्री सत्य नारायण सिंह बहुत उपयुक्त हैं। इसी तरह पाकिस्तान से भी जो कि हमारा पड़ोसी मुल्क है अपने सम्बन्ध सुधारने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

चूंकि मेरा समय समाप्त हो गया है इसलिय और अधिक न कहते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

†श्री **मलाईछामी** (पेटियाकुलम) : भारत पर चीन के अतिक्रमण से बड़ी भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसका सामना करने के लिए सारा देश प्रधान मंत्री के पीछे है।

हमने सदैव सचाई का समर्थन किया है। तटस्थता की नीति का अनुसरण किया है।

चूंकि हम सचाई की लड़ाई लड़ रहे हैं और हम सदैव अन्य देशों के साथ मित्रता का समर्थन करते रहे अतः हमें अन्य देशों का न केवल समर्थन ही प्राप्त है, परन्तु अमेरिका और ब्रिटेन से सैनिक सहायता भी मिली है। इसका तटस्थता की नीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। रूस से भी सैनिक सहायता जिसका इसने वचन दिया था मिलने की आशा है।

तटस्थता की नीति के साथ साथ हमें देश के भीतर भी एक उचित नीति का अनुसरण करना चाहिए ताकि जनता का हौसला कायम रहे। कृषि और औद्योगिक उत्पादन अधिक से अधिक बढ़ाया जाना चाहिये क्योंकि चीनियों को हम तभी भगा सकते हैं जब हमारी सेना के पास पर्याप्त भोजन, कपड़ा तथा सामान हो। प्रशासन के खर्च में किफायत की जानी चाहिए और तुरन्त लाभ देने वाली योजना को शुरू किया जाना चाहिए।

मूल्य अवश्य स्थिर किये जाने चाहिएं। उत्पादन बढ़ाने के लिए मजदूरों को काफी प्रोत्साहन मिलना चाहिए। समाज विरोधी तत्वों को कठोरता से दबाया जाना चाहिए। सतर्कता समितियां बनाई जानी चाहिएं। हर नगर तथा कस्बे में 'होम गार्ड' संगठित किए जाने चाहिएं और सब विद्यार्थियों को सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिए। प्रचार करने वाले विभाग के काम में भी सुधार किया जाना चाहिए।

---

†मूल अंग्रेजी में

हमारी फौज की अजमाई हुई शक्ति होते हुए भी, दुश्मनों को पराजित करने के राष्ट्र के दृढ़ निश्चय के होते हुए और देश की अखण्डता होते हुए हमारी अन्तिम विजय के बारे में कोई सन्देह नहीं है ।

श्री राधेलाल व्यास (उज्जैन) : उपाध्यक्षमहोदय, चीन ने हमारे शान्तिप्रिय देश पर जो बर्बर हमला किया है, उसको सिवाय एक राक्षसी हमले के कोई दूसरी संज्ञा नहीं दी जा सकती है । यह हमला केवल भारत के विरुद्ध नहीं है, बल्कि विश्व शान्ति, जनतंत्र और पंचशील के विरुद्ध एक हमला है । चाइना ने पंचशील के जिन अच्छे सिद्धान्तों को माना था, यह राक्षसी हमला करके उसने उन सब की हत्या कर दी है ।

युद्ध के जो पुराने तरीके थे, वे अब बदल गए हैं और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह लड़ाई दुनिया के सब से ऊंचे पहाड़ पर और हजारों फीट ऊंची चोटियों पर हो रही है । शायद दुनिया के इतिहास में ऐसे दुर्गम स्थान पर लड़ाई कभी नहीं लड़ी गई है । इसके अलावा हमें एक ऐसे दुश्मन का मुकाबला करना पड़ रहा है, जिसके हाथ अपने भाइयों के खून से रंगे हुए हैं । चाइना में जो सिविल वार हुई थी, उसमें भाई ने भाई का खून किया था । वैसे बर्बर लोगों का यह आक्रमण है । सब से ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र में, जहां आवागमन के साधन नहीं हैं, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए एक जबर्दस्त तैयारी करनी है । जब तक सारा देश एक हो कर, एक दिल से और साहसपूर्वक इस हमले का मुकाबला नहीं करेगा, तब तक इस युद्ध को जीतना जरा कठिन होगा ।

यह हमारे देश का सौभाग्य है और एक बड़ा शुभ चिह्न है कि देश के हर एक वर्ग के लोग, छोटे, बड़े, वृद्ध, नौजवान और स्त्री तथा पुरुष इस समय देश की स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार का त्याग करने के लिए तत्पर हैं । यहां भी मैंने देखा है कि सभी पार्टीज़ पूरी एकता के साथ हमारे नेता के पीछे देश की रक्षा के लिये दृढ़-निश्चय हैं । लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि यहां पर चाहे समर्थन और सहयोग प्रकट करने के आशय से भाषण हों, लेकिन बाहर जब हम देखते हैं कि कुछ और ही तरह की विचार-धारा का प्रचार होता है और शासन को कमजोर बनाने का प्रयत्न किया जाता है, तो ऐसा लगता है कि यह एकता अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकती, ठोस नहीं रह सकती । इस संकट काल में यदि एकता में ख़ामी रही, तो हम दुश्मन का मुकाबला पूरी ताकत के साथ करने में असमर्थ रहेंगे ।

इस लिए मेरा सुझाव है कि क्या इस इमर्जेंसी में यह आवश्यक नहीं है और भिन्न-भिन्न पार्टियों के नेताओं से मेरी अपील है कि इस वक्त सब राजनीतिक पार्टियों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए । मैं समझता हूं कि इस समय कांग्रेस, हिन्दू महासभा, जनसंघ और कम्युनिस्ट पार्टी आदि पार्टियों को डिजाल्व कर दिया जाये और सब झंडों को खत्म करके सब लोग राष्ट्र-ध्वज की छत्र-छाया में कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ें और देश की आजादी की रक्षा के लिए सब तरह का त्याग और बलिदान करने के लिए तैयार रहें । मैं समझता हुं कि अगर सब पार्टियां ऐसा करने के लिए रजामन्द न हों, तो वह समय आ सकता है कि इमर्जेन्सी में बाध्य हो कर शासन को यह कदम उठाना पड़े । पाकिस्तान में प्रेजिडेंट अयूब खां ने भी सब राजनीतिक पार्टियों को समाप्त किया था । उसके पीछे यह उद्देश्य था कि यदि शासन यह समझे कि देश की एकता को कायम रखना है और राजनीतिक दलों को अपनी अलग अलग विचार-धारा का प्रचार करने का मौका नहीं देना है, तो वह निश्चय कर सकता है कि सब पार्टियों और झंडों को खत्म करके देश की सारी जनता एक जगह इकट्ठी हो ।

[श्री राधेलाल व्यास]

उस स्थिति में प्रधान मंत्री के लिए अपने मंत्रि–मंडल में हेर–फेर करना बहुत जरूरी होगा। देश के बड़े अच्छे नेताओं और मंजे–मंजाए तथा अनुभव शील, योग्य व्यक्तियों को को उसमें लेना चाहिए, ऐसा मेरा सुझाव है। यह प्रसन्नता की बात है कि डिफेन्स पोर्टफोलियो रक्षा विभाग का चार्ज हमारे देश के एक नौजवान, उत्साही, अनुभवी और हिम्मत वाले सज्जन को दिया जा रहा है और हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं.....

श्री काशी राम गुप्त (अलवर): यह तो अखबारों की खबरें हैं।

श्री राधेलाल व्यास : मैंने भी तो यही कहा है कि उनको यह चार्ज दिया जा रहा है।

हमारे देश के जितने साधन हैं, उन सबको माबिलाइज करने की जरूरत है। आज जैसी संकट-कालीन स्थिति में जैसा वातावरण बनना चाहिए, इतने दिनों के बाद भी वह वातावरण नहीं बन पाया है।

यद्यपि देश के सब लोगों में त्याग और उत्साह की भावना है और वे त्याग कर रहे हैं लेकिन तैयारी बहुत जोरों से होनी चाहिए। हमारा हर एक आदमी, छोटा बड़ा, नौजवान, वृद्ध, स्त्री–पुरुष, यह अनुभव करे कि हमारे जवान पहाड़ी प्रदेश में जिस मुसीबत और कष्ट को सहन कर रहे हैं और जिस विकट परिस्थिति में लड़ रहे हैं, हम भी उससे दूर नहीं हैं। हर एक आदमी को इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम करने और मेहनत करने की जरूरत है।

इस सम्बन्ध में शिक्षा विभाग को कुछ सोचने की जरूरत है। स्कूलों के छोटे बड़े बच्चों, लड़के लड़कियों, के लिए जल्दी से जल्दी एक ऐसा कोर्स बनाना चाहिए और उनको ऐसी किताबें देनी चाहिएं कि उनमें उत्साह और साहस बढ़े, उनमें देश–भक्ति तथा मातृ–भूमि के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत हो। स्कूलों में ड्रिल कम्पलसरी होनी चाहिए। खेल–कूद के मैदान तो नहीं हैं, लेकिन ड्रिल हर जगह कम्पलसरी हो। स्कूलों में जाने वाले छोटे बड़े सब बच्चों के लिए घंटे, आध घंटे के लिए ड्रिल की व्यवस्था की जाय। इससे उनकी हिम्मत बढ़ेगी, उनमें जोश आयगा, उनका चरित्र बनेगा और उनमें डिसिप्लिन कायम होगी।

जहां तक नौजवानों का सम्बन्ध है, उनको होम गार्डज के लिए तैयार करना चाहिए। हमको अपने देश में जल्दी से जल्दी—दो चार महीनों में—पचास लाख के करीब ऐसे नौजवानों को तैयार कर लेना चाहिए, जो हथियार चलाना सीखें और उसमें दक्ष हो जायें। यह एक बहुत जरूरी काम है। इसी तरह हमारी माताओं और बहनों को भी आवश्यक ट्रेनिंग देने की जरूरत है।

जहां तक हमारे साधनों का सम्बन्ध है, हमें अपने देश में अधिक हथियार तैयार करने में तेजी लानी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि हमारे यहां आटोमटिक वैपन्ज बनने शुरू हो गए हैं और हमारी आर्डिनेंस फैक्ट्रीज में हथियारों की तैयारी में दुगनी तिगुनी वृद्धि हो गई है। लेकिन यह काफी नहीं है। हमें अपने देश में आर्मामेंट्स इंडस्ट्रीज बढ़ाने की जरूरत है। दुनिया में जो हमारे मित्र राष्ट्र हैं, जैसे जापान, यू० के०, यू० एस० ए०, वेस्ट जर्मनी और इटली आदि उनको एपरोच कर के इस बात की व्यवस्था करनी चाहिए

कि वे हमारे यहां आर्मामेंट्स या गोला–बारूद तैयार करने की इंडस्ट्रीज और कैमिकल इंडस्ट्रीज को स्थापित करने के लिए हम को साधन और सहयोग दें। अगर केन्द्रीय शासन उसके लिए पैसा खर्च करने की स्थिति में न हो, तो वह हर राज्य में एक एक इंडस्ट्री लगाने की व्यवस्था करे। मैं समझता हूं कि सब राज्यों की प्रजा सहर्ष सारी पूंजी जुटाने के लिए तैयार होगी।

इस संकट–काल में देश में आस्टेरिटी मेजर्ज लागू करने और अपना खर्च कम करने की ज़रूरत है। शासन को भी मजबूत करने की जरूरत है। प्रति-वर्ष हम देखते हैं कि इस सदन में बजट पर वाद–विवाद के अवसर पर भ्रष्टाचार आदि की बातें कही जाती हैं। उसको समाप्त किया जाना चाहिए। इस आशय का एक सर्कुलर निकालना चाहिए कि अगर इस समय कोई भी आदमी इस तरह का काम करते हुए पाया जायगा, तो उसको देश–द्रोही समझा जायगा और उसको बड़ी से बड़ी सजा दी जायगी।

छुट्टियां समाप्त की जानी चाहिए। अदालतों और हाई कोर्ट्स में दो दो, तीन तीन महीने की जो लम्बी छुट्टियां होती हैं, उन को समाप्त कर देना चाहिए। कारखानों के काम के घंटे आठे से बढ़ा कर दस कर देने चाहिए। आफिसिज में भी एक दो घंट बढ़ा देने चाहिए। लोगों को मेहनत करनी चाहिए।

श्री स० मो० बनर्जी : (कानपुर): डिफेंस के कारखानों में बारह घंटे काम होना शुरू हो गया है।

श्री र.धेलाल व्यास : सिविल आफिसिज में भी शुरू होना चाहिए। अगर हमारे जवान दिन–रात काम करते हैं, तो हमको भी बताना है कि आज हम भी दिन–रात मेहनत करेंगे। किसान, मजदूर, व्यापारी, सरकारी कर्मचारी, इन सबको मेहनत करनी है और जवानों को यह अनुभव कराना है कि हिन्दुस्तान के सब लोग उनकी कठिनाइयों से परिचित हैं और उनकी तरह त्याग करने के लिए तैयार हैं।

आज जगह जगह से ऐसी खबरें आ रही हैं कि फलां चपरासी ने यह दिया, उसने वह दिया। लेकिन जहां तक हमारे प्रशासन के सबसे बड़े आफ़िसर्ज, आई० ए० एस० और आई० सी० एस० के सदस्यों का सम्बन्ध है, उन्होंने सिर्फ एक दिन की तन्ख्वाह राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दी है और वे अपने वेतन का पांच प्रतिशत डिफेंस वांड्स वगैरह में इनवेस्ट करेंगे। यह कोई अच्छी बात नहीं है। वे भी दिल बड़ा करें और ज्यादा त्याग करें। वे साल में एक महीने को तनख्वाह राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दें और दस प्रतिशत डिफेंस वांड्ज वगैरह में इनवेस्ट करें। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो यह बहुत प्रशंसनीय कार्य होगा।

श्री लहरी सिंह (रोहतक): डिप्टी स्पीकर साहब, आज सारा देश चीन के हमले का मुकाबला करने की तैयारी कर रहा है। मेरा ताल्लुक ज्यादातर पंजाब से है। जब से प्राइम मिनिस्टर ने अपील की है, पंजाब में हर एक गांव में छोटे से छोटा जमींदार और किसान बड़ी तादाद में रकम दे रहा है। जहां जहां भरती होती है, जहां जहां रेक्रूटिंग आफिसिज हैं, वहां लोग हजारों की तादाद में आ रहे हैं, हालांकि उनमें से काफी मायूस होकर वापस जा रहे हैं, क्योंकि सबको नहीं लिया जाता है, जिस के पीछे शायद कोई पालिसी

[श्री जहरी सिंह]

होगी। पंजाब से जवान और आफिसर्ज बहुत बड़ी तादाद में फ्रंट पर गए हैं। यह कोई नई बात नहीं है। पुराने जमाने से पंजाब में ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग रेक्रूट होते रहे हैं।

गवर्नमेंट की पालिसी की वजह से हमारी चौदह हजार मील जमीन का नक्शा बदल गया, लेकिन फिर भी कहा जाता है कि क्रिटिसाइज नहीं करना चाहिए। मैं किसी की नुक्ता चीनी नहीं कर रहा हूं, बल्कि मैं प्रधान मंत्री को पूरी तरह सपोर्ट करता हूं, लेकिन मैं कहना फौज एक दिन में तैयार नहीं होती है। अब जाड़ा है, इसलिए अभी लड़ाई तेज नहीं होगी। इन तीन महीनों में देश भर के सब एबल-बाडिड पर्सन्ज को माड्रेन वैपन्ज की ट्रेनिंग देकर तैयार कर दिया जाय। आपको मानना चाहिए कि चीन कोई ऐसा मुल्क नहीं है कि जिसके साथ मामूली लड़ाई कर के हम अपनी हिफाजत कर लेंगे और अपना इलाका वापस ले लेंगे।

हमारे प्राइम मिनिस्टर और डिफेंस मिनिस्टर ने पहले यह कहा था कि नीफा में कोई गड़बड़ नहीं है। सितम्बर के सेशन में जिम्मेदारी के साथ यह कहा गया था कि नीफा में कोई खतरा या गड़बड़ नहीं है। जब प्रधान मंत्री लंका जाने लगे, तो उन्होंने कहा कि चीनी फौजों को अपने इलाके से निकाल दिया जायगा। इससे हमको तसल्ली हो गई थी। मैं आपको बताना चाहता हूं कि स्वर्गीय सरदार पटेल जो कहते थे, वह पूरा हो जाता था। मैं फिर अर्ज करना चाहता हूं कि यह कोई नुक्ताचीनी नहीं है। गवर्नमेंट को हमारी पूरी सपोर्ट है। हमको पता है कि कितने नौजवान मारे गए हैं। हमारे घरों में तार आ रहे हैं। वे कहते हैं कि पंचशील ने हमको मार दिया। बेचारे आखिरी वक्त तक बंदूक चलाते रहे उनका राशन खत्म हो गया, सब कुछ खत्म हो गया, उनका इक्विपमैंट खत्म हो गया, उनके पास कारतूस नहीं रहे, और उनको आपने पीछे से मदद न भेज कर मरवा दिया। लोग कहते हैं कि इस गवर्नमैंट ने उनको मरवा दिया है, बंदूकों के साथ गोलियां न दे कर और पीछे से मदद न भेज कर।

यह कहा जाता है कि चीन के पास साठ लाख फौज है, चालीस हजार वहां पर है तो आप किस तरह से उसका मुकाबला कर सकते हैं। क्या आपकी नेचर मदद के लिए आएगा? कौन आपकी मदद करेगा। इस तरह से काम नहीं चल सकता है। प्रधान मंत्री जी को सोचना चाहिये कि हमारा मुकाबला मामूली दुश्मन से नहीं है। हमारा मुकाबला उसके साथ है जिसके पास कितने ही लाख फौज है, कितने ही हवाई जहाज हैं और दूसरी भी तरह से जो लड़ाई के लिए बहुत पहले से तैयारी करता रहा है। आपका जो मिग विमान खरीदने का सौदा था वह भी नहीं पटा है। कब उनको यहां पर मैनुफैक्चर किया जाएगा और कब दूसरी बातें होंगी, इसका कुछ पता ही नहीं है। इस वास्ते जरूरत इस बात की है कि ज्यादा से ज्यादा एबल-बाडीड परसंज को आप ट्रेन करे, उनको मिलिट्री में लें, उनको तैयार करें। महाराष्ट्र में कितने ही लड़के हैं, राजपूताना भरा पड़ा है, हमारे डोगरे, राजपूत, सिख, जाट कितनी ही तादाद में आपको मिल सकते हैं। खुशी से वे इसके लिए तैयार हैं, उनको जो तीन महीने की ट्रेनिंग दी जानी है, उस दौरान में वे अपनी तनख्वाह भी फोरगो करने के लिए तैयार हैं। इस तीन महीने के बाद उनकी एक ट्रेंड सेना आपकी डिसपोजल पर हो सकती है। पंजाब के चीफ़ मिनिस्टर ने कुछ काम किया है और उन्होंने कहा है कि स्टुडेंट्स को ट्रेनिंग दो। मैं समझता हूं कि आपको ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोगों को ट्रेन करना चाहिये। यह डंडे की ट्रेनिंग नहीं है जो उनको दी जानी है, थ्री नाट थ्री की नहीं है जो दी जानी है, माडर्न वेपंज आफ वार चलाने की उनको आप

ट्रेनिंग दें । पार्टिशन के बाद से तो लोग काफी पढ़े लिख गए हैं और हमारी आबादी भी काफी है । पहल लोग पढ़े लिखे नहीं हुआ करते थे, आज ग्रेजुएट भी आपको मिल सकते हैं, दसवीं पास भी मिल सकते हैं, आठवीं पास भी मिल सकते हैं और इतनी तादाद में मिल सकते हैं कि अगर आप चाहो तो अपनी सेना को भी पचास साठ लाख तक ले जाओ । यह सेना आप देश में तीन महीने में तैयार कर सकते हैं । जब आप कहते हैं कि ८ सितम्बर वाला जगहों पर पीछे हट जाओ, तो इसका क्या मतलब है । आपके मुंह से इस तरह की बात को सुन कर हमें शर्म आती है । यह आठ सितम्बर वाली बात का क्या मतलब है अगर चीन की आबादी काफी बढ़ी हुई है तो हमारी भी कम नहीं है । हिन्दुस्तानी फौजें हमेशा लड़ती रही हैं, हमेशा उन्होंने बहादुरी दिखाई है, हमेशा उन्होंने दुश्मन को पछाड़ा है । पार्टिशन के बाद हिन्दुस्तान बहुत बड़ा मुल्क बन गया है और इतना बड़ा वह कभी नहीं हुआ था । न इस में राजा हैं, न महाराजा हैं और न ही नवाब हैं । सारे हिन्दुस्तान में एक गवर्नमेंट है और वह है सेंट्रल गवर्नमेंट । अशोक के समय में ऐसा नहीं हुआ और न ही पहले हुआ । आपके पास सभी रिसोर्सिस हैं, सारा कंट्री आपके साथ है और फौज भी हमारी मामूली फौज नहीं है । यह वह फौज है, जिस को अपने जौहर दिखाने का मौका १९१४ में और फिर १९३७ में जब कि लास्ट वर्ल्ड वार हुई थी, बर्मा फ्रंट पर जापानी फौज से लड़ कर दिखाने का मिला था । हमारी फौज को मामूली ट्रेनिंग नहीं मिली हुई है, यह वेल ट्रेंड है। किसी भी तरह की कोई कमी नहीं रही है । कमी इस बात की रही है कि पिछले चौदह पंद्रह साल से हम पंचशील का प्रचार करते आ रहे हैं । १९४७ में जब हम स्वाधीन हुए, हम को तैयारी करनी चाहिये थी । जिस तरह का हमारा पड़ौसी ताकतवर है, उस तरह का हमें भी बनना चाहिये था । वह हमने नहीं किया । पंचशील का ही नारा हम लगाते रहे । यह क्यों करते रहे, यह समझ में नहीं आता है ।

तिब्बत बड़ा तकड़ा मुल्क था । उसको चीन खाना चाहता था । उसको वह खा जाये, इसमें हमारा भी हिस्सा रहा है । हमने भी कहा है कि इसको मार दो, इसको ख़त्म कर दो, इसकी आजादी को खत्म कर दो । दस्तखत होने के बाद हमने कोई स्पोर्ट भी नहीं दी बल्कि यहां दिल्ली में बैठ कर पंचशील के नाच होते गए । चाऊ-एन-लाई और उनके साथ मिल कर पंचशील का गुणगान किया गया, पंचशील का नाच किया गया । क्या लूट पड़ी थी कि तिब्बत को आजादी को इस तरह से खत्म करने दिया जाता? लेकिन ऐसा हुआ और आज हम देखते हैं कि चीन हमारा चौदह हज़ार वर्ग मील का इलाका हड़पे बैठा है । यह कोई मामूली बात नहीं है । जब हम एक नेशन हैं और हमारी बहुत बड़ी नेशन है, हमारे यहां एक गवर्नमेंट है, डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट है, कोई राजा महाराजा नहीं है, तमाम ताकत आपके हाथ में है, एक डिसिप्लिंड आर्मी आपकी डिसपोज़ल पर है जिसको अंग्रेज़ छोड़ गए हैं और यह सब कुछ होते हुए भी अगर चौदह हज़ार वर्ग मील को चीन दबा जाय, तो ताज्जुब और अफसोस हुए बिना नहीं रहता है ।

हमारे भाई कहते हैं कि गवर्नमेंट की नुक्ताचीनी मत करो । मैं कहना चाहता हूं कि हम पंडित जी को पूरी स्पोर्ट देंगे और तब तक देते रहेंगे जब तक इस इलाके को वापिस नहीं ले लिया जाता है । वह इशारा करें कि किस प्रकार की मदद हम से वह चाहते हैं और हम देने के लिए तैयार हैं । लेकिन उनको भी कुछ सोचना चाहिये । उनको यह नहीं कहना चाहिये था कि लद्दाख में तो घास तक नहीं उगती है । देहातों में आप जायें, आप लोगों को यह कहते हुए सुनेंगे कि किस तरह की स्पीचिज़ हो रही हैं जिन में कहा जा रहा है कि घास तक नहीं होती है । आपको चाहिये था कि आप बोर्डर को मजबूत करा । आप देखें कि औरंगजेब

के समय यह बोर्डर मजबूत था। महाराजा रंजीत सिंह के समय में मजबूत था। अकबर ने बोर्डर को मजबूत किया। अंग्रेजों के समय में इसको मजबूत रखा गया। आप तिब्बत की हिस्ट्री को पढ़िये। कर्जन की हिस्ट्री को पढ़िये। उन्होंने तिब्बत के लिए सब कुछ किया। लेकिन हमने क्या किया? हम पंचशील का नाच कर रहे हैं और पंचशील की दुहाई दे रहे हैं। तिब्बत खत्म किया जा रहा है और हम चुप हैं।

आप कहते हैं कि हम नान-एलाइनमेंट की पालिसी पर चलते रहेंगे। इसका क्या मतलब है? दुनिया में क्या कोई आपकी बातों में आपका ख्याल है, आ जाएगा? उनके भी स्पाइज़ कम नहीं हैं। सवाल यह है कि हम को एक ताकतवर एनीमी का मुकाबला कैसे करना है और ऐसा ताकतवर एनीमी जो कि फुल्ली इक्विप्ड है। चाऊ-एन-लाई ने कह दिया है कि कोई ताकत नहीं है जो कि इलाका उनके कब्ज़ में है, उसको वापिस ले सके। वह तो यह एलान करते हैं और हम आठ सितम्बर का गाना गाते जा रहे हैं। हमने क्या तैयारी की है, इस इलाक को वापिस लेने की। हमारे पास हवाई जहाज़ कितने हैं, अगर उनकी कल को जरूरत पड़ जाए? आपको चाहिये कि आप एलाइज़ तलाश करें। इतना रुपया आपके पास नहीं आया है बावजूद अपीलें करने के। जो कारखाने हैं वे मिनटों में तैयार नहीं हो सकते हैं। किस तरह से आप दुश्मन का मुकाबला करेंगे। जब लड़ाई चलेगी तो यह मामूली आटोमेटिक वेपंज़ के साथ नहीं लड़ी जाएगी, मार्टर की नहीं रहेगी, यह हवाई हमलों तक पहुंचेगी। आप चीन पर यकीन नहीं कर सकते हैं। मुम्किन है कल वह हवाई जहाज़ों से अटेक करे। आपके पास न पुर्जे हैं और न कुछ और। इतना होने पर भी आप कहते हैं कि हम नान-एलाइंड रहेंगे। एलाइंड होने का मेरा मतलब यह नहीं है कि आप किसी मिलिट्री पेक्ट में शामिल हो जायें। मेरा मतलब यह है कि अगर मलाया पर हमला हो, हम पर हमला हो, बर्मा पर हमला हो, या जितनी भी डेमोक्रटिक कंट्रीज़ हैं, उन में से किसी पर हमला हो, तो उनको यकीन दिलाओ कि हम सब इकट्ठा मरेंगे। बर्मा, मलाया, थाईलेंड किसी पर भी हमला हो, हम को एक दूसरे की मदद करनी चाहिये। इस नान-एलाइंड शब्द का मतलब यह क्या है। क्या आपको रूस ने कोई हथियार दे दिये हैं? मिग भी अभी तक नहीं दिए हैं और जब देगा तो उसी तरह के टूटे फूटे दे देगा जिस तरह से टूटी फटी गाड़ियां रंग करके, इलेक्शन के दिनों में दे दी जाती हैं जो दो कदम चलने पर खड़ी हो जाती हैं। रामलीला ग्राउंड में तथा दूसरी जगहों पर नान-एलाइंड होने की दुहाई दी जाती है। इस तरह से काम नहीं चल सकता है। नई नई किस्म के हथियार तैयार हो चुके हैं। अब पुराने हथियारों से काम नहीं चल सकता है। इस चीज़ को रीयलाइज़ करके आप को चाहिये कि आप रीयलिस्टिक हों। मैं प्राइम मिनिस्टर साहब के सामने सच्ची बात रख रहा हूं और आपको भी चाहिये कि आप सच्ची बात रखें। हम एलार्मेंस नहीं चाहते। लेकिन आप सोचें कि किस दुश्मन से वास्ता पड़ा है। हवाई जहाज़ बीस बीस लाख का आता है, कोई आपको वसे ही दे देगा। मिलिट्री पेक्ट न हो, लेकिन अगर किसी डेमोक्रटिक कंट्री पर अटेक होता है तो हम सब एक साथ मरें। १९१४ की लड़ाई अंग्रेज़ ने एलाएंस करके जीती। लास्ट वार में उसने एक तरफ रूस को काबू किया और दूसरी तरफ अमरीका को किया। कोई उसका नुक्सान हो गया? इन लड़ाइयों में वह विजयी रहा है। हमारे पास है तो कुछ नहीं लेकिन हम कहे जाते हैं कि हम एलाइंड नहीं करेंगे। नहीं करेंगे तो मरेंगे ही। इतनी दुहाई नान-एलाइनमेंट की आप न दो। एलाएंस के माने समझा दो। इसकी डेफीनीशन में थोड़ा फर्क कर दो। बिना एलाएंस के हम मर जायेंगे। अंग्रेज़ को यह करना पड़ा था। आज जो खतरा है वह मामूली नहीं है और इसका हमें पूरी शक्ति के साथ और जिस तरह भी हो सके मुकाबला करना है।

†श्री सोनावने (पंढरपुर) : हमारे प्रधान मंत्री ने चीनियों को यह कहा है कि यदि चीन ८ सितम्बर वाली स्थिति को मान लें तो हम उस से समझौते की बातचीत करने के लिये तैयार हैं। यह प्रस्ताव तो ठीक है परन्तु यह बात स्पष्ट कर दी जानी चाहिये कि यह प्रस्ताव केवल तनाव कम करने के लिये है। यदि युद्ध विराम रेखा को मान लिया जाय तो चीनियों को पीछे हटाने में कठिनाई होगी। हमें युद्ध विराम का आदेश नहीं देना चाहिये। केवल तनाव कम करने के लिये बातचीत करनी चाहिये।

चीन के अतिक्रमण से विश्वयुद्ध को खतरा है। अतः यह बात समझ में नहीं आती कि रूस इस मामले में चीन पर क्यों प्रभाव नहीं डालता कि वह भारत की भूमि से हटे।

हम संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, कैनेडा, फ्रांस और अन्य देशों, जिन्हों ने हमें सहायता दी है उन के आभारी हैं। हम उन जावानों को जिन्हों ने देश के लिये इतनी कुर्बानी दी है श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हमारे पास समय अधिक नहीं, अतः हमें शीघ्रता से तैयारी करनी चाहिये। सोने का कारोबार लोगों के हाथ में नहीं रहना चाहिये। इस का राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिये। हमें अपनी वायु सेना को मजबूत बनाना चाहिये। सीमान्त राज्यों में बहुत बड़ी संख्या में हवाई हमले में काम आने वाली पनाहगाहें बनाई जानी चाहियें। गैर जरूरी खर्च बन्द कर दिये जाने चाहियें। गांवों में जा कर लोगों को उत्साह दिलाने के लिये छोटे छोटे दल बनाये जाने चाहियें। नर्सिंग ट्रेनिंग केन्द्र खोले जाने चाहियें।

प्रतिरक्षा परिषद् (डीफेंस कौंसल) में श्री जगजीवन राम और जनरल करिअप्पा को भी ले लेना चाहिये। खाद्यान्न उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण है और किसानों को अपेक्षित सहायता दे देनी चाहिये।

†श्री सुरेन्द्रपाल सिंह (बुलन्दशहर) : स्वतंत्र भारत के १५ वर्ष के इतिहास में सबसे भयानक समय है। चीनियों ने हमारे साथ विश्वासघात किया है। दोस्ती के बदले हमारे ऊपर आक्रमण किया है।

यह कहना गलत है कि हम लड़ाई के लिये तैयार नहीं थे। इतने बड़े आक्रमण के लिये तैयार नहीं थे।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि लोकतंत्र राज्य देर से जागृत होते हैं, परन्तु एक बार जागृत होने पर विजय उन की होती है। द्वितीय महायुद्ध में इंग्लैण्ड के साथ ऐसा ही हुआ।

सारा देश जवाहरलाल नेहरू के साथ है। वह ही एक व्यक्ति है जो सफलता की ओर हमें ले जा सकता है।

पहले जो हारें हुई हैं उस से घबराना नहीं चाहिये। अन्त में विजय हमारी होगी।

जिन मित्र देशों ने हमारी सहायता की है हम उन के आभारी हैं। हमें अपना प्रतिरक्षा उत्पादन बढ़ाना चाहिये।

देश के आर्थिक विकास की गति को कायम रखने की कोशिश करनी चाहिये। युद्ध की अच्छी प्रकार लड़ने के लिये सर्वतोमुखी आर्थिक उन्नति अनिवार्य है। कुछ गैर जरूरी योजनायें छोड़ी जा सकती हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

किन्तु साथ ही वर्तमान योजना का काम चलना रहना चाहिये । आज के युद्ध का सबंध यौद्धिक गतिविधि से है । हमारे सिपाही संसार की किसी भी सेना से लड़ने का समर्थ्य रखते हैं किन्तु उन्हें शस्त्रास्त्र और अन्य सामग्री का संभरण करना हमारा कर्तव्य है ।

इस संबंध में हमारी वायु सेना बहुत महत्वपूर्ण काम कर रही है । किन्तु वायुबल अभी अपर्याप्त है और सरकार को चाहिये कि परिवहन जहाज और लड़ाके जहाज जहां से भी मिलें उन्हें प्राप्त करलें।

प्रादेशिक सेना को दूसरी प्रतिरक्षा पंक्ति को सुदृढ़ बनाने के लिये पूरी तरह प्रशिक्षत करना चाहिये ।

†**श्री राजा राम** (कृष्णगिरि): चीन का आक्रमण न तो अप्रत्याशित है और न ही आकस्मिक। चीन में वर्षों से साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां पैदा हो रही हैं । तिब्बत पर कब्जा कर लेने के बाद से उनका हमारे प्रति व्यवहार शत्रुतापूर्ण रहा है और अब उन्हों ने हम पर आक्रमण कर दिया है । मेरा दल ऐसी परिस्थिति में प्रधान मंत्री का पूरा सहयोग देने के लिये तैयार है । यह अघोषित युद्ध न जाने क्या रूप धारण कर ले । हम चीनियों पर अत्यधिक विश्वास करते रहे हैं जोकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गलत नीति है ।

हमारी सेना वीरता में महान है । दूसरे महायुद्ध के बहुत से वीर सेनानी भूतपूर्व सैनिक हैं जो आज भी अपनी सेवायें अर्पित कर रहे हैं । हमें उन की सेवाओं का उपयोग करना चाहिये ।

मुझे प्रधान मंत्री के भाषण के इस कथन से प्रसन्नता हुई है कि योजना को समाप्त नहीं किया जायेगा । योजना का काम निरन्तर होना चाहिये और मूल्यों को नहीं बढ़ने देना चाहिये ।

दुश्मन को भारत की धरती से निकालने के लिये सरकार को सभी ओर से पूरा सहयोग मिला है और प्रतिरक्षा निधि में खूब चंदा इकट्ठा हो रहा है ।

इस संबंध में मैं यह अनुरोध भी करना चाहता हूं कि कृषि उत्पादन को बढ़ाया जाये । सभी राजनैतिक विचारधाराओं के नेताओं को कृषकों से अनुरोध करना चाहिये कि वे इस युद्ध में अपनी भूमिका का पालन करे । सभी राजनैतिक दलों में सहयोग की भावना पैदा करनी चाहिये । यह दुख की बात है कि पीकिंग ने सभी लोकतंत्रात्मक साधनों को तिलांजलि दे दी है ।

हम चाहते हैं कि हर सुबह हमें शुभ अवसर मिले और हम में से आदर्श व्यक्ति इस आक्रमण का मुकाबला करते रहें ।

श्री क० ना० तिवारी (बगहा) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने जो बड़ी कृपा कर के यह अवसर मुझे बोलने का दिया है, इस के लिये मैं आप का आभारी हूं ।

सब से पहले मैं उन जवानों के प्रति जो खेत आये हैं सरहद के ऊपर, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । यहां से गत बैठक के बाद मैं अपने कांस्टीट्यूएंसी का जब दौरा करने गया और लोगों से मिला तो उन्हों ने दो सन्देश मेरे द्वारा प्राइम मिनिस्टर को भेजे हैं । पहला सन्देश यह था कि आज एक एक बच्चा, एक एक बूढ़ा, एक एक नौजवान भारत के प्रधान मंत्री के पीछे है । दूसरा सन्देश यह है कि उन की समझ में यह बात नहीं आती, वह इस को प्रधान मंत्री से जानना चाहते हैं, कि

†मूल अंग्रेजी में

यह ८ सितम्बर कौनसी बला है। हम ८ सितम्बर का बार बार जिक्र करते हैं और कहते हैं कि अगर चीन उस स्थान तक हट जाय जिस पर कि वह ८ सितम्बर को था तो उस के साथ बातचीत की जा सकती है। वे लोग प्रधान मंत्री से जानना चाहते हैं कि वह ८ सितम्बर वाला स्थान मैकमोहन रेखा के अन्दर पड़ता है या नहीं। अगर वह स्थान मेकमोहन रेखा के अन्दर पड़ता है, तो उन लोगों ने दिवेदन किया है कि उस पर कोई वार्ता नहीं होनी चाहिये, और खास कर उस हालत में जबकि चायना ने किसी भी बात को नहीं माना है और वह आगे बढ़ता गया है। उस से बातचीत उसी वक्त होनी चाहिये जब वह मैकमोहन रेखा से अलग हट जाय और यह ८ सितम्बर की बात नहीं रहनी चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय, अब तक यह देखा जाता रहा है कि ऐसे मौकों पर आगे सरकार रहा करती थी, उस के पीछे उस का आरगेनाइज़ेशन और तब जनता। इस बार यह बात देखने में आई है कि जनता सब से आगे है, उस के बाद सरकार का आरगेनाइज़ेशन है और अन्त में सरकार है। आज जनता का जो रुख है, आज जनता में जो भावना और उत्साह है वह इसीलिये है कि वह समझती है कि दुश्मन आगे बढ़ता चला आ रहा है और हमारा यह धर्म है, एक एक बच्चे का यह धर्म है, कि हम उस को अपनी मातृभूमि से खदेड़ दें।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

अध्यक्ष महोदय, बहुत से लोगों का यह खयाल है कि यह चन्द हजार वर्ग मील सीमा की भूमि का झगड़ा है, लेकिन विनोबा जी ने कहा है कि यह सरहद की चन्द हजार मील भूमि का झगड़ा नहीं है, यह सैद्धान्तिक लड़ाई का मामला है, यह दो विचारधाराओं का, दो पद्धतियों का मामला है। हमारे प्रधान मंत्री ने कहा है :

इसे केवल अतिक्रमण नहीं कहा जा सकता है यह भारत पर खुल्लमखुल्ला आक्रमण है। ऐसी हालत में जब कम्प्रोमाइज़ की बात कही जाती है तो यह बात आम जनता की समझ में नहीं आती और हम लोगों की भी समझ में नहीं आती। कम्प्रोमाइज़ का मतलब होता है कुछ लेन देन। जब सरकार कम्प्रोमाइज़ की बात करती है तो आम जनता के दिल में यह बात आती है कि क्या सरकार हमारी सरहद के लेनदेन की कुछ बात करेगी। क्या यहां भी हम उसी प्रकार की स्थिति में पड़े रहेंगे जैसेकि काश्मीर में पड़े हैं ? इसलिये सरकार द्वारा और खास कर प्रधान मंत्री द्वारा इस बात की सफाई हो जानी चाहिये ताकि जनता के दिमाग में किसी तरह की गलतफहमी न रह जाय।

अध्यक्ष महोदय, एक और बात की ओर मैं आप का ध्यान दिलाना चाहता हूं। लोगों को बराबर तैयार रहने के लिये कहा जा रहा है, आम जनता को काम करने के लिये चेतावनी दी जा रही है और इस मौके पर तैयार रहने के लिये कहा जा रहा है। लेकिन जनता को और हम लोगों को एक बात का डर है कि जो लड़ाई के सम्बन्ध में काम होना है उस के सम्बन्ध में कहीं ऐसा न हो कि लालफीता शाही ही चले।

नेपोलियन ने कहा है : कि युद्ध में समय का बहुत महत्व रहता है। और इस के बारे में हमारे और जनता के दिल में सन्देह बना हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, टाइम्स आफ लंडन ने २९ अक्तूबर को अपने एक आर्टिकल में लिखा है कि चाइना की मिलिटरी ताकत क्या है। उस में कहा गया है कि चीन की नियमित सेना में २५ लाख

[श्री क० ना० तिवारी]

व्यक्ति हैं । उन की मिलीशिया में २ करोड़ व्यक्ति हैं जिन में ४० लाख व्यक्तियों को यहां सैनिक प्रशिक्षण मिला हुआ है । चीन की वायु सेना में १ लाख व्यक्ति हैं तथा ३००० विमान हैं । इस रिपोर्ट को देखने के बाद मैं आपके जरिये निवेदन करना चाहता हूं कि अपने देश में भी टोटल मोबिलाइ-जेशन हो जाना चाहिये । अब समय आ गया है . . . . . .

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय सदस्य समाप्त करें क्योंकि उन्होंने खुद कहा है कि अब समय आ गया है ।

श्री क० ना० तिवारी : मैं अन्य बातों को छोड़कर एक दो सुझाव देकर एक मिनट में बैठ जाता हूं ।

मेरा पहला सुझाव पबलिसिटी के सम्बन्ध में है । आकाशवाणी का प्रोग्राम आज की मांग के अनुकूल नहीं है । वह उस के अनुकूल होना चाहिये ।

वित्त मंत्री ने गोल्ड बांड्स के सम्बन्ध में लोगों को छूट दी है कि अगर वह गोल्ड बांड खरीदेंगे तो उनसे यह नहीं पूछा जायेगा कि वह यह सोना कहां से लाये हैं । मेरा दूसरा सुझाव यह है कि इसी प्रकार लोगों के पास बहुतसा रुपया छिपा पड़ा है और वे उसको इस डर से नहीं निकाल रहे हैं कि वह कहां से आया है, कैसे आया है इसकी सरकार जांच करेगी । बहुतसा रुपया फारेन बैंक्स का भी पड़ा है, और वह उसका इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं । इन दोनों प्रकार के रुपयों के बारे में भी यह ऐलान होना चाहिये कि वह रुपया अगर वार इंडस्ट्री में लगाया जायेगा तो उसकी छानबीन नहीं की जायेगी, वे अपना इस प्रकार का पूरा धन वार इंडस्ट्री में लगा सकते हैं ।

तीसरा सुझाव यह है कि अभी तक जो बड़े बड़े कारखाने वाले लोग रुपये दे रहे हैं वह अपनी इंडस्ट्री की तरफ से दे रहे हैं । लेकिन जो पुराने राजे महाराजे और बड़े बड़े उद्योगपति हैं उनके पास अपना परसनल रुपया काफी है । उसमें से वे काफी रुपया सरकार को दे सकते हैं अगर उनको इनकमटैक्स की छट दी जाये । इस पर भी विचार होना चाहिये ।

चूंकि समय नहीं है, इसलिये आपको फिर धन्यवाद देकर बैठ जाता हूं ।

श्री पाराशर (शिवपुरी) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं जो आपने मुझे इस अवसर पर विचार प्रकट करने का अवसर दिया है । इस के पहिले कि मैं कुछ कहूं मैं अपनी और अपने क्षेत्र की ओर से उन सैनिकों का जिन्होंने कि अपने देश की रक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति दी है उन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

हमारे देश की नान-अलाइनमेंट की पालिसी के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है और उस की आलोचना करते हुये हम को इस गुट या उस गुट के साथ मिलने के लिये कहा गया है । लेकिन मैं जो यह वकालत करते हैं कि भारत को किसी ब्लाक में शामिल हो जाना चाहिये, उन की बात समझने से कासिर हूं । आखिर कोई भी देश जब अपनी नीति निश्चित और निर्धारित करता है तो वह अपने प्राचीन संस्कार, जीवन के रहन सहन के तरीके और अपने सिद्धांतों के आधार पर करता है । भारतवर्ष यदि आज शताब्दियों से धक्कों को खाते रहने के बाद भी जीवित है तो वह इसीलिये जीवित है कि उस के जीवन के कुछ सिद्धांत हैं, उस ने कुछ सिद्धांत अपनाये हैं और कठिन से कठिन समय में भी जब भी परीक्षा का कड़ा अवसर आया है, वह अपने कुछ निश्चित सिद्धांतों पर

अटल और दृढ़ रहा है। आजादी की लड़ाई के दौरान में जब हम अंधकार में थे जब हम गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुये थे जब भी हम ने कुछ सिद्धांतों को पकड़ा और उनको मजबूती से पकड़े रह कर हमने सब के सामने यह प्रदर्शित कर दिया कि सारा देश मर भले ही सकता है लेकिन वह अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ सकता है और उन पर कायम रहते हुये हम ने आजादी हासिल की और हमारा देश गुलामी के बन्धन से आजाद हुआ ।

इतिहास की ओर दृष्टि डालने से पता चलेगा कि शताब्दियों पहले हजारों साल पहले से हम भारतवासी संग्रामों में जूझते रहे हैं। इसलिये आज जो संग्राम हमें लड़ना पड़ रहा है वह कोई हमारेलिये नई चीज नहीं है। देवासुर संग्रामों की कहानियां हम अपनी पौराणिक पुस्तकों में पढ़ा और सुना करते हैं। आज का भारत चीन संघर्ष एक प्रकार का देवासुर संग्राम है। मित्र के साथ इस तरह मित्रघात करना, मित्रता का बदला दुश्मनी से देना और इस प्रकार से वचन भंग करना यह राक्षसों का ही काम है। हम ने उन चीनियों का जिनका कि आचरण राक्षसों के समान है, अपने पूर्वजों की तरह चेलेंज स्वीकार कर लिया है। हम ने और हमारे प्राइम मिनिस्टर ने उस चेलेंज को स्वीकार किया है। यदि हम अपने सिद्धान्त को छोड़ते हैं जिस पर सदैव से हम चलते आये हैं तो हम अपने यतो धर्मस्य ततो जाया के सिद्धान्त से हटते हैं जिस पर कि हम सदैव से चलते आये हैं। अगर हम यह कह देंकि हम अमुक गुट में शामिल हैं और फलां गुट में शामिल न रहेंगे तो उसका मतलब यह होगा कि हम अपने सिद्धांत को छोड़ते हैं। जब हम किसी गुट में शामिल होते हैं तो हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमें उनके साथ हर हालत में रहना होगा। अगर वह गलत काम करते हैं तो भी हमें उनका समर्थन करें और सही काम करें तो भी उनका समर्थन करें। क्या भारतवर्ष यह काम करने को तैयार है? मेरा यह निश्चित मत है कि भारत का जन मानस कभी इस बात को स्वीकार नहीं करेगा। भारतवर्ष खत्म हो जायेगा, मर जायेगा और संसार के नक्शे से भारतवर्ष उठ जायेगा लेकिन सत्य और न्याय का रास्ता कभी नहीं छोड़ेगा ऐसा मेरा निश्चित विश्वास है। "यतो धर्मस्य ततो जाया", अर्थात् जहां सत्य होगा वहीं विजय होगी और वहीं साक्षात परमेश्वर का वास होगा। भारतवर्ष को नौन एलाइनमेंट की पालिसी को हरगिज नहीं छोड़ना है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके जरिये श्री चाऊ एन लाई को संदेशा भेजना चाहता हूं कि भारतवर्ष की जनता का प्रत्येक जीवित मनुष्य चाहे वह बच्चा हो, बूढ़ा हो या जवान, उस ने इस बात का पक्का फैसला कर लिया है कि वह उसी रास्ते पर अपना अन्तर्दर्शन करने के बाद अमल करेगा जो उस ने गीता में पढ़ा है ।

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं बलेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।

अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इस को आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता। हमने इस बात का फैसला कर लिया है कि हिमालय में तो पांच पांडव गले थे अगर धर्म और सत्य के रास्ते पर चलते हुये हम ४४ करोड़ से में ५ करोड़ इंसान भी हिमालय में आक्रमण का मुकाबिला करते हुये गल जायें अर्थात् नष्ट हो जायें तो भी कोई परवाह की बात नहीं है लेकिन यह निश्चित बात है कि हम चीन को कभी भारतवर्ष में आने नहीं देंगे। उनको अपनी धरती पर टिकने नहीं देंगे और उनको खदेड़ कर ही दम लेंगे ।

भारत सरकार ने चीन से कोई भी समझौता वार्ता चलाने के पहिले जो यह मांग की है कि चीनी हमलावर ८ सितम्बर से पूर्व के स्थानों पर लौट जायें उसके बारे में हमारे कुछ भाई कहते हैं कि यह

[श्री पाराशर]

८ सितम्बर है क्या चीज । मैं अपने उन भाइयों को बतलाना चाहता हूं कि हमारा यह ओफर उस संस्कृति के ही आधार पर है जो हम कि भारत वासियों की नस नस में ओतप्रोत है । रामायण में हम पाते हैं कि जब रावण सीता को हर ले गया तो श्री राम सुग्रीव को सम्बोधित करते हुये कहते हैं :—

"जग में सखा निशाचर जेते लक्ष्मण हनहि निमिष महि तेतें"।

अर्थात् अकेले लक्ष्मण ही समस्त राक्षसों का नाश करने में समर्थ हैं । हालांकि श्री रामचन्द्र जानते थे कि हम उसे परास्त कर देंगे तो भी लक्ष्मण जी ने रावण को श्री रामचन्द्र की तरफ से यह कहलवाया था :—

"कहो मुखागर मूढ़ सन मन सन्देश उदार,
सीता देहु मिलऊ नत आवा काल तुम्हार ।"

यह शक्ति और क्षमता राम रखते थे तो भी उन्होंने युद्ध छेड़ने से पहले रावण को आखिरी बार संदेशा भिजवाया कि उसे सुबुद्धि आ जाये । इसलिये भारत की ओर से जो यह मांग की गई है कि चीनी हमलावर ८ सितम्बर के पूर्व के स्थानों पर यदि लौट जाने को राजी हों तो समझौता वार्ता की जा सकती है अन्यथा नहीं, यह उसी प्राचीन संस्कृति की प्रतीक है जो कि हम लोगों की नस नस में व्याप्त है । हमारे पूर्वज रामचन्द्र जी ने जिस प्रकार से रावण को एक अंतिम अवसर दिया था कि अगर वह अपनी खैर चाहता है तो सही रास्ते पर आ जावे उसी भावना के साथ हमने उनको यह ८ सितम्बर की बात कही है दूसरा हमारा कोई अभिप्राय: नहीं है । इस में कोई कमजोरी नहीं है और हमें चाहिये कि इसको लेकर जो कुछ लोगों में एक शक सा पैदा हो गया है उसका हम निराकरण करें और उन्हें बतलायें कि यह प्रस्ताव कोई डर या कमजोरी के कारण हमने नहीं किया है । आठ सितम्बर वही चीज है :—

"सीता देहु मिलऊ नत आवा काल तुम्हार" ।

भारत की ओर से चीनी दरिन्दों को यह अंतिम अवसर दिया जा रहा है ।

आज समय का तकाजा है कि भारतवर्ष की जनता को हम हर तरह से इस आक्रमण का मुकाबला करने और चीनी हमलावरों को भारत भूमि से खदेड़ने के लिये तैयार करें । हर एक देश के बच्चे को फौजी तालीम दी जाये । जिस तरह से गांधी जी ने भारतवासियों को अंग्रेजी साम्राज्यवाद से लोहा लेने के लिये खादी का मंत्र दिया था उसी तरह हमारे पंडित जी को देशवासियों को खाकी वर्दी धारण करने का मन्त्र देना चाहिये । हमारे देश का प्रत्येक बच्चा और बच्ची खाकी वर्दी धारण करके देश की रक्षा के लिये सीना तान कर खड़ा हो जाये ताकि चीन के चाऊ एन लाई को मालूम हो जाय कि वह अगर तानाशाही के आधार पर अपनी फौज इकट्ठा करते हैं तो इस देश का बच्चा बच्चा स्वेच्छा से खाकी वर्दी धारण करके चीनी आक्रमणकारियों से मोर्चा लेने और मातृभूमि की रक्षा करते हुये अपने प्राणों की बलि देने को कटिबद्ध हो चुका है । जहां तक ८ सितम्बर की बात का सवाल है वह तो आज हमने प्रस्ताव किया है लेकिन जब हमारे पास फौजी ताकत हो जायेगी, आवश्यक सैन्य सामग्री से हम लैस हो जायेंगे उस दशा में क्या हम से यह उम्मीद की जाती है कि हम ८ सितम्बर की बात करेंगे ? उस समय मुमकिन है कि हम न करें । लेकिन आज ८ सितम्बर की बात को छोड़ना निरर्थक और कब्लअजवक्त होगा । अभी हमें ८ सितम्बर की ही बात करनी चाहिये । हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब ने जो ८ सितम्बर की बात कही है उस पर हमें कायम रहना चाहिये ।

मने अखबार में पढ़ा है कि फाइनेन्स मिनिस्टर ने ऐसा कहा है कि चीनी सन् ५६ में जहां पर थे वहां तक उन्हें वापिस चले जाना चाहिये वरना लड़ाई जारी रखनी चाहिये। अब मैं नहीं जानता कि प्रेस की यह रिपोर्ट जो उनके बारे में छपी है सही है या गलत है लेकिन मेरा अपना मत है कि वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि के बिनेट की एक आवाज होनी चाहिये और तमाम देश की भी एक आवाज होनी चाहिये। त्यागी जी ने यह बात ठीक कही है कि हमारे केबिनेट की एक आवाज और एक मत होना चाहिये और हमारे देश की तरफ से एक आवाज जानी चाहिये। त्यागी जी ने पेकिंग रेडियो द्वारा प्रसारित खबरों का जिक्र करते हुये कहा कि उनके झूठ के कारण कुछ लोगों के दिमाग में कन्फ्यूजन हो सकता है। उनके द्वारा झूठ प्रचार से हमें घबड़ाना नहीं चाहिये क्योंकि हम सत्य और धर्म के पथ पर चल रहे हैं लेकिन तो भी हमें देखना होगा कि कहीं सचमुच उससे हमारे किन्ही लोगों के दिमाग में कन्फ्यूजन न हो जाये।

जहां तक हमारे देश की नौन एलाइनमेंट की पालिसी का सम्बन्ध है मैं पूरी तरह उसका समर्थन करता हूं। अभी चंद दिन की बात है कि लखनऊ में मेयर ने एक मीटिंग बुलाई थी और उस में श्री कृपलानी जिनके लिए वैसे मेरे दिल में बड़ी श्रद्धा है उन्होंने उसमें जो विचार प्रकट किये हैं मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता। उन्होंने उस में यह कहा बतलाते हैं कि भारत को चीन के विरुद्ध लड़ने में अपनी सहायता के लिए विदेशी सैनिकों को भी बुलाना पड़ेगा और अकेले हथियार मंगाने से काम नहीं चलेगा। भारत को अपनी सहायता के लिए बाहर से विदेशी फौजें भी बुलानी चाहिएं। लेकिन मैं साफ ऐलान कर देना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में चीन से लड़ने के लिए विदेशी सिपाही हरगिज नहीं आयेगा। यह लड़ाई हमारा देश अपने देश के सिपाहियों से लड़ेगा और इस देश के सिपाहियों द्वारा ही हम चीनी आक्रमणकारियों को अपनी पवित्र भूमि से खदेड़ कर बाहर करेंगे। याद रखिये जिस दिन विदेशी सैनिक बुलाये जायेंगे उसी दिन हमारी आजादी खत्म हो जायेगी और हमें एक या दूसरे गुट में शामिल होना पड़ेगा। कृपलानी जी कहते हैं कि अमरीका के सिपाही इंगलैंड में लड़ने के लिये गये लेकिन उन्होंने इंग्लैंड को गुलाम नहीं बनाया और इसी तरह से वे हमें भी गुलाम नहीं बनायेंगे। मैं उन से कहूंगा कि हम विदेशी सैनिक अपनी धरती पर कदापि बुलाना पसन्द नहीं करेंगे और हम अपनी लड़ाई स्वयं लड़ेंगे। अब रह गया हथियारों का रोना तो यह तो सदा से ही हमारे यहां चलता आया है। हम बाबर के वक्त से देखते हैं कि जब उसका हमला हुआ तो यहां कहा गया कि उसके मुकाबले में हमारे पास मिलटरी इक्विपमेंट नहीं है और जब अंग्रेजों ने हम पर हमला किया था तब भी यही कहा गया कि उनके मुकाबले में हमारे पास आवश्यक फौजी साज सामान नहीं है। श्री पाणिकर ने भी इसी चीज को कहा है कि हमारे पास मैन पावर की कमी नहीं है अलबत्ता हथियारों की कमी है। यह हथियारों का रोना हम जब जब भी हम पर विदेशियों का हमला हुआ रोते आये हैं। मुझे खुशी है कि सरकार इस दिशा में काफी सचेत है और बाहर से हथियार मंगाने के अलावा देश में भारी मात्रा में आवश्यक शस्त्रास्त्र तैयार किये जा रहे हैं। मेरा तो पार्लियामेंट के हर एक सदस्य से निवेदन है कि इस संकट काल में वे हर एक जिले में एक फौजी स्कूल खोलें जहां कि हमारे बच्चों को फौजी तालीम देकर तैयार किया जाय। डिफेंस मिनिस्टरी को चाहिए कि इस के लिए वह आवश्यक सुविधा और मदद दे और मैं सरकार को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम उनको ट्रेंड सिपाही देंगे, नायक देंगे, जमादार देंगे, हवलदार देंगे और लेफटिनेंट कर्नल देंगे। हम इन फौजी स्कूलों से सरकार को देश की हिफाजत करने के लिए लाखों की संख्या में फौजी तालीम से लैस नौजवान देंगे। दुनिया देखेगी कि आज यह जो देवासुर संग्राम चल रहा है उसमें देश का बच्चा बच्चा अपनी प्राणों की आहुति डालेगा लेकिन मातृभूमि को गुलाम नहीं बनने देगा और चीन की तो मजाल ही क्या सारा संसार भी मिल कर हमारी तरफ टेढ़ी आंख से देखने की हिम्मत नहीं कर सकेगा।

[श्री पाराशर]

चूंकि मेरा समय समाप्त हो गया है इसलिए मैं और अधिक समय न लेते हुए अन्त में सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं। मैं ने इस प्रस्ताव पर एक संशोधन रखा है जिस में मैंने चाहा है कि प्रस्ताव के आखिर में यह शब्द जोड़ दिये जायें कि हम दुश्मन को निकालेंगे, लड़ाई चाहे जितनी लम्बी हो, हमलावरों को अपने सैनिकों द्वारा निकालेंगे और इस में हम विदेशी सेनाओं की सहायता नहीं लेंगे। इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने कि इस आजादी की लड़ाई में अपना बलिदान दिया है। हम जो सिपाही मोर्चे पर गये हैं या जा रहे हैं उनके साथ पूरी तरह से हैं और उनके पीछे छूटे हुए परिवारों की देखरेख करने के लिये हम दृढ़प्रतिज्ञ हैं।

†**श्री ज्व० प्र० ज्योतिषी** (सागर) : हमारे इतिहास में यह अत्यन्त संकट का समय है। निस्संदेह चीन ने अत्यन्त धोखेबाजी से हमारे ऊपर आक्रमण कर दिया है। इसने हमें आदर्शवाद की दुनिया से निकाल कर वास्तविकता के संसार में ला पटका है।

हमें इस बात से प्रसन्नता है कि हमारी कम तैयारियों के बावजूद भी हमारे सैनिकों ने शानदार बहादुरी दिखाई है।

हमारे भले ही आपस में कितने ही मतभेद हों तथापि एक बात में हम एक हैं वह यह है कि हमने अपनी समग्र शक्ति से शत्रु को बाहर खदेड़ना है।

कुछ साम्यवादियों ने यह कहा है कि चीन एक साम्यवादी राष्ट्र है न कि विस्तारवादी तथापि चीन ने वह नीति अपनायी है जो फैसिस्ट लोग अपनाते हैं। अब भारतीय साम्यवादियों की आंखें खुल गई हैं और उन्होंने भी अपने संकल्प में इस बात को स्वीकार किया है।

यह कहना ठीक नहीं है कि हमें पंचशील और तटस्थता की नीति छोड़ देनी चाहिये। सरकार की नीतियों ने भूतकाल में हमारी सहायता की है और इस समय भी उन्हीं नीतियों से हमें सहायता मिल रही है। कम से कम वर्तमान संकट में हमें अपनी सुस्थापित नीतियों की आलोचना करते हुए सावधान रहना चाहिये।

श्री कि० पटनायक (सम्बलपुर) : अध्यक्ष महोदय, चीनी हमले के बाद सारे देश में जिस किस्म की जागृति आई, उस प्रकार की जागृति हमने इसके पहले कभी नहीं देखी थी। दिल्ली आने के पहले हमने जिस किस्म का उत्साह और जोश छोटे शहरों और देहातों तक में देखा, वह चीज हमने कुछ हद तक दिल्ली और पार्लियामेंट में खोई। यहां आ कर हम ने देखा कि यहां की सरकार या कांग्रेस पार्टी की यह सरकारी मशीनरी वहां तक नहीं जगी है जहां तक देश की आम जनता जगी है। यहां तो खुद प्रधान मंत्री ही ने अपने पहले दिन के ही भाषण में छिछोरापन शुरू कर दिया . . . . .

†**श्री का० ना० तिवारी** : यह बहुत अशिष्ट भाषा है।

अध्यक्ष महोदय : मैंने ध्यान नहीं दिया और मैं सुन नहीं सका। ऐसी चीज नहीं कहनी चाहिये जिस पर ऐतराज होता हो।

यह शब्द ऐसा नहीं जिस पर कोई ऐतराज हो सकता हो।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री कि० पटनायक : एक तरफ तो सारे देश को एक होने के लिए आह्वान किया जा रहा है, जनता को इकट्ठा होने के लिए आह्वान किया जा रहा है और दूसरी तरफ जबकि सारी विरोधी पार्टियां, यहां तक कि कम्युनिस्ट पार्टी तक देश रक्षा के काम में सहयोग देने के लिए और त्याग करने के लिये तैयार हैं, तब उस हालत में कांग्रेस पार्टी दलबदी और गुटबाजी में व्यस्त हो, तो यह कहां तक जायज समझा जा सकता है। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि कांग्रेस पार्टी ने समझ रखा है कि यह मौका आ गया है जबकि वह कमजोर होती चली जा रही है और उसको तकड़ा बना लिया जा सकता है। प्रधान मंत्री श्री नेहरू जब कुछ अलोकप्रिय हो रहे हैं तो यह अच्छा मौका है कि उनको थोड़ा ज्यादा लोकप्रिय बना लिया जाये और ऐसा करने के लिए यह अच्छा मौका हाथ लगा है और इसका पूरा लाभ उठा लिया जाना चाहिये। इससे तो यह पता चलता है कि यह देश रक्षा का काम नहीं है बल्कि नेहरू रक्षा का काम हो गया है। जहां देखो इस तरह के रेज़ोल्यूशन आते हैं, बातें होती हैं कि नेहरू के पीछे खड़े हो जाओ और नेहरू ही हमारे नेता हैं, वह ही सब कुछ हैं। यह जो चीज़ है यह बहुत ही खतरनाक है।

आज जो मसला है वह देश रक्षा का मसला हमारे सामने है। हम को देखना होगा कि सब लोग जो हैं, सब प्रदेश जो हैं, सब ग्रुप जो हैं, ये देश के पीछे हैं या नहीं हैं। नेहरू जी के पीछे हैं या नहीं यह तो बिल्कुल ही छोटी सी बात है, छोटा सा मसला है। यह कांग्रेस पार्टी की अपनी समस्या हो सकती है, दूसरी पार्टियों की समस्या नहीं हो सकती है। पहली बात तो देश रक्षा की है, देश के पीछे होने की है। दूसरी बात यह है कि जनता जवानों के पीछे है या नहीं है। उसके बाद नेहरू जी के पीछे हो या न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, यह कोई खास बड़ी बात नहीं है।

ऐसा भी देखा जा रहा है कि जो नेहरू जी का शत प्रतिशत समर्थन करने वाली पार्टी है, वह सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी है। लेकिन आपने कम्युनिस्ट पार्टी के कितने ही लोगों को एरेस्ट कर लिया है। यह क्यों हुआ है ? अगर नेहरू जी का समर्थन करना ही देश भक्ति हो जाती है तो जिस पार्टी ने अपने रेजोल्यूशन में शत प्रतिशत आपका समर्थन किया है और जो पार्टी नेहरू जी के पीछे है, उस पार्टी के इतने लोगों को क्यों आपने एरेस्ट किया है। इसका मतलब यही होता है कि नेहरू का समर्थन करने का तात्पर्य देश का समर्थन नहीं है जब कि देश का समर्थन करना कभी कभी नेहरू जी का विरोध हो सकता है। इसलिए नेहरू जी को ज्यादा आगे बढ़ाना ठीक नहीं है। देश रक्षा के लिए सभी लोगों को, सारी जनता को हमें इकट्ठा करना है।

आज विरोधी दल भी नुक्ताचीनी करते हैं और उनको करनी चाहिये। हमारे यहां डेमोक्रेसी है, यह कांग्रेसी सदस्यों को याद रखना चाहिये। जब तक डेमोक्रेसी हमारे देश में जिन्दा रहेगी तब तक बाहरी शत्रु भी देश पर कब्जा नहीं जमा सकता है। इसलिए जो विरोधी दलों की नुक्ता-चीनी को बन्द करवाना चाहते हैं और जो चाहते हैं कि विरोधी लोग बिल्कुल भी नुक्ताचीनी न करें वे डेमोक्रेसी पर चोट पहुंचाना चाहते हैं और यह समय नहीं है जबकि डेमोक्रेसी पर चोट पहुंचाई जाये। इस समय अगर डेमोक्रेसी कमजोर हो गई तो देश-रक्षा भी कमजोर पड़ जायेगी।

आज जबकि हर विरोधी पार्टी कांग्रेस सरकार को देश रक्षा के काम में सहयोग देना चाहती है, कांग्रेस के सदस्य विरोधी सदस्यों के प्रति पहले जैसा ही मनोभाव रखते हैं। उस में कोई फर्क नहीं आया है। यह ठीक नहीं है। हम सब लोग आपको सहयोग देने के लिये आये हैं और बिना हिचक के देने आये हैं और न कोई शर्त ही हम ने लागू की है। हां नुक्ताचीनी हम जरूर करते हैं, सुझाव हम जरूर देते हैं, उनको आप मानो या न मानो यह आप पर निर्भर करता है।

[श्री कि० पटनायक]

आप अगर उनको न भी मानेंगे तो भी हम सहयोग करेंगे, देश रक्षा के काम में आपका साथ देंगे । जब हम यहां तक जाने के लिये तैयार हैं तो कांग्रेस के सदस्य जोकि पार्लियामेंट में बड़े भाई के समान हैं, जिन के कंधों पर और जिन की सरकार के कंधों पर इस आक्रमण का प्रतिकार करने का बोझा आ पड़ा है, उनके मनोभाव में बिल्कुल भी किसी प्रकार का परिवर्तन न दृष्टिगोचर होना एक बड़ी ही हमारे लिये खेद की बात है । हम चाहते हैं कि कांग्रेस के माननीय सदस्य आइंदा से कुछ भिन्न प्रकार का बरताव करें । विरोधी जो सदस्य हैं वे तो नुक्ताचीनी करेंगे ही क्योंकि यहां पर डेमोक्रेसी है और डेमोक्रेसी में पार्टीज को डिसाल्व नहीं किया जाता है । हम सब सहयोग करना चाहते हैं, इसलिए कांग्रेस पार्टी के मनोभाव में भी परिवर्तन होना चाहिये ।

मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि अभी तक विरोधी नेताओं से सहयोग लेने के लिए सरकार के पास एक भी प्रोग्राम नहीं है जबकि सारी विरोधी पार्टियां यह तय कर चुकी हैं, बहुत दिनों से तय कर चुकी हैं कि सरकार को सहयोग देने के लिए वे तैयार हैं । इतना होने पर भी सरकार की तरफ से कोई भी प्रोग्राम प्रस्तुत नहीं किया गया है कि कैसे विरोधियों का सहयोग वह ले । न प्रधान मंत्री जी ने किसी विरोधी नेता के पास कोई अपील भेजी है और न ही कोई चिट्ठी लिखी है कि आपकी इस काम में हम लोगों को जरूरत है, आपके सहयोग की जरूरत है या आप लोगों को भी यह काम करना है । इस विषय पर एक भी चिट्ठी या एक तो पत्र नेहरू जी के पास से नहीं आया । यह भी एक खेद की बात है । खासकर ऐसे समय जबकि सारा देश एक है और सारी पार्टीज एक तरफ जा रही हैं, कम से कम आल इंडिया रेडियो पर कुछ विरोधी नेताओं को बोलना चाहिये था । उनसे कहा जाता कि आप लोग भी देश को कुछ आह्वान दें । हो सकता है कि सोशलिस्ट पार्टी के लोग गैरजिम्मेदार हों, मगर श्री रंगा तो हैं, मि० कामता तो हैं, कम्यूनिस्ट पार्टी के लीडर तो हैं जोकि कांग्रेस को बिल्कुल सपोर्ट करते हैं । उन लोगों को तो आल इंडिया रेडियो पर बुलाना चाहिये था ताकि दूसरे पार्टी के लोगों की तरफ से भी देश को कुछ आह्वान मिलता कि वह जागें । अगर ऐसा किया जाता तो देश की जनता की छाती भी कुछ चौड़ी हो जाती । लेकिन ऐसा प्रोग्राम नहीं बनाया गया । अगर कोई गैर-सरकारी व्यक्ति आल इंडिया रेडियो पर बोला है तो प्रधान मंत्री की बेटी बोली हैं, और कोई नहीं ।

हम लोगों ने यहां जो नो कांफिडेंस मोशन रखा था उस के बारे में काफी नुक्ताचीनी हुई है । कुछ लोग बोले कि उस का बैड टेस्ट है, बल्कि इल टाइम्ड है, वह बहुत खराब चीज है । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि डिमाक्रेसी में जब नो कांफिडेंस मोशन आता है तो वह भविष्य के लिये नहीं होता, वह अतीत के लिये होता है । अतीत में जो गलतियां होती हैं, सरकार की अतीत की जो गलतियां होती हैं उन के लिये वह आता है । अगर बुनियाद पर हम नो कांफिडेंस मोशन को लें तो न तो वह डिमाक्रेसी के खिलाफ है और न रीति के खिलाफ है । अतीत में गलतियां हुई थीं और उस को एक रूप देने के लिये हमने यहां नो कांफिडेंस मोशन रखा था ।

आखीर में मैं एक दो चीजें और कहना चाहता हूं । एक तो यह है कि हम लोग जो युद्ध कर रहे हैं वह किस लिये कर रहे हैं, यह चीज साफ हो जानी चाहिये । यह जो ८ सितम्बर का प्रस्ताव किया गया है, वह ८ सितम्बर की चीज तो आउट आफ डेट हो गई है । आखिर ८ सितम्बर है क्या । यह न तो पानी है और न स्थल है । यह एक समय है जोकि बीत गया है । हम आखिर किस लिये लड़ रहे हैं, अगर यह चीज सारी जनता के मन में साफ नहीं होगी तो जितना जोश चाहिये, जितना उत्साह चाहिये उस का आना कठिन होगा । इसलिये मैं चाहता हूं

कि इस प्रस्ताव में यह जोड़ दिया जाये कि जब तक भारत भूमि के हर एक इंच से चीनी सेना नहीं हटती तब तक यह युद्ध जारी रहेगा और हमारी सेना अस्त्र नहीं छोड़ेगी। यह चीज प्रस्ताव में आ जानी चाहिये, जब तक यह चीज नहीं आती है तब तक यह प्रस्ताव कुछ गोल मोल सा लगता है। कहीं भी कुछ हो सकता है और हमारी सारी आशायें खत्म हो जा सकती हैं। इस लिये इस चीज को प्रस्ताव में जरूर जोड़ देना चाहिये।

इस के बाद मैं एक चीज और कहना चाहता हूं कि जो आप की गलतियां हैं उन को भी आप को सावधानी के ढंग से अपने दिमाग में कर लेना चाहिये, खासकर तिब्बत के बारे में जो गलतियां हुई हैं उन को मान कर हम लोगों का क्या एटिट्यूड होना चाहिये चीन की तरफ या तिब्बत की तरफ, इस को स्पष्ट कर देना चाहिये। इस मामले में मैं इतना कहूंगा कि तिब्बत को आजाद कराना भी युद्ध के प्रयास में एक लक्ष्य होना चाहिये।

श्री रा० शि० पाण्डेय (गुना) : अध्यक्ष महोदय, आप की बड़ी कृपा हुई कि मुझे थोड़ा समय आपने दिया।

अध्यक्ष महोदय : चार दिन के बाद।

श्री रा० शि० पाण्डेय : कल आप ने यह कहा था कि इस बहस में करीब करीब रिपिटीशन ही होता है। मैं एक बात आप से बाअदब कहना चाहता हूं कि आखिर हमारे सामने सवाल एक है, और वह एक सवाल यह है कि हमारी धरती पर चीन ने आक्रमण किया है और हम उस को खदेड़ना चाहते हैं। उस को चाहे कितना ही एलोबोरेट करके कोई कहे, चाहे कांस्टिट्यशनल एस्पेक्ट पेश करे, लेकिन आखिरी मकसद हमारा यही है जिस को आज नहीं, जब तक चीन यहां से हटेगा नहीं, हम रिपीट करेंगे। इसलिये आप मुझे माफ करें अगर हमें उसे रिपीट करना पड़े, और हम तब तक चैन नहीं लेंगे जब तक चीन, जिस जमीन को उस ने ले लिया है उसे छोड़ कर भाग नहीं जाता। इस रिपीटीशन के लिये मैं माफी चाहता हूं।

हमारा और चीन का दो हजार वर्षों का इतिहास एक ऐसा इतिहास है, जिस का साक्षी है हिमालय। सांस्कृतिक दृष्टि से देखें, भौगोलिक दृष्टि से देखें या सीमा की दृष्टि से भी देखें, तो दो हजार वर्षों का इतिहास साक्षी है कि हमारे और चीन के बीच कोई द्वन्द, कोई युद्ध या कोई वैमनस्य पहले नहीं हुआ। लेकिन यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि जैसे ही चीन में कम्यूनिज्म आया, कम्यूनिस्ट रिजीम आया, माओ से तुंग आये, और आया चाऊ एन लाई, तब से चाइना की सारी कम्यूनिस्ट पार्टी की यह प्लनिंग है कि एक दिन उन को हिमालय की पर्वत मालाओं की तरफ बढ़ना है। पिछले दो हजार वर्षों का इतिहास आप के सामने है, अगर आज चीन में कम्यूनिस्ट पार्टी का अधिकार नहीं होता, तो मैं नहीं समझता हूं कि आज हम को इस बात को रिपीट करने का अवसर मिलता कि हम चीन को खदेड़ देंगे। कोई ऐसा अवसर पहले नहीं आया, हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है।

जहां तक हमले का सम्बन्ध है, बड़ा कठिन है, इस बात को डिटरमिन करना कि उसका मोटिव क्या है, क्यों चीन चाहता है कि वह हमारी सीमाओं की ओर बढ़े। लेकिन कम्यूनिस्ट पार्टी का एक इरादा है, दुनिया की कम्यूनिस्ट पार्टी का एक इरादा है, और वह यह कि उनको दुनियां में सब जगह, चाहे किसी तन्त्र का देश हो, प्रजातन्त्र हो या कोई भी तन्त्र हो, सारे संसार में कम्यूनिज्म को फैला देना है। अगर यह उनका उद्देश्य है, तो आज यह चेलेन्ज है। तमाम

[श्री रा० शि० पाण्डेय]

प्रजातन्त्रवादी मुल्कों को कि वे एक हो जायें । वे यह न समझें कि यह हमारे नेफा में या लद्दाख में ही कम्यूनिस्ट चीन आया है या यह हमारा और चीन का सवाल है । यह सवाल है प्रजातन्त्र और कम्यूनिज्म का, और हमें इस बात की खुशी है कि इस का फैसला होगा भारत देश में ।

जब हम कम्यूनिस्ट पार्टी के रेजोल्यूशन की बात कहते हैं तो वे हम को बड़ी सफाई देते हैं । हमारा इरादा उन पर शक करने का नहीं है, लेकिन अगर सब से ज्यादा शक की बात कोई कहता है तो वह कम्यूनिस्ट पार्टी के लोग कहते हैं, कि उन पर शक किया जाता है । मैं इस सिलसिले में आप का ध्यान केरल के कम्यूनिस्ट लीडर के उस बयान की तरफ दिलाना चाहता हूं जिस में उस ने कहा था कि अगर उन को लोकल और सेंट्रल डिफेन्स कमिटीज में नहीं लिया गया तो कम्यूनिस्ट पार्टी डिफैन्स प्रोग्राम और डिफेन्स प्रोडक्शन को बड़े जोर का धक्का लगायेगी और उसको नहीं चलने देगी ।

अध्यक्ष महोदय : इस बात को कहने में तो कोई हर्ज नहीं कि जो बयान उस ने दिया था वह बाद में करेक्ट किया गया ।

श्री रा० शि० पाण्डेय : यह लोग पहले बयान देते हैं बाद में उसे करेक्ट करते हैं, यह आप को मालूम है । एक एक मसले पैदा करते हैं फिर उन का कंट्राडिक्शन करते हैं । लेकिन कंट्राडिक्शन को कौन पढ़ता है ? उस का एक असर होता है, देश में एक मोमेन्ट्स तैयार होता है । इस से कम्यूनिस्टों के दिल में क्या बात होती है इस का पता चलता है । उन का इरादा ऐसा होते हुए कंट्राडिक्शन को सच नहीं माना जा सकता ।

इस हमले एक अच्छी बात हुई कि हमारे इस देश का नया जन्म हुआ, और देश के होते हुए भी जब उस का नया जन्म होता है तो वह बड़ी सिग्निफिकेंट बात होती है । पंडित जवाहरलाल नेहरू हमारे नेता हैं जिन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के पचास वर्ष शान्ति और मानवता के लिये बिताये हैं । आज हमारा देश उन के हाथों में तलवार देना चाहता है और उस ने वह तलवार उन के हाथों में दे दी है । यह है वह वातावरण और यह है नया जन्म । हम ने पचास वर्ष अपने जीवन के बिताये सहअस्तित्व में, प्रेम में, स्नेह में और शान्ति की बात करने में । लेकिन हम इतिहास को यह बता देना चाहते हैं कि अगर हमारी धरती का किसी ने अपहरण किया या किसी ने हमारा दामन छुआ तो हम तलवार ले कर, मैन एंड गन लेकर उसका मुकाबला करेंगे ।

जहां तक गांधी जी के सिद्धान्त की बात है, जहां तक पंचशील के सिद्धान्त की बात है, हम उस को मानते हैं और मानेंगे । जहां तक नानएलाइनमेंट की बात है हम उस को मानेंगे, लेकिन उसी हद तक मानेंगे जिस हद तक हमारी धरती पर किसी भी प्रकार का कोई आक्रमण न हो और अगर आक्रमण हुआ है तो हम उसे खाली करायेंगे । यह है हमारी प्रतिज्ञा । हम तमाम मानवता से ओतप्रोत सिद्धान्तों को स्वीकार करने में तनिक भी नहीं हिचकेंगे, लेकिन किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे, और आगे चल कर के आवश्यक हुआ तो प्रजातंत्र की रक्षा के लिए, प्रजातंत्र के हित के लिए, प्रजातंत्र के उत्थान के लिए और उन्नति के लिए हम अपने सिद्धान्त को मानेंगे, लेकिन तमाम प्रजातंत्र वादी देश अपने आप बगैर निमंत्रण के हमारी धरती पर हमें सहायता देने आयेंगे । आज हमारे ऊपर संकट आने पर दम दम के हवाई अड्डे पर अमरीका के शस्त्रों से लदे हवाई जहाज सब से पहले उतरे । इससे इरादे का पता चलता है,

सहयोग का पता चलता है, सद्भावना का पता चलता है, प्रजातंत्र को बनाये रखने की एक उदात्त भावना का पता चलता है। इसका उदाहरण आज ब्रिटेन और अमरीका ने दिया है।

बीच में घाना के प्रेसीडेंट एंक्रूमा साहब बोले। उन्होंने ब्रिटेन की नीति की आलोचना की जिसमें मैकमिलन ने स्पांटेनियस सहायता देने को कहा था। मैकमिलन ने यह कहा था कि यह तो भारत देश सोचे कि किस प्रकार की और किस ढंग से हमसे सहायता लेना चाहता है लेकिन हम सहायता देने को तैयार हैं। और श्रीमन्, उसी समय इंडिया हाउस में न जाने कितने सोल्जर जो यहां से सन् १९४७ में १५ अगस्त को चले गये थे आए और उन्होंने कहा कि हम भारत की धरती पर जाकर भारत के लिए लड़ेंगे। यह है वह भावना। उसी समय मैकमिलन ने कहा, भाइयो, तुमको यह बात कहने की क्या जरूरत है। हिन्दुस्तान हमारे कामन वैल्थ संगठन का एक बड़ा सदस्य है। हमारा यह कर्तव्य है कि अगर उस पर साम्यवादी देशों की ओर से आक्रमण हो तो उसका मुकाबला करें। यह आक्रमण हुआ है प्रजातन्त्र पर, भारत पर नहीं और अगर प्रजातन्त्र पर आक्रमण हुआ है तो हम उसका मुकाबला करेंगे। यह श्री मैकमिलन ने कहा था। तब प्रेसीडेंट एंक्रूमा खामोश हुए। और तीसरे रोज मालूम हुआ कि उन्होंने भी प्रेसीडेंट नासिर जैसा प्रस्ताव चीन को किया है और चीन से समझौता करने के लिए कहा है और कहा है कि वह ८ सितम्बर वाले स्थान पर हट जाए।

श्रीमन, आज के इस वातावरण में आप देख रहे होंगे कि इन १५–२० दिन के अन्दर कैसी महान राजनीतिक घटनाएं हुई हैं और उन घटनाओं की सारी जिम्मेदारी कम्युनिस्ट देशों के ऊपर आती है। क्यूबा में, जो अमरीका से ठीक ८० मील नीचे है, किसने मिसाइल डाले। मैं आपके द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी से पूछना चाहता हूं कि किसने यह काम किया।

अध्यक्ष महोदय : मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगा। आप अपनी तकरीर करते चलें। मैं आपस में झगड़ा पैदा होने का मौका नहीं दूंगा।

श्री रा० शि० पाण्डेय : मैं आपके द्वारा पूछना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : क्या आप यहीं क्यूबा का मैदान बनायेंगे ? आप अपनी तकरीर करते जाएं और मेरी तरफ मुखातिब रहें।

श्री रा० शि० पाण्डेय : वह वहां से कैसे हटाया गया यह आपको मालूम है। उसी वक्त चाइना आया और नेफा में और लद्दाख में उसने आक्रमण किया। यह साफ जाहिर करता है कि कम्युनिस्ट जगत का इरादा क्या है। हम इसको जानना चाहते हैं।

श्रीमन, यह तो आप भी जानते हैं कि हमारा इरादा न कभी किसी पर आक्रमण करने का था और न है। हमारे दोस्त पाकिस्तान ने न जाने कितनी बार हमको मुट्ठियां दिखलाईं लेकिन हमने जवाब दिया कि हम दोस्ती के साथ रहेंगे और यह दोस्ती का जज्बा एक दिन आएगा, लड़ाई नहीं होगी।

मैं कहना चाहता हूं कि आज देश तैयार है प्रजातंत्र की रक्षा के लिए। देश के भाई और बहिनें, उनके पास जो भी शक्ति और सामर्थ्य है उसको लेकर शौर्य के साथ, शक्ति के साथ, श्रद्धा के साथ, नेहरु जी के पीछे हैं, और कहते हैं कि यदि युद्ध होगा तो हम युद्ध करेंगे। और किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे।

[श्री रा० शि० पाण्डेय]

अभी एक माननीय सदस्य पंजाब का नाम ले रहे थे तो मुझे नर्मदा की संस्कृति की, चम्बल घाटी की संस्कृति की, विदिशा और सांची की संस्कृति का स्मरण आया। उस क्षेत्र के नौजवान आज अंगड़ाई ले रहे हैं और देख रहे हैं कि वह अवसर कब आएगा जब वे जाकर भारत माता के चरणों में जूझ जायेंगे। यह भावना उनमें है।

आज के इस अवसर पर कम्युनिस्ट पार्टी हमको अपना रिजोल्यूशन दिखा रही है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप पूछिये कि इनकी जो कैमरा मीटिंग हुई थी उसमें क्या डेलीवरेशन्स हुए थे, किसने क्या कहा था। देश को यह जानने का हक है कि उस मीटिंग में किसने क्या कहा था। ये कम्युनिस्ट तीन प्रकार के हैं, एक चीनी वादी, एक रूसवादी और तीसरे स्वतंत्र। अगर चीन वादी कम्युनिस्ट जेल में चले गये और अगर कहीं रूसवादी भी उनके पीछे जेल में चले गए तो जो अपने को स्वतंत्र कहते हैं वे तो बाहर रह सकेंगे। तो श्रीमन्, यह इनकी प्लानिंग है। मैं इसकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। अगर हमको किसी से सब से बड़ा खतरा है तो इन कम्यूनिस्टों से है और रहेगा। न मालूम उनकी क्या जाति है, क्या पांति है, क्या उसूल है, वे कहां रहते हैं। अगर बरसात वहां होती है तो वे छाता यहां लगाते हैं। वहां से आर्डर्स लेते हैं। यहां से कम्युनिकेशन्स भेजते हैं। मालूम नहीं कि हमारे प्रधान मंत्री जी की सहन-शीलता इनको कब तक पनपने देगी।

आज कम्युनिस्ट पंडित जी की बड़ी तारीफ करते हैं। चाणक्य ने मुद्राराक्षस में कहा है कि जब प्रधान के आस पास प्रशंसा करने वाले लोग एकत्रित हो जाएं तो समझो कि कोई बड़ा ख़तरा पैदा होगा। यह ख़तरा चीन से भी बड़ा ख़तरा है। आज ये लोग हर सांस में कहते हैं पंडित जी, पंडित जी, पंडित जी। मैं पूछता हूं कि सन् १९४२ में ये लोग कहां थे। उस समय इन्होंने पंडित जी को न जाने क्या क्या कहा, इम्पीरियलिस्ट कहा, और पीकिंग रेडियो तो आज भी पंडित जी को इम्पीरियलिस्ट कहता है। आज इन लोगों को पंडित जी से बड़ी मुहब्बत पैदा हो गई है। मैं कहता हूं कि अगर इनको वास्तव में पंडित जी से मुहब्बत पैदा हो गई है तो इधर आकर बैठें और कम्युनिस्ट पार्टी को छोड़ दें। हम इनकी शुद्धि कर लेंगे और अपने में मिला लेंगे और इनके दिल में देश के प्रेम का जज्बा पैदा कर देंगे। आप यह इन से कह दें।

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : अध्यक्ष महोदय, जब मैं जेल में था तब भी मुझे अच्छी मेहनत का इनाम मिलता था। यहां मैं सब से पहले आता हूं और सब से बाद में जाता हूं। तो मेरा अनुरोध है कि मुझे तीन मिनट का एक्स्ट्रा टाइम दिया जाए।

मैंने आपसे और प्रधान मंत्री से यह निवेदन किया था कि वार सिचुएशन पर विचार करने के लिए इस पार्लियामेंट का सीकरेट सैशन बुलाया जाये। आज इस ओपन सैशन में बोलते हुए बहुत जोर पड़ रहा है, जज्बात अन्दर ही अन्दर खौल रहे हैं। मेरी मजबूरी यह है कि :

दर्द इस्त दर दिल गर वा ज़बानआरम ज़बां सोज़द,
गर दम दर मी कशम मग़ज उस्तखां सोज़द।

अगर इन जज्बात को मन में ही रहने देता हूं तो हड्डियां जली जा रही हैं। कहने की कोशिश करूं तो रसना अंगारों के बीच रक्खी है।

आज समय आ गया है कि सरकार जनता का साथ दे, जनता ने ही यह जीवन ज्योति जगाई है। आज की प्रेरणा सरकार की नहीं, जनता की दी हुई है। अगर सरकार का वश चलता तो जिस तरह ऊपर के इलाके के चौदह हजार मुरब्बा मील चुपचाप दे बैठी थी उसी तरह नेफा में भी खामोश बैठी रहती।

जनता के इस आवाहन पर मेरा सर्वस्व अर्पित होगा। भारत के प्रधान मंत्री ने इस मौकिके पर जनता की आवाज की सही तर्जुमानी की है। मैं अपने प्रधान मंत्री को यह विश्वास दिलाता हूं कि जो सख्त तरीन मोर्चा हो उस पर मुझे भेजें और फिर मेरा जौहर देखें।

अध्यक्ष महोदय : आपके जौहर की यहां भी जरूरत है।

श्री यशपाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सम्मुख यह प्रतिज्ञा करता हूं कि इस धर्म युद्ध में रूलिंग पार्टी के तमाम एम० पीज० से ज्यादा खून दूंगा। कम्युनिस्टों के साथ मेरा कम्पिटीशन नहीं है। मेरा कम्पिटीशन सिर्फ कांग्रेस एम० पीज० के साथ है। अगर कोई कांग्रेस एम० पी० एक बोतल खून देगा तो मैं सवा बोतल खून दूंगा। मैंने अपनी सेना सेवाओं के लिए अपने राष्ट्रपति को लिख कर भेज भी दिया है कि देश रक्षा के लिए वे मुझे चाहें जिस तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।

स्पीकर साहब, मैं भुला नहीं सकता जब मुझे चौदह नवम्बर की तारीख याद आती है। जिन सुनहरी घड़ियों में हम पंडित नेहरू का जन्म दिन मना रहे थे उन्हीं में चाइना ने हमारे जवानों की लाशें हिन्दुस्तान के हवाले की थीं।

मैं कांग्रेस के साथ कम्पिटोशन करना नहीं चाहता था। लेकिन नेशनल डिफेंस काऊन्सिल की फार्मेशन ने मुझे इस बात के लिये मजबूर कर दिया है कि मैं यह साबित कर दूं कि स्वतन्त्र पार्टी के एम० पीज० कांग्रेस एम० पीज० के मुकाबले में ज्यादा कुर्बानी कर सकते हैं।

सद्रे मुहतरम, आसमान में अगर सूरज और चांद न रहें तो आसमान बेकार हो जावेगा। इसी तरह डिफेंस काउंसिल में भी यदि जनरल करिआपा और जनरल कुलवन्त सिंह न हों तो वह व्यर्थ हो जावेगी। इस काउंसिल का निर्माण पक्षपात और पार्टी पालिटिक्स की बेसिस के ऊपर किया गया है।

अध्यक्ष महोदय, भारत यू० एन० ओ० में जब चाइना को मान्यता प्रदान करने की सिफारिश करता है तो संसार हमारी बुद्धिहीनता का उपहास किए बगैर नहीं रह सकता। कोई मूर्खता का चक्रवर्ती भी हो तो भी इन नाजुक घड़ियों में ऐसी निरर्थक बातें करना पसन्द न करेगा। अच्छा होता कि हमारे प्रधान मंत्री को इंटरनेशनल पालिटिक्स की इतनी डीप नालिज न होती। उस समय वे हमारे नेशनल ऐक्जिसटेंस के लिये खुले दिल से सोच सके होते।

> "मेरी गफ़लत ही अच्छी मेरी इस होशियारी से, बला में फंस गया मैं बेख़बर से बाख़बर होकर।"

क्या यह हमारे लिए गौरव की बात है कि विगत २२ अक्तूबर को बी० बी० सी० ने ब्राडकास्ट किया कि "भारत ने नेफा में जिन बन्दूकों का व्यवहार किया वे द्वितीय महायुद्ध की बची हुई बन्दूकें हैं" क्या हमारे लिये लज्जा की बात नहीं है कि जो वेम्पायर जेट्स इंडोनेशिया से हम ख़रीद रहे हैं वे इंडोनेशिया जैसे छोटे राष्ट्र की उन्नति के लिए भी नाकाफी साबित हो चुके हैं। मैं इस सिलसिले में

[श्री यशपाल सिंह]

१६ अक्तूबर के हिन्दुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट पढ़ता हूं जिसमें यह कहा गया है कि मेजर सुवाले जो ने यह कहा है कि भारत के वैम्पायर जेट बेचे गये हैं क्योंकि वे विमान इंडोनेशिया के लिये उपयुक्त नहीं समझे गये ।

अध्यक्ष महोदय, यह भारत के प्रधान मंत्री का सौभाग्य है कि इस देश में अब तो कोई चर्चिल पैदा नहीं हो सका है । अकेला चेम्बरलेन ही शासन कर रहा है । समय ही यह साबित करेगा कि पंडित नेहरू कामयाब हुए हैं या नहीं । अब तक की कामयाबी का नक्शा तो सदन के सामने है ही । शायद इसीलिे आठ सितम्बर का जिक्र बार बार किया जाता है कि इस तारीख पर चीनी फौजें जहां थीं वह जगह भारत के लिए सफलता की समझी जाती हो । बातें करने का शौक भी कुछ कम नहीं । जब भगवान कृष्ण बातों से दुर्योधन को न मना सके थे, महात्मा गांधी, बातों से मिस्टर जिन्ना को कंविन्स न कर सके थे तो मेरी समझ में नहीं आता कि आठ सितम्बर की रेखा पर पहुंच कर चाइना किस तरह बातों से मान जावेगा ?क्या लातों के भूत कभी बातों से मःने हैं ? प्रधान मंत्री को क़ाबिलियत का सबसे बड़ा सबूत तो यही है कि जब चाइना पन्द्रह सौ मील पर आकर कब्जा कर रहा था तब प्रधान मंत्री अपने देश की सीमा की रक्षा भी न कर सके ।

असल में बात करने की कल्पना वे लोग किया करते हैं जिनकी मिलेटरी स्ट्रेन्थ टूट जाती है और जिनका कि बलवीर्य ख़त्म हो जाता है । आज जरूरत इस बात की है कि देश में फौजी तालीम लाज़िमी की जावे । आज ज़रूरत इस बात की है कि देश का प्रत्येक नागरिक हथियार लेकर चले । मैंने इस सदन में अपनी पहली ही तकरीर में अर्ज़ किया था कि हथियारों पर से पाबन्दी हटाई जावे। रिवाल्वर और राइफलों के लाइसेन्स के बदले कांग्रेस के पदाधिकारी पब्लिक से वोट मांगते हैं इस मनोवृत्ति को ख़त्म किया जावे ।

सब से ज्यादा जरूरी यह है कि पापी गवर्नमेंट के स्थान पर नेशनल गवर्नमेंट स्थापित की जावे । जो गवर्नमेंट पापी और बूढ़ी हो गई हो वह अकेली देश की रक्षा नहीं कर सकती है । नेशनल गवर्नमेंट में कांग्रेस का भी रिप्रेजेंटेशन रहे । लेकिन अकेली एक पार्टी के हाथ में देश का शासन रहना हमारी राष्ट्रीय परम्पराओं के विरुद्ध होगा ।

अध्यक्ष महोदय, अब समय आ गया है कि जवान की तनख्वाह बढ़ाई जाय । इस के लिये किसी नये बजट की ज़रूरत नहीं है । जिन की तनख़्वाह ४०० रुपये मासिक से ज्यादा हो उन का वेतन कम कर के जवान की तनख्वाह बढ़ाई जावे ।

अध्यक्ष महोदय, मेरा आग्रह यह है कि भारत की रक्षा के मोर्चे पर वे गुलबदन भाई-भतीजे न भेजे जावें जो चीनी राइफल की आवाज़ को सुन कर ब्रांकाइटिस के मरीज़ हो जाते हैं । कमजोर और नाजक बदन लोग देश की रक्षा नहीं कर सकते । राज्य सुख का उपभोग वे रणबांकुरे करते हैं जिन की छाती में ब्रह्मचर्य का लोहा होता है, जिन की आंखों में देश भक्ति का तेज होता है और जिन के बाहुओं में अकाल पुरुष का बल होता है । आज देश को पंचशील की नहीं पंच ककारों की जरूरत है । जब पंचशील का लुभावना प्रचार हो रहा था उसी समय मैं ने कहा था कि इस देश में लाज़मी फ़ौजी तालीम का कानून बनाया जावे । तब मैं ने चेतावनी दी थी :—

"हंसी तलवार की हम लोग उड़ाएं न कभी
इसकी अज़मत की शहादत गुरू गोबिंद ने दी

इस के साए में है जन्नत यह है फर्माने रसूल
हकक़ की नुसरत के लिये तेग़ अली की चमकी।"

इसी समय श्रीमन्, मुझे ख़याल था कि पंचशील और अहिंसा के बयाबानों में भटकी हुई और प्यासी क़ौम कहीं दम न तोड़ दे। आज ज़रूरत इस बात की है कि पंचशील की शिला को उठा कर चीन के मस्तक में मारा जावे और उस की पेशानी में से जो खून निकले उस को पी कर हिन्दुस्तान के नौजवान दुश्मन की छाती को रौंद डालें .

आज डिफेंसिव से काम नहीं चलेगा आज औफेंसिव लेना पड़ेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि मेरे लाखों नवयुवक साथी सब बंधनों को तोड़ कर शत्रु की बेस पर हमला बोलना चाहते हैं। लेकिन मैं इस जनतंत्र के मंदिर में बैठा हुआ हूं और मैं कोई काम ऐसा नहीं करूंगा जिस से इस पवित्र पार्लियामेंट की मर्यादा पर हरूफ़ आवे वरना—

"चाहूं तो अब भी जानिबे मंज़िल पलट चलूं
गुमराह इसलिए हूं कि रहबर ख़फ़ा न हो।"

चन्द्रशेखर शर्मा आजाद, सरदार भगत सिंह, सरदार ऊधमसिंह और भाई अशफ़ाक उल्लाह खां का खून कोई ठंडा नहीं पड़ गया है। सरहदी गांधी बादशाह खान अब्दुल गफ्फ़ार खां की कुर्बानियां कोई बेकार नहीं हो गई हैं। मुझे यह फख्र हासिल है कि मैं बादशाह खान के सुर्ख़पोशाक में रहा हूं। मुझे यह भी गौरव प्राप्त है कि मैं चौदह साल की उम्र में काल कोठरी में बंद रहा हूं। मुझे इस पर भी गौरव प्राप्त है कि मेरे स्वर्गीय पिता महात्मा काली कमली वाले ने लोकमान्य तिलक के साथ अंग्रेज की कठोर यातनाएं सही थीं।

भारत की प्रतिरक्षा व्यवस्था इसलिये मजबूत नहीं हो सकी कि इस की ज़िम्मेदारी उन लोगों को नहीं सौंपी गई जिन्हों ने भारत मां को अपनी कुर्बानी दे कर आज़ाद कराया था। मैं अपनी पार्टी की या किसी अपोज़ीशन ग्रुपकी बात नहीं कहता। मैं कांग्रेसी की ही बात कहता हूं। जो जनरल शाहनवाज़ खां बुरे दिनों में भारत की आज़ादी के लिये फौजों की कमांड कर सकता था, युगपुरुष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जनरल बनने के लिये जिस में भरपूर मिलिटरी जीनियस थी वह आज क्यों हिन्दुस्तान की फौजों की बागडोर नहीं सम्हाल सकता ? मैं आप की ही बात कहता हूं। जो एस० के० पाटिल भारत की राजनीति का स्तम्भ है जिस ने फूड प्राब्लम के सब से ज्यादा उलझे हुए मसले को अपनी पैनी प्रतिभा और बेमिसाल बहादुरी से हल कर के दिखला दिया है वह क्यों हिन्दुस्तान का डिफेंस मिनिस्टर बनने लायक़ नहीं है ?

श्रीमन्, मैं आज पार्टी पालिटिक्स की भाषा में नहीं सोचता। मैं आज मां की लाज बचाने की रोशनी में सोचता हूं। सच्चा नेता वह है जो आज चीन के दानव को पीछे खदेड़ देगा। सच्चा देशभक्त वह है जो अपना बलिदान दे कर भारत माता की प्रतिष्ठा को बचा लेगा। अपने प्रधान मंत्री से भी मैं यह निवेदन करता हूं कि आज हमारा मुल्क और हमारा ईमान ख़तरे में है। वे अपने दिल के दरवाज़े को खोल दें। पार्टी पालिटिक्स से ऊपर उठ कर ४४ करोड़ को ज़बान में सोचें। इस विशाल देश का एक भी शख्स अगर कहीं अपने को माइनारिटी में समझ कर ग़ैर मुतमइन बैठा है अगर वह खुद को ग़ैर महफ़ूज़ समझता है तो यह हमारी आज़ादी के ऊपर एक कलंक होगा। प्रधान मंत्री की ज़िम्मेदारी सारे देश को प्रेम की एक गंगा में स्थान कराने की है। मुहब्बत का दरिया बह

[श्री यशपाल सिंह]

जाय जिस में अवगाहन कर के भारत माता के चवालीस करोड़ अमृत पुत्र सगे भाई और बहन बन कर रहें—

"हम मबाहिद हैं हमारा तर्ज है तर्के रसूम,
मिल्लतें जब मिट गईं अजजाएं ईमां हो गईं ।"

जंग के मंडराते हुए इन बादलों के नीचे हम कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ़ से आंखें बन्द कर के नहीं रह सकते ।

भारत में आज की राजनीति का बर्निंग क्वेश्चन यह है कि जिन कम्युनिस्टों ने नेशनल मवमेंट के दौरान पंडित नेहरू को ट्रेटर और क्विसलिंग कहा था वे ही कम्युनिस्ट आज प्रधान मंत्री के प्रेम में क्यों मरे जा रहे हैं ? उत्तर स्पष्ट है कि सी० पी० आई० को यह दुराशा है कि पंडित नेहरू के साये में ही कम्युनिज्म का प्रचार हो सकता है । बेशक अगर आज कोई और सरकार कुर्सी पर होती तो कम्युनिस्टों को हरगिज़ खुले खेलने का मौका न देती । अगर हमारे देश के कम्युनिस्ट पंडित नेहरू में सच्ची निष्ठा रखते हैं तो उन की लायल्टी का तक़ाज़ा यह है कि वे एक विदेशी पार्टी को छोड़ कर अपने मुल्क की किसी पार्टी में मिल जावें ।

चीन के हमले ने भारत में वह एटमौसफियर पैदा कर दिया है कि आज कम्युनिज्म और पैट्राटिज्म अपोज़िट टर्म्स समझी जाने लगी हैं । मैं इंकार नहीं करता । कम्युनिस्टों में भी देश भक्त होंगे लेकिन आज के माहौल में नीतिकार की यह युक्ति चरितार्थ होती है :—

"पयोऽपि शौडिकी हस्ते बाहदीत्यमिशीयते ।"

अगर शराब के ठेके पर बैठ कर कोई दूध पीवेगा तो वह भी शराबी ही समझा जावेगा । स्पीकर साहब, मैं आप के द्वारा अपने कम्युनिस्ट एम० पीज़० से प्रार्थना करता हूं कि मेरी तरह वे भी भगवान राम के वंशज हैं । अपयश की सम्भावना के कारण पुरुषोत्तम राम ने भगवती सीता का भी परित्याग कर दिया था । अगर अपने घर में कंटेजियस डिज़ीज़ के ज़रासीम पैदा हो जावें तो उस घर को भों साल दो साल के लिये छोड़ देना पड़ता है । भारतीय राजनीति के सम्मिलित मंच पर बैठने के लिये आज की नाज़ुक घड़ियों में मेरे इन देशभक्त भाइयों को कम्युनिस्ट पार्टी छोड़नी ही पड़ेगी । जिस असम के ऊपर चाइना की गिद्ध दृष्टि लगी हुई है जिस असम को ब्रह्मपुत्र अपने पुनीत वारियों से नित्यप्रति उज्ज्वल बनाता है, जो असम भारत की नाक है, जिस असम की खूबसूरती को हमारे इतिहास ने कामरूप कह के याद किया है, जिस असम ने माननीय हेम बरुआ जैसे इंटेलेक्च्वल जाइंट्स पैदा किये हैं, जिस असम को ब्रह्मर्षि शंकर देव ने अपने रूहानी नूर से मुनव्वर किया है, जिस असम की धरती पर माधवदेव की आध्यात्मिकता अवतीर्ण हुई है और जिस असम को केशव देव मालवीय ने अपने शुभ प्रयत्नों द्वारा पैट्रोल से परिपूर्ण कर दिया है, उसी असम में कम्युनिस्टों द्वारा हमारे प्रधान मंत्री का पुतला जलाया गया और कम्युनिस्ट पार्टी के ठेकेदार सिर्फ बढ़ी हुई कीमतों की ही चर्चा करते रहे । मैं पूछता हूं कौन होते हैं आप लोग हमारी बढ़ी हुई क़ीमतों को घटाने वाले ? जिन की लायल्टी फादरलैंड के साथ है वे क्यों चिन्ता करते हैं ? उन से मैं ग़ालिब के लफ्जों में कहना चाहता हूं :—

"यही है आज़माना तो सताना किस को कहते हैं,
अदू के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तिहां क्यों है ।"

श्रीमन्, मैं अपने प्रधान मंत्री से पूछना चाहता हूं कि जिन सुनहरी उम्मीदों के साथ उन्हों ने रूस से शस्त्रास्त्रों की प्राप्ति का विचार प्रकट किया है वे कब तक पूरी हो जावेंगी ? हमारे वज़ीर आज़म बड़े भावुक हैं । खुशफहमी के इस आलम में वे इतना जरूर याद कर लें —

"तेरे वायदे पर हम जिये तो यह जान झूठ जाना,
खुशी के मारे मर न जाते अगर ऐतबार होता ।"

मैं ने इसी पार्लियामेंट के पिछले इजलास में कहा था कि भारत सरकार इस ख़याल को हमेशा के लिय छोड़ दे कि कोई सोशलिस्ट कन्टरी हमारी सहायता करेगा । मैं अनुभव और ज्ञान के प्रकाश में अपनी राय को बदल दूंगा । भगवान करे कि हमारे प्रधान मंत्री का स्वर्णिम स्वप्न सत्य हो ।

अध्यक्ष महोदय, मुझे आज तक तटस्थ शब्द की सार्थकता मालूम नहीं हुई । इस तटस्थता के मातहत तिब्बत को कुर्बानी का बकरा बना कर चीनी भेड़िये के सामने डाल दिया । इसी तटस्थता के मातहत हिमालय की दुभद्य—अन्कांकरेबिल चोटियों को दुश्मन के पैरों के नीचे कुचलवाया गया । इसी तटस्थता के मातहत पड़ोसी देश नेपाल को अपने से दूर किया गया । इसी तटस्थता के मातहत हिन्दुस्तानी फौज के चमकते हीरों को अपने गुलाबी खून से कांगो और गाज़ा में चमन को सरसब्ज़ करने के लिये उस वक्त भेजा गया जबकि चीनी दुश्मन हमारे बुलन्दतरीन इलाक़े को चीनी की तरह लज़ीज़ समझ कर हड़प करता जा रहा था । स्पीकर साहब, अंग्रेज़ी में एक कहावत चली आती है :—

"अगर सुबह का भूला शाम को घर आय तो भूला नहीं कहा जाता"

आज भी समय है कि हम तटस्थता के मोह को संवरण कर के दोस्त और दुश्मन में सच्ची तमीज़ पैदा कर लें ।

तटस्थ शब्द संस्कृत का है । इस का अर्थ होता है दरिया के किनारे पर बैठा हुआ जो किनारे पर बैठा हुआ है उस को कोई भी धक्का दे कर दरिया में डाल देगा । यह समय कूल का नहीं लहरों का है ।

ए रहरवाने बहरे अमल मौजों से सफ़ीने टकरा दो
साहिल पै खड़े हो कर भी कहीं अन्दाज़ए तूफ़ां होता है ।

नीर-क्षीर विवेकी राजहंस । जिस के सुख-दुख के हम साथी नहीं, जिसे अपना मित्र कहते हुए हमें संकोच होता है, जिस की दोस्ती पर हमें नाज़ नहीं, क्या उस से सहायता लेने का हमें मारल राइट हासिल है ?

मैं इस बात को अच्छी तरह समझता हूं कि अगर चीनी कम्यूनिस्टों के इमकान में हुआ, तो वे सब से पहले मुझे अपनी गोली का शिकार बनायेंगे । लेकिन भारत के प्रधान मंत्री भी यह नोट कर लें कि यदि किसी चीप पोपुलेरिटी के फेर में पड़ कर वह आज कम्युनिस्टों के लिये अपने दिल में साफ्ट कार्नर रखेंगे, तो जिस आइडियालाजी ने बेरिया को माफ़ नहीं किया, वह किसी दूसरे को भी स्पेयर नहीं कर सकती ।

मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि आज चाइना से डिप्लोमेटिक रिलेशन्ज़ न तोड़ने की क्या जस्टिफ़िकेशन है । आगे चल कर चाइना कुछ मैत्री या समझ से काम लेगा, ऐसा कोई अक्ल का दुश्मन ही सोच सकता है ।

[श्री यशपाल सिंह]

श्रीमान्, मैं नत मस्तक हो जाऊंगा अपने प्रधान मंत्री के सामने, अगर वे संसार भर के इतिहास में से एक मिसाल भी ऐसी निकाल कर दिखला दें कि आजादी के लम्बे पन्द्रह सालों के बाद किसी मुल्क के वजीर आजम ने अपने देश की रक्षा का प्रस्ताव गैर-मुल्की जुबान में रखा हो। यह सारे संसार में पहली मिसाल है कि अपनी आजादी की रक्षा का प्रस्ताव पांच हजार मील पर बनी हुई जुबान में रखा गया है। मुझे कोई ऐतराज न होता, अगर यह प्रस्ताव कन्नड़, मलयालम, बंगला, गुरुमुखी, उर्दू, गुजराती या भारत की किसी भी भाषा में रखा जाता। लेकिन पांच हजार मील पर बनी हुई विदेशी भाषा में रखा हुआ यह प्रस्ताव सारे देश को परेशान कर रहा है।

मुझे आश्चर्य होता है, जब मैं यह देखता हूं कि जिस देश की छाती पर शत्रु चढ़ा हुआ आ रहा है, उस देश के शराब घर एक दिन के लिये भी बन्द नहीं हुए उस देश के सिनेमाओं में अब तक मिलिटरी ट्रेनिंग स्कूल नहीं खोले गये।

स्पार्टा को जब रक्षा के लिये तैयार होना था, तो वहां पर यह कानून बनाया गया था कि बच्चा पैदा हो, तो तुरन्त छत पर डाल दिया जाये। अगर वह चौबीस घंटे की सर्दी गर्मी बर्दाश्त करले, तो उस की परवरिश कर ली जाये, लेकिन अगर वह सहन न कर सके, तो उस कमजोर बच्चे की जरूरत स्पार्टा को नहीं है।

आज इसी तरह के रूल्स हमारे देश में बनाये जाने चाहियें। आज सब से बड़ी जरूरत इस बात की है कि यहां का बच्चा बच्चा इस देश को अपना देश समझे। यह देश किसी के नाम गिरवी नहीं रखा गया है। यह किसी पार्टी का, इंडियुजुअल का, या पर्सन का किसी तरह का कोई खास गहना नहीं है। यह सारे देश की सम्पत्ति है। प्रधान मंत्री बड़े हैं और रक्षा मंत्री भी बड़े हैं, लेकिन मेरा देश प्रधान मंत्री से बड़ा है। अगर प्रधान मंत्री देश की सही सही हिफाजत नहीं कर सकते हैं, तो वह इस बोझ को अपने कंधे से उतार दें और देश के नौजवानों को बुला कर कहें कि इस देश की रक्षा करो। हमारा देश प्रधान मंत्री से बहुत बड़ा है।

मैं इस सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित कराता हूं कि वह पार्टीबाजी से ऊपर उठ कर भारत-माता की रक्षा की भाषा में सोचें। तभी इस देश का कल्याण हो सकेगा अगर हम ने अपने कैरेक्टर को ऊंचा किया, अपने चरित्र और सदाचार को ऊंचा उठाया, तो संसार की कोई ताकत नहीं है, जो हम को गिरा सके। सब से पहले इंडिविडुअल कैरेक्टर की जरूरत है। जिस देश के लोग शराब पीते हैं, अश्लील सिनेमा देखते हैं, कोटोजम और डाल्डा खाते हैं, वह देश कभी रणप्रांगण में नहीं खड़ा हो सकता है। अगर हर एक शख्स अपनी जगह पर सुन्दर हो जाय, तो सारा देश सुन्दर होगा।

†श्री कृ० ल० मोरे (हथकंगले) : मैं प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का पूरी तरह समर्थन करता हूं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत राष्ट्र संगठित रूप से चीन की इस भयंकर चुनौती को स्वीकार करने के लिये कटिबद्ध है। इस कठिन समय में भारत में जो अप्रत्याशित एकता व उत्साह दिखायी देता है वह बहुत शुभ चिन्ह है। इसकी मिसाल भारत में अन्यत्र नहीं मिल सकती है।

इस समय हमें चाहिये कि हम खेतों तथा कारखानों में उत्पादन बढ़ाने के लिये यथाशीघ्र प्रयत्न करें। हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि पंचवर्षीय योजना हमारी शक्ति का मुख्य श्रोत है और हमें उसे सफल बनाना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

निःसन्देह हमें अपनी तटस्थता की नीति पर विश्वास रखना चाहिये। तथा हमें यह विशवस रखना चाहिये कि अन्ततः यह नीति सफल होकर ही रहेगी।

वर्तमान संकट में हमें अपने अनुभवी तथा दूरदर्शी नेताओं में विश्वास रखना चाहिये तथा उन्हें अपने विवेक अनुसार काम करने देना चाहिये।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद् में कुछ संसदसदस्य और विधान सभा सदस्य भी होने चाहियें। मेरा सुझाव है कि देश के नागरिकों को हथियार खरीदने के लायसेंस देने चाहियें।

अध्यक्ष महोदय : बाकी माननीय सदस्यों को खड़े होने की जरूरत नहीं है। उनको आज वक्त नहीं मिल है तो कल मिल जायेगा।

श्री बाल्मीकी : कल जरूर मिल जाना चाहिये।

श्री अब्दुल गनी गोनी (जम्मू तथा काश्मीर) : जनाब स्पीकर साहब, मैं आपका बहुत मशकूर हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया है।

पेशतर इसके कि मैं इस रेजोल्यूशन पर कुछ बोलूं मैं सबसे पहिले कुछ अलफाज़ उन जवानोंके बारे में कहना चाहता हूं जो वहां पर लड़ रहे हैं। मैं उस इलाके के रहने वाला हूं, उस जिले का रहने वाला हूं जो लद्दाख के साथ वाला जिला है और जिसका नाम डोडा है। मुझे मालूम है कि वहां क्या हो रहा है औरकिस तरह से हमारे जवान लड़ रहे हैं। सब से पहले मैं अपनी तरफ से और कौम की तरफ से उन जवानों को, जिन्होंने कुर्बानियां दी हैं, जम्मू काश्मीर मिलिशिया की सूरत में, डोगरा रेजीमेंट की सूरत में या मुल्क के जो दूसरे जवान हैं दूसरी रेजीमेंटों में, उस सूरत में, श्रद्धांजलि और मुबारिकबाद पेश करता हूं। वे मुल्क और कौम की खातिर ये कुर्बानियां दे रहे हैं। नेफा में भी कुमायूं रेजीमेंट जो वहां लड़ रही है और उसके जो जवान शहीद हुये हैं, उनको भी मैं अपनी और कौम की तरफ से श्रद्धांजलि पेश करता हूं। यकीनी तौर पर वे शहीद नहीं हुये हैं बल्कि कौम की वे नई जिन्दगी और नई बुनियाद डाल रहे हैं। कहा गया है कि शहीद की जो मौत है, वह कौम की हयात है। हमारे नौजवान अगर मुल्क और कौम के लिये कुर्बानियां देते हैं तो वे नई कौम की बुनियाद रखते हैं।

जब हम हिन्दुस्तान की पिछली तारीख को देखते हैं, दस बीस साल की नहीं बल्कि १२० या १५० साल पहले की तो हम पाते हैं कि जोरावर सिंह और मेहता मंगल की कमान में हमारे इलाके के लोग और पंजाब के व हिन्दुस्तान के दूसरे इलाकों के लोग वहां गये और उन्होंने चीन के साथ जंग करके लद्दाख को अपने कब्जे में ले लिया। उन लोगों ने जो कुर्बानियां तब दीं, उनकी हड्डियां, उनका खून आज भी पुकार पुकार कर कह रहा है कि उठो, क्यों सोये पड़े हों, देश की खातिर अपने आप को कुर्बान करने के लिये तैयार हो जाओ। आज उन लोगों की रूह हिन्दुस्तान के और इस एवान के चारों तरफ घूम रही है और हम से यह उम्मीद रखती है कि कौम के ये नुमाइन्दे हमारे लिये क्या कर रहे हैं।

इस करारदाद को देख कर मुझे खुशी होती है। पन्डित जी ने बहुत तफसील के साथ इस पर रोशनी डाली है। कई मैम्बरों ने इस पर तकरीरें की हैं। कुछ ने इस को क्रिटिसाइज़ भी किया हैं। इस रेज्यूल्यूशन के पांच छः प्राविज़ंज हैं। एक में तो एमर जेंसी डिकलेयर की गई है। यह एमरजेंसी इस मुल्क के ४५ करोड़ नौजवानों पर असर अंदाज़ होती है। लेकिन लास्ट पैरा में हम देखते हैं कि हम

[श्री अब्दुल गनी गोने]

एक लम्बा रोप दे देते हैं, एमरजेंसी को जितना लम्बा चाहे रखा जा सकता है, जितनी देर भी चाहें, रखा जा सकता है। इतना लम्बा रोप गवर्नमेंट को नहीं देना चाहिये। कई लोगों ने कहा कि साल तक यह हे या दो साल तक रहे। अगर यह दस साल लड़ाई चलती है तो क्या यह एमरजेंसी दस साल तक चलती रहेगी ? यह बहुत मुनासिब नहीं है। ८ सितम्बर के बाद बीस रोज में जब चीनी ल्हासा से उठ कर या सिक्यांग से उठ कर लद्दाख पहुंचते हैं या ल्हासा से नेफा पहुंचते हैं तो "हाऊएवर लांग इट मे बी" का क्या मतलब हो सकता। मैं समझता हूं कि यह कौम की कमजोरी है, गवर्नमेंट की कमजोरी है जो कि सिचुएशन को असेस नहीं कर सकती है। मैं समझता हूं कि इस करारदाद में कुछ खामियां हैं और हमें करारदाद को रिकास्ट करना पड़ेगा और कौम को लीड देनी पड़ेगी कि हम कब तक दुश्मनों को बाहर निकालेंगे, ख्वाह वह चीनी हों या कोई और दुश्मन हो। हमें देखना है कि यह हमला सिर्फ नेफा के लिये नहीं, सिर्फ लद्दाख के लिये नहीं, बल्कि तमाम साउथ ईस्ट एशिया के लिये है। आप नक्शे को देखिये कि किस तरह से कम्यूनिस्ट ब्लाक आज ताशकन्द से लेकर काबुल तक सड़क बना रहा है, ल्हासा से लेकर काठमांडू तक सड़क बना रहा है, नेफा तक सड़क आ रही है, आक्साई चिन और चुशूल को यह सड़क बन कर आ रही है। इसके पीछे भी उन का एक मकसद है। उनका मकसद यह नहीं है कि उनको सिर्फ लद्दाख तक सड़क लानी है, नेफा तक सड़क लानी है, बल्कि यह अल्टरनेट रोड्स बनाई जा रही हैं। कम्यूनिस्ट ब्लाक यानी चाइना और रशिया मिल कर एक कामनप्रोग्राम की तहत बढ़ते नजर आते हैं। नक्शे से जाहिर होता है कि किस तरह से वह ब्लाक साउथ ईस्ट एशिया पर छा जाना चाहता है। एक तरफ तो वह न्यूक्लिअर पावर अपने मुल्क के अन्दर बढ़ा रहे हैं दूसरी तरफ यह सड़कें बना रहे हैं लैंड फोर्सेज को मात करने के लिये ताकि वह उपर से हमला करें और नीचे से लैंड फोर्सेज भेज कर कंसोलिडेट करें। यह सिर्फ हिन्दुस्तान को ही चैलेन्ज नहीं है बल्कि राइट फ्राम अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इंडिया, नेपाल, भूटान और इसी तरह से बर्मा और सीलोन के इस तमाम ब्लाक को चैलेन्ज है। आज भले ही हम समझते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू दुनियां को लीड कर रहे हैं, उसकी रहनुमाई कर रहे हैं और अमन का रास्ता बतला रहे हैं, लेकिन जब कम्यूनिस्ट ब्लाक आगे बढ़ना चाहता है तो यह पर यह फर्ज आयद हो जाता है कि जो नई न्यूली बार्न नेशन्स नक्शे पर उभर रही हैं उनको लीड करें, चाहे हमने कितनी ही नानअलाइनमेंट पालिसी की जिम्मेदारी ली हो। हम जहां कम्यूनिस्ट ब्लाक के इस ऐग्रेसन को वैकेट करने के लिये या रिपल्स करने के लिये तलवा उठायेंगे वहां ऐट दी सेम टाइम हम एक ब्लाक के अन्दर राइट फ्राम अफगानिस्तान से मलाया तक मुल्कों को इकट्ठा करके रक्खें और हिन्दुस्तान उसका मर्कज बने। हिन्दुस्तान को चाहिये, खुसूसन पंडित जवाहरलाल नेहरु को चाहिये कि वह नानअलाइन्ड नेशन्स की, जो कि उनको अपना लीडर मानती हैं, एक कांफरेंस बुलायें, और उनको सावधान करे कि अगर आज लद्दाख पर हमला होता है नेफा पर हमला होता है तो कल दुश्मन और आगे बढ़ेंगे। आज की खबर है कि कराकोरम को पास करके चाइनीज पाकिस्तान की एरिया में दाखिल हो गये हैं। इससे उन लोगों की नियत मालूम होती है। उनकी कोई रेस्ट्रिक्टेड प्लैन नहीं है बल्कि उनकी बेसिक प्लैन है टू एक्स्पैंड एक्स्पैन्शन का नमूना उन्होंने शुरु किया है नेफा से और लद्दाख से। अगर आज कोई मामूली सयासत का पढ़ने वाला भी इसको देखे तो उसके सामने जाहिर हो जाता है कि यह एक बहुत बड़ी प्लैन है, जिस प्लैन पर बढ़ने से अगर उनको आज रोक दिया जाय तो आज नहीं कल, कल नहीं तो

परसों, दो साल, तीन या पांच साल बाद उनको बढ़ने की कोशिश करनी है। लिहाजा आज हम पर फर्ज आयद होता है, हमारे ऊपर जिम्मेदारी आ जाती है कि हम इन पांच, सात या दस नेशन्स को, जो साउथ ईस्ट एशिया में पड़ी हुई हैं, इकट्ठा करें और उनको लीड दें। उनकी कांशसनेस को खड़ा कर दिया जाय।

हम देखते हैं कि रूस भी हमारा भाई है, चीन भी हमारा भाई है, अमरीका भी हमारा दोस्त है जिस तरह, उसी तरह रुस भी हमारा दोस्त है, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी बुनियादी पालिसी है, बुनियादी टार्गेट है कि हमें आगे बढ़ना है, हमें अपने आपको महदूद नहीं रखना है। उन्हें चेक करने के लिये अगर हम खड़े नहीं होंगे, सावधान नहीं होंगे, तो यकीनी तौर पर हमारा देश जिस नक्शे को दुनियां के अन्दर पेश कर रहा है उसको पेश नहीं कर सकेगा। लिहाजा मैं समझता हूं कि जहां हमारा काम उसको चेक करना है वहीं मैं एक गुजारिश यह भी करूंगा कि आप अपने मुल्क के चारो तरफ देखें। हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान का भी कांफिडेंस हासिल नहीं किया है, बर्मा का कांफिडेंस हासिल नहीं किया है, अफगानिस्तान का कांफिडेंस ओपन्ली हमारे साथ नहीं है। नेपाल हमारे साथ नहीं है, सीलोन हमारे साथ नहीं है, **ओपेनली, बाई व्हाट आई अंडरस्टैण्ड**। तो इन चार पांच देशों को, जो कि हिन्दुस्तान के चारों तरफ पड़े हुए हैं, हमें अपने कांफिडेंस में लेना है। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे तब तक कम्यूनिस्ट ब्लाक के एक्स्पैन्शन प्रोग्राम को चेक नहीं कर सकेंगे। लिहाजा मेरी गुजारश है कि जहां हमें इस प्रोग्राम को अमली जामा पहनाना है वहां जैसा यहां पर कहा गया नेफा के बारे में, पाकिस्तान से नेफा तक उनका कारिडोर है, **देन दे कैन कम टू वि सी**। लेकिन आज कश्मीर की तरफ आप देखिये। बहुत से दोस्तों ने काश्मीर का नक्शा देखा होगा। आज जम्मू और काश्मीर रियासत को एक ही रास्ता सिर्फ हिन्दुस्तान से मिलाता है। किसी वक्त भी उसके इंटरफिअर होने का खतरा पैदा हो सकता है क्योंकि पाकिस्तान ने एक तरह से ओपेनली हमसे बगावत की है। लिहाजा मेरी गुजारिश है कि जहां एक बिगर आइडिया हमारे सामने है, एक बड़े उसूल को हमें अपने सामने रखना है, वहां हमको सावधान भी होना चाहिये और इन छोटे छोटे साथी मुल्कों को अपने साथ रखना चाहिये जो कि हमारी नेबरिंग कंट्रीज हैं। मसलन पाकिस्तान है। आज हिमाचल प्रदेश का जो हमारा इलाका पंजाब में आ रहा है, उसके बाद लद्दाख का एरिया शुरु होता है, सारा किश्तवार का इलाका हैं, जिसको डोडा डिस्ट्रिक्ट कहते हैं, वहां पर हमको सड़कें बनानी चाहियें। जिस तरह की अल्टरनेट रोड पठानकोट और जम्मू के दर्म्यान है उसी तरह से एक रोड हिमाचल प्रदेश और डोडा डिस्ट्रिक्ट के बीच में भी होनी चाहिये जो कि सीधे काश्मीर तक आये ताकि इमर्जेन्सी के वक्त जो वहां की अकेली रोड है जाने के लिये अगर वह डिस्टर्ब हो जाय तो हमारे पास एक अल्टरनेट रोड रहे ताकि हम बार्डर तक अपनी लैंड फोर्सेज पहुंचा सकें।

हिमाचल प्रदेश, जिसको चम्बा कहते हैं, तक गाड़ी जाती है। चम्बा से भरद्वार तक ५० मील की दूरी है। उसकी ऊंचाई ज्यादा नहीं है। भरदवार से सीधी गाड़ी काश्मीर को जाती है। श्रीनगर को जाती है लद्दाख को जाती है और बार्डर का इलाका है उसको मिलाती है। जब तक हम वहां पर ठीक से रोड्स नहीं बिछायेंगे तब तक हम बार्डर तक नौजवानों के लिये, जो लड़ रहे हैं, पूरी सप्लाई नहीं भेज सकते। जम्मू-काश्मीर जाने के लिये केवल यही सड़क है, आपात काल के लिये हमें इसका मार्ग बनाना चाहिये। मैं गुजारिश कर रहा था कि यह जो वाकयात हैं उनको हमें अपने सामने रखना है।

[श्री अब्दुल गनी गोनी]

आखीर में मैं एक चीज और अर्ज करना चाहता हूं । आज हमारे नौजवान लड़ रहे हैं। यकीनी तौर पर तमाम कौम उठ खड़ी हुई है और तमाम कौम एक जगह हो कर आगे आ रही है। मुझे इसको देखकर बड़ा दुःख हुआ कि अपोजीशन ग्रुप्स आपस में ही लड़ रहे हैं । आज हमको चाहिये कि हम एक यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट को दें, हम सबके सब आपस में यूनाइटेड रहें। हम देखते हैं कि कम्यूनिस्ट पार्टी नुक्ता चीनी करती है स्वतन्त्र पार्टी की और स्वतन्त्र पार्टी नुक्ता चीनी करती है जन संघ की । सब आपस में सर फुटौवल करते हैं । आज सारे अपोजीशन ग्रुप्स को एक जगह बैठ कर कोई सालिड तजवीज पंडित जलवारलाल नेहरू को देनी चाहिये । आज पंडित जवाहरलाल नेहरु की जात पर हमला करने का वक्त नहीं है। आज पंडित जवाहरलाल नेहरू की मिनिस्ट्री या उनकी गवर्नमेंट पर हमको पहरा नहीं देना है । बल्कि आज हमारा पहरा चालीस करोड़ इन्सानों की हिफाजत करने के लिये है। लिहाजा हमको चाहिये कि हम इकटठे हो जायें और इसके लिये लड़ें।

मैं फिर उन नौजवानों और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं कि जो कि मुल्क के लिये लड़ रहे हैं और अपनी जानें दे रहे है।

इसके पश्चात लोक सभा १३ नवम्बर, १९६२ / २२ कार्तिक १८८४ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

दैनिक संक्षेपिका

सोमवार, १२ नवम्बर १९६२

२१ कार्तिक १८८४ (शक)

	विषय	पृष्ठ
प्रश्नों के मौखिक उत्तर		३९९—४२६
तारांकित प्रश्न संख्या		
१२९	कीमतों में वृद्धि	३९९—४०१
१३०	लद्दाख में संसद् सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल .	४०३—०५
१३१	धातुमिश्रित तथा विशेष इस्पात संयंत्र . . .	४०५—०६
१३२	पाकिस्तनियों द्वारा वायुसीमा का उल्लंघन . .	४०७—०८
१३३	लंका में भारतीय प्रवासी	४०८—१०
१३४	नागा नेताओं का भाग कर लन्दन जाना . .	४११—१३
१३५	नाइन आवर्टज टू रामा नामक पुस्तक पर आधारित फिल्म .	४१४—१६
१३६	अणुशक्ति केन्द्र	४१६—१८
१३७	राज्य योजना बोर्ड	४१८—१९
१३८	भूतपूर्व पुर्तगाली बस्तियों में भारतीय विधान लागू किया जाना	४१९—२०
१३९	चीन और तीब्बत में भारतीय राजनयिक कर्मचारी .	४२०—२२
१४०	राज्यों की विकास योजनायें	४२३—२४
१४१	पश्चिमी बंगाल पूर्वी पाकिस्तान सीमा पर संयुक्त सर्वेक्षण	४२४—२५
१४२	एवरो—७४८	४२६
प्रश्नों के लिखित उत्तर		४२७—४७
तारांकित प्रश्न संख्या		
१४३	प्रतिरक्षा मंत्रालय का विभाजन . . .	४२७
१४४	इंडोनेशिया से वैम्पायर विमानों की खरीद . .	४२७
१४५	युद्ध सामग्री कारखानों में उत्पादन . .	४२८
१४६	सैनिक प्रशिक्षण	४२८—२९
१४७	आकाशवाणी से प्रचार	४२९

विषय पृष्ठ

प्रश्नों के लिखित उत्तर (जारी)

तारांकित
प्रश्न संख्या

१४८	तिब्बती शरणार्थी	४२९–३०
१४९	समाचार पत्र उद्योग में एकाधिकार प्रवृत्तियां	४३०
१५०	राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन	४३०
१५१	दक्षिण अफ्रीका में भारतीय	४३१
१५२	टैंगानिका में भारतीय	४३१–३२
१५३	पकिस्तान द्वारा लौटाया गया भारतीय सवक्षण अधिकारी का सामान	४३२

अतारांकित
प्रश्न संख्या

२६७	चीन में भारतीय	४३२
२६८	वैज्ञानिकों का पुगवश सम्मेलन	४३३
२६९	तारापुर में अणुशक्ति केन्द्र	४३४
२७०	लन्दन में गांधी स्मारक	४३४–३५
२७१	जम्मू तथा काश्मीर सीमा पर पाकिस्तानियों का छापा	४३५
२७२	बागान मजदूर	४३५–३६
२७३	भारतीय प्रधान मंत्री तथा पाकिस्तान के प्रेसीडेन्ट के बीच विचार विमर्श	४३६
२७४	कोजीकोड रेडियो स्टेशन	४३६
२७६	विमान परिवहन उद्योग के लिए भविष्य निधि	४३७
२७७	हिन्दी फिल्मों को प्रमाण पत्र देना	४३७
२७८	राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण	४३७–३८
२७९	सरकारी उपक्रम	४३८–३९
२८०	राष्ट्रमण्डल के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन का व्यय	४३९
२८१	विदेशों में भारतीय मिशन	४४०
२८२	काम बन्दी	४४०
२८३	न्यूनतम मजूरी अधिनियम	४४१
२८४	राज्य मंत्रियों का सम्मेलन	४४१
२८५	प्रलेखीय चलचित्र	४४१–४२
२८६	पाकिस्तान राष्ट्रजनों द्वारा ढोरों को उठाकर ले जाया जाना	४४२

विषय पृष्ठ

प्रश्नों के लिखित उत्तर (जारी)

अतारांकित
प्रश्न संख्या

२८७ फिल्म संस्थाएं ४४२

२८८ संघों को मान्यता प्रदान करना . . ४४३

२८९ प्रतिरक्षा मंत्रालय के सेवा संवरण बोर्डों में असैनिक मनोवैज्ञानिक . ४४३

२९० नौ सनिक हवाई अड्डा ४४४

२९१ राइफलों का निर्माण . ४४४

२९२ कारतूसों का निर्माण . ४४४

२९३ सैनिक प्रशिक्षण स्कूल . ४४४–४५

२९४ भारतीय वायु सेना के कैनबरा विमान का टूट कर गिर जाना . ४४५

२९५ भूतपूर्व सैनिक ४४५

२९६ भारतीय नौसेना . . ४४६

२९७ आगरा में प्रतिरक्षा कर्मचारियों के लिये क्वार्टर . . ४४६

२९८ पंजाब में सैनिक स्कूल ४४७

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना ४४७–४८

श्री बागड़ी ने ८ नवम्बर, १९६२ को दिल्ली के लाजपतराय मार्केट में हुए पटाखे के विस्फोट की ओर, जिसके फलस्वरूप कुछ व्यक्तियों को चोटें आईं, गृह-कार्य मंत्री का ध्यान दिलाया ।

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) ने इस सम्बन्ध में एक बक्तव्य दिया ।

सभा पटल पर रखे गये पत्र ४४८–४९

(१) संसद् के पदाधिकारियों के वेतन और भत्ते अधिनियम, १९५३ की धारा ११ की उपधारा (२) के अन्तर्गत दिनांक १५ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १२०९ में प्रकाशित संसद् के पदाधिकारियों के (यात्रा और दैनिक भत्ते) संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति ।

(२) सरकारी भूगृहादि (अवैध रूप से कब्जा करने वालों का निष्कासन) अधिनियम, १९५८ की धारा १३ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक ३ नवम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १४५३ में प्रकाशित सरकारी भूगृहादि (अवैध रूप से कब्जा करने वालों का निष्कासन) संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति ।

(३) निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति :—

(एक) कॉफी अधिनियम, १९४२ की धारा ४८ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक २९ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या

विषय पृष्ठ

जी० एस० आर० १२७१ में प्रकाशित कॉफी (पांचवां संशोधन) नियम, १९६२ ।

(दो) नारियल-जटा उद्योग अधिनियम, १९५३ की धारा १९ के अन्तर्गत वर्ष १९६१–६२ के लिय उक्त एकट के कार्य-संचालन और नारियल-जटा बोर्ड की गतिविधियों के बारे में वार्षिक रिपोर्ट ।

(४) निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति :—

(एक) १५ सितम्बर, १९६२ को नई दिल्ली में हुये सीमेंट संबंधी औद्योगिक समिति के चौथे सत्र के मुख्य निष्कर्षों का विवरण ।

(दो) १७ अक्तूबर, १९६२ को नई दिल्ली में हुए स्थायी श्रम समिति के बारहवें सत्र के मुख्य निष्कर्षों का विवरण ।

(तीन) वर्ष १९६१–६२ के लिये कोयला खान श्रमिक कल्याण निधि की गतिविधियों के बारे में प्रतिवेदन ।

(५) विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम, १९५४ की धारा ४० की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिनांक १ सितम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० ११६६ में प्रकाशित विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) छटा संशोधन नियम, १९६२ की एक प्रति ।

५. गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति का प्रतिवेदन उपस्थापित

नवां प्रतिवेदन उपस्थापित किया गया । ४५०

प्राक्कलन समिति का प्रतिवेदन उपस्थापित

तीसरा और चौथा प्रतिवेदन उपस्थापित किया गया । ४५०

विधेयक पुरस्थापित ४५०–५१

(१) धातु के टोकन (संशोधन) विधेयक,

(२) पेट्रोलियम पाइपलाइन (भूमि के प्रयोक्ता के अधिकार का अर्जन) विधेयक

संकल्प विचाराधीन ४५१—५१०

आपात उद्घोषणा की स्वीकृति तथा चीनी आक्रमण और तथा तत्संबंधी स्थानापन्न प्रस्तावों और संशोधनों के बारे में चर्चा जारी रही । चर्चा समाप्त नहीं हुई ।

मंगलवार, १३ नवम्बर, १९६२ / २२ कार्तिक, १८८४ (शक) के लिये कार्यालवाल

आपात उद्घोषणा की स्वीकृत तथा चीनी आक्रमण के बारे में संकल्पों पर अग्रेतर विचार

GIPND—LS III—2149 (Ai) LSD—4-1-63—140.

विषय	पृष्ठ
श्री लखन दास	४६२–६३
श्रीमती अकम्मा देवी	४६३
श्री शिवाजी राव शं० देशमुख	४६४
श्री प्र० च० बरुआ	४६४–६५
श्री वासुदेवन नायर	४६५
श्री कृ० चं० पंत	४६६–६७
श्री जं० ब० सिं० विष्ट	४६८
डा० मा० श्री० अणे	४६८–६९
श्री महाराज कुमार विजय आनन्द	४६९
श्री पी० रा० रामकृष्णन्	४६९–७०
श्री बासप्पा	४७०
डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी	४७०–७१
श्रीमती विजय राजे सिंधिया	४७१—७५
श्री कपूर सिंह	४७५–७६
श्री राम रतन गुप्त	४७६–७७
श्री कोया	४७७–७८
श्री माना प्रसाद मंडल	४७८—८०
श्री मलाइच्छामी	४८०–८१
श्री राघेलाल व्यास	४८१—८३
श्री लहरी सिंह	४८३—८६
श्री सोनावने	४८७
श्री सुरेन्द्र पाल सिंह	४८७–८८
श्री राजाराम	४८८
श्री क० ना० तिवारी	४८८—९०
श्री पाराशर	४९०—९४
श्री ज्वा० प्र० ज्योतिशी	४९४
श्री कि० पटनायक	४९४—९७
श्री रा० शि० पांडे	४९७—५०१
श्री यशपाल सिंह	५०१—०६
श्री कृ० ल० मोरे	५०६–०७
श्री अब्दुल गनी गौनी	५०७—१०
दैनिक संक्षेपिका	५११—१४

P L.S. 41. IX. 4. 62.
140

© १९६२ प्रतिलिप्यधिकार लोक-सभा सचिवालय को प्राप्त ।

लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन सम्बन्धीनियम (पांचवां संस्करण) के नियम ३७९ और ३८२ के अन्तर्गत प्रकाशित और भारत सरकार मुद्रणालय, नई दिल्ली की संसदीय शाखा में मुद्रित ।